Vol.20, Issue 2 | Annual Subscription ₹ 420

December 2020

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA

www.rotarynewsonline.org

Rotary

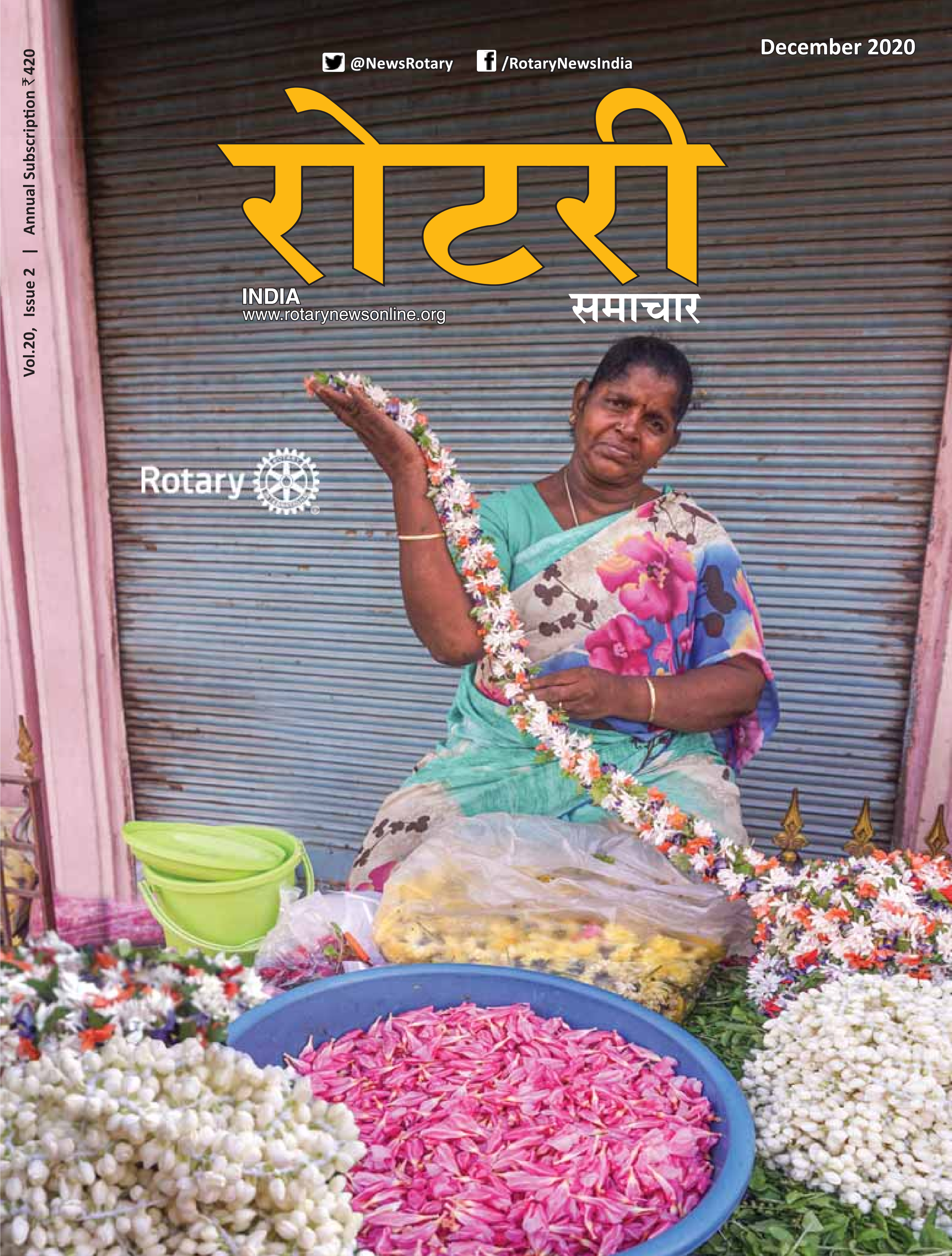

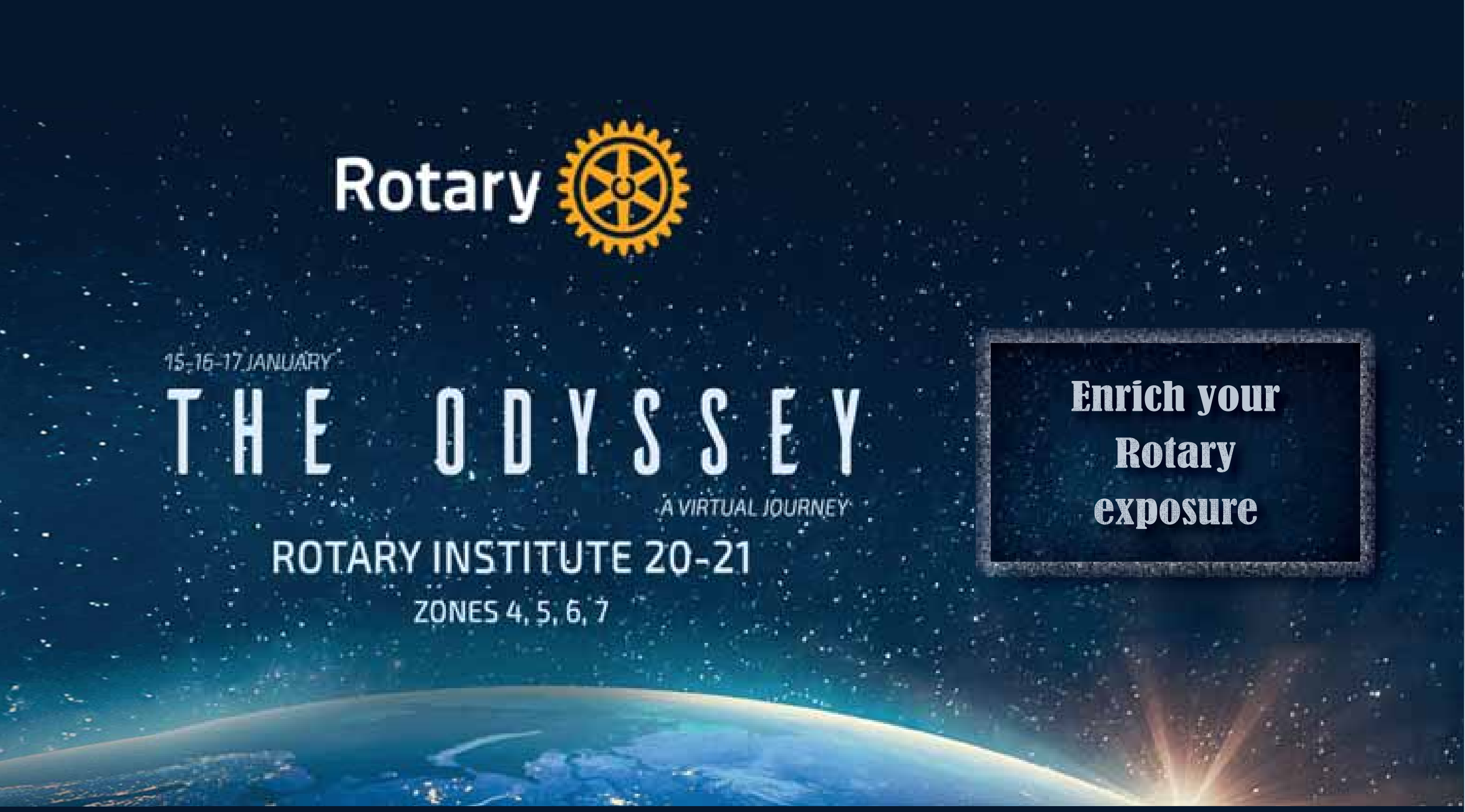

Institute Convener RI Director Kamal Sanghvi extends a warm welcome to you to enjoy the Rotary Zone Institute — The Odyssey, a virtual experience — from the comfort and safety of your home or office.

Listen to leaders such as RIPE Shekhar Mehta, RIPN Jennifer Jones, RID Peter Kyle, TRF Trustee Chair K R Ravindran, TRF Trustee Larry Lunsford, Swiss Ambassador Arthur Mattli, Judge Silvia Fernandes de Gurmendi, Argentina and many more...

For more details contact:

Institute Chairman
Sanjay Khemka: 9431121176
Email: sanjay3250@gmail.com

Institute Secretary
John Daniel: 9249559999
Email: rtn.johndaniel@gmail.com

Visit www.rotaryodyssey.in

Block the dates: January 15, 16 and 17, 2021. Time: 4 to 8 pm.

Registration fee for RI officers (past, present, current and incoming): ₹2,500. (Registration fee is waived for spouse.)

विषयसूची

10 खुशबू से निराशा की ओर बढ़ते चेन्नई के फूल विक्रेता

पढिए कि कैसे कोरोना महामारी ने फूल विक्रेताओं को प्रभावित किया है जो दक्षिणी संस्कृति का अभिन्न अंग है।

16 एक धमाके के साथ रोटरी क्लब पुणे अपने 50 वर्ष पूर्ण करता है

स्वास्थ्य और स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण और शिक्षा पर सेवा परियोजनाएं इस क्लब के स्वर्ण जयंती समारोह को चिह्नित करती है।

22 कोविड के बाद की दुनिया में रोटेरियनों के सामने चुनौतियां और अवसर

टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष के आर रवींद्रन ने रोटरी क्लब मद्रास द्वारा आयोजित एक वेबिनार में संस्थान की वित्तीय स्थिति पर अपने विचार साझा किए।

26 रोटरी क्लब बॉम्बे दो वैश्विक अनुदानों की मदद से नन्हें दिलों को स्वस्थ करता है

अपनी बाल हृदय सर्जरी समिति के माध्यम से इस क्लब ने 100 से अधिक नन्हीं ज़िंदगियाँ बचाई।

32 रैलियाँ, जागरूकता शिविर ने विश्व पोलियो दिवस को चिह्नित किया

विश्व पोलियो दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न रोटरी क्लबों द्वारा आयोजित जागरूकता गतिविधियों के बारे में पढ़िए।

42 गुजराती खाने के शौकीनों के लिए एक दावत

पारुल भट्ट की कॉफी टेबल बुक की रचना जिससे आप स्वादिष्ट गुजराती व्यंजन बनाना सीख सकते है।

48 महिला रोटेरियन नवीन विचारों एवं परियोजनाओं के साथ इस महामारी को हराती है

मासिक धर्म स्वच्छता के लिए रोटरी एक्शन ग्रुप बनाने के लिए दुनिया भर की महिला रोटेरियन एक साथ आती है।

60 मन्ना डे की शक्ति, ऊर्जा, सटीक उच्चारण

प्रसिद्ध संगीतकार और उनके सुपरहिट सदाबहार गीतों का संस्मरण।

कवर पर : चेन्नई में एक फूल विक्रेता।

चित्र : किरण ज़ेहरा

सामुदायिक कृषि रास्ता दिखाती है

कार्यकर्ता मयंक गांधी ने महाराष्ट्र में सामुदायिक खेती की शुरुआत करते हुए एक जादुई चिराग को छुआ। कभी किसान आत्महत्याओं के लिए जाना जाने वाला यह क्षेत्र आज एक समृद्ध क्षेत्र बन गया है। पीडीजी राहुल टिम्बाडिया ने यह साबित कर दिया है कि रोटरी, ध्यान केंद्रित एवं कुशल लोगों के असाधारण नेटवर्क के साथ, बड़ा बदलाव ला सकती है।

नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस ने दुनिया के आपदा की ओर बढ़ने के कारण बताए - ग्लोबल वार्मिंग, धन केन्द्रीकरण और बड़े पैमाने बढ़ती बेरोजगारी। यह आँखें खोल देने वाला है।

के एम के मूर्ती, रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

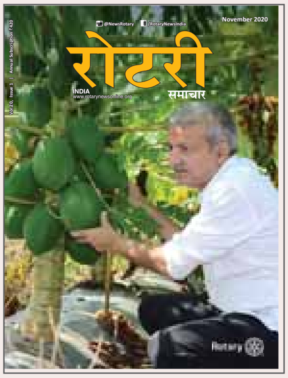

सामुदायिक खेती पर कवर स्टोरी प्रेरक, सूचनाप्रद और ज्ञान वर्धक थी। यदि मराठवाड़ा के किसान मयंक गांधी के अथक प्रयासों की बदौलत अच्छे दिन देख सकते है, तो उम्मीद है कि भारत भी ऐसे दिन देखेगा। पीडीजी टिम्बाडिया के कार्य प्रेरणादायक और अनुकरणीय है। भारतीयों को प्रेरित करने की वजह से आपका लेखन व्यापक प्रसार का हकदार है।

राजीव छाबड़ा, रोटरी क्लब नागपुर - मंडल 3030

सामुदायिक खेती हमारे राष्ट्र की तरक्की में बहुत बड़ा योगदान दे सकती है। रो ई अध्यक्ष से यह सुनकर खुशी हुई कि रो ई मंडल समय की मांग के अनुसार नए सदस्यों को आकर्षित करने हेतु क्लब की सहायता करने के लिए एक टास्क फोर्स का गठन कर रहा है।

संपादक के नोट में कई महत्वपूर्ण पहलू शामिल होते है जिसमें रोटरी के हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। रो ई निदेशकों ने हमारे चमकते हुए सितारे, टीआरएफ, के महत्व पर जोर दिया। यह अच्छा है कि 2023 तक खसरा और रूबेला का उन्मूलन हो जाएगा। मानसून की बाढ़ के बावजूद रोटरी क्लब बॉम्बे के रोटेरियनों के प्रयास प्रशंसनीय है। लेख *एक रोटेरियन डॉक्टर कोरोनावायरस के साथ अपने संघर्ष को याद करते है* और रोटरी क्लब क्विलोन अपने 70 वर्ष पूरे कर रहा है पढ़कर खुशी हुई।

क्लब होप की तुलना में *क्लब मैटर्स* अधिक उपयुक्त था। पहले की तस्वीरें अधिक स्पष्ट और देखने योग्य आकार की थीं, जो क्लबों के लिए महत्वपूर्ण हैं। सामग्री सार्थक है; मैं संपादकीय टीम के अच्छे काम की सराहना करता हूं।

फिलिप मुलप्पोने एम टी, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

नवंबर अंक में प्रभावशाली सामग्री है। सामुदायिक खेती पर लिखी गई कहानी दिलचस्प है और गांधीजी के दृष्टिकोण के अनुरूप है। फलों के पेड़ लगाने से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा और पारिस्थितिकी का संरक्षण होगा। ऐसे उपयोगी लेख देने के लिए संपादकीय टीम को मेरी बधाई। एक योग्य लड़की को लैपटॉप का उपहार, आकर्षक तस्वीरों के साथ हमारे सुरों के राजा एसपीबी पर लिखे गए लेख दिलचस्प है। रोटरी के इतिहास में एक और ऐतिहासिक घटना पहली रोई महिला अध्यक्ष के रूप में जेनिफर जोन्स का नामांकन होने की है। अपनी आकर्षक सामग्री के साथ यह अंक दीवाली का उपयुक्त उपहार है।

पीडीजी ताराचंद डुगर, रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट - मंडल 3232

महान भारत-पाक पहल

रोटेरियन रविशंकर दकोजू की भारत-पाक परियोजनाओं से मैं बहुत खुश हूँ। चलिए इन परियोजनाओं को पड़ोसियों के मध्य गलतफहमी और सीमा विवाद सुलझाने का पहला कदम बनाएं। दोनों देशों के एक मित्र के रूप में, रोटरी को शांति को बढ़ावा दने वाले तरीकों का सुझाव देना चाहिए और हमारी परियोजनाओं और कार्यक्रम को दोनों देशों में लोगों का आंदोलन बनना चाहिए। हम भारत और पाकिस्तान के लोगों को शांति और सद्भावना स्थापित करने के लिए सभी प्रमुख मुद्दों का मैत्रीपूर्ण ढंग से समाधान ढूँढने हेतु एकजुट होना चाहिए।

रामकृष्ण के, रोटरी क्लब पुत्तूर - मंडल 3181

हमारे संगीत दिग्गज, यूनुस पर उत्कृष्ट लेख

यूनुस पर अक्टूबर कवर स्टोरी आँखें खोल देने वाली थी। उनके व्यक्तित्व के कई पहलुओं को सामने लाया गया है। दुनिया में परिवर्तन लाने के लिए रोटरी की क्षमता में उनका विश्वास दिल छू लेने वाला था। इस लेख को लाकर *रोटरी न्यूज़* ने उत्कृष्ट कार्य किया है।

ग्रुप कैप्टन वी जी देओधर
रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

अरुणाचल प्रदेश में नवगठित रोटरेक्ट क्लब पर एक शानदार कहानी। बहुत खुशी के साथ मैंने आरएसी नामसाई के चार्टर की खबरें पढ़ीं। यह आने वाले वर्षों में शेष भारत के क्षेत्रीय युवाओं के लिए समानता लाने में मदद करेगा। इससे अध्यक्ष खुशबू शर्मा और डीआरआर तुषार जालान की शक्ति में इज़ाफा होगा।

गोपीनाथ एन पंडलाई
रोटरी क्लब बैंगलोर इंदिरानगर - मंडल 3190

मुहम्मद यूनुस ने सामाजिक उद्यमियों की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझाया, जो बहुत से विकास संबंधी मुद्दों को छू रहा है। उनके दूरदर्शी विचार और योजनाएं दुनिया में उचित प्रभाव डालेंगे। उत्कृष्ट लेखन के लिए धन्यवाद।

डॉ पॉन मुथइयाँ
रोटरी क्लब अडुदुराई - मंडल 2982

यूनुस की बातें विचार-उत्तेजक थे। *Time* मैगज़ीन द्वारा रोटेरियन तुंजी फुनशो और एस आर मधु द्वारा किशोर कुमार पर लिखा गया लेख दोनों ही उत्कृष्ट थे। हालाँकि किशोर ने जब भी अभिनय किया उन्होंने अपने गीत खुद ही गाए, कुछ गीतों के लिए जब संगीत निदेशक को लगा कि उसे मोहम्मद रफ़ी बेहतर गा सकते है, तो किशोर ने सहजता से सहमति जताई। एक बार जब रफ़ी द्वारा गाए जाने वाले गाने में योडेलिंग की आवश्यकता थी, तो उन्होंने संगीत निर्देशक से अनुरोध किया कि वे इसे योडेलिंग के महारथी किशोर से करवाएं। लेकिन जब संगीत निर्दे शक ने रफ़ी से ही इसे करने को जोर दिया, तो वह किशोर के पास गए, और उनसे योडलिंग पर बहुमूल्य सुझाव लिए और फिर वह गीत गाया, जिसे फिरोज खान पर फिल्माया गया था। पुराने जमाने में गायकों के मध्य ऐसा सौहार्द हुआ करता था।

संतोष तिवारी

रोटरी क्लब जालना रैन्बो - मंडल 3132

एसपीबी की यात्रा पर लिखा गया लेख दिलचस्प था। उन्होंने हजारों गानों के साथ तमिलों के दिलों में जगह बनाई है और लाखों लोगों का मनोरंजन किया है। बेशक, उनके करियर का एक सुनहरा क्षण *शंकराभरणम* है जिसमें उन्होंने के वी महादेवन की संगीत रचना के तहत गाया।

डॉ एस सुब्रमण्यम

रोटरी क्लब पुलियानगुड़ी - रो ई मंडल 3212

यूनुस द्वारा परिकल्पित सूक्ष्म उद्यमियों की अवधारणा को सामने लाने के लिए *रोटरी न्यूज़* को धन्यवाद। कोरोना से पहले के दिनों में वापस नहीं जाने के बारे में उनकी टिप्पणी विचारोत्तेजक है। कोविड टीका वितरण पर उनकी चिंता को नीति-निर्माताओं द्वारा संबोधित किया जाना चाहिए। कमजोर वर्गों के बीच वैक्सीन वितरण में रोटरी अपनी भूमिका निभा सकती है।

विनोद कुमार ए के

रोटरी क्लब नीलेश्वर - मंडल 3202

आपके लेख के माध्यम से प्रोफेसर यूनुस पर कवर स्टोरी पढ़ना बहुत अच्छा था। मैं वेबिनार के भरोसे न रहकर विवरण की खोज में था, जो मुझे हमारी पत्रिका में मिला, और जिसने मेरे दिमाग में उनके विचारों की गहरी छाप छोड़ी। हमारे मंडल ने माइक्रोक्रेडिट परियोजनाओं को अपनाया। नए रूप से डिजाइन किया गया क्लब हॉप अच्छा और सुंदर दिखता है।

आर के बुबना

रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

मैंने मुहम्मद यूनुस की कवर स्टोरी को बहुत रुचि के साथ पढ़ा क्योंकि मेरे पिता, स्वर्गीय रोटेरियन जयंत शाह, ने विशेष रूप से यूनुस से मिलने के लिए यात्रा की थी। यह उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलने से पहले की बात थी। वे माइक्रोफाइनेंस और ग्रामीण बैंक के बारे में जानकारी लेने गए थे और यूनुस के काम से बहुत प्रभावित थे। लौटने के बाद, उन्होंने रोटरी क्लब पूना नॉर्थ और जानकी देवी बजाज ट्रस्ट के साथ मिलकर दिशा ट्रस्ट के माध्यम से माइक्रोफाइनेंस शुरू किया। यह मुख्य रूप से पुणे के पास के सुदूर गांवों तक सेवा देता है।

योगेश शाह

रोटरी क्लब पूना सेंट्रल - मंडल 3131

पर्यावरण संरक्षण पर हमारी परियोजना को प्रकाशित करने के लिए हम *रोटरी न्यूज़* के आभारी है। 1979 के बाद इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाली यह हमारी पहली परियोजना थी। जगसुंदरी मंदिर में एक *रोटरी वाटिका* स्थापित करने की यह हमारे क्लब की एक बेहतरीन पहल थी। हमने लगभग 300 पौधे लगाए जो हमारे रोटरी नेतृत्वकर्ताओं को समर्पित थे। हमने किरण ज़हरा और संपादक रशीदा भगत के नाम पर भी पौधे लगाए। हमारे क्लब के सभी रोटेरियनों की ओर से, मैं आपको इस लेख के लिए धन्यवाद देता हूं।

सुनील कुमार डोगरा

अध्यक्ष, रोटरी क्लब कांगरा - मंडल 3070

सितंबर और अक्टूबर अंक शानदार है और दोनों ही कवर स्टोरी रोटरी के विशिष्ट चरित्र को दर्शाती है।

मैंने वेबिनार कार्यक्रम में नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस को सुना है और उनकी प्रस्तुति प्रभावशाली और यथार्थवादी थी। कोविड ने आभासी मंच पर नए अवसर खोले है जहाँ हम प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सुन सकते है। मैं RIPE शेखर मेहता द्वारा दिवंगत PRID यशपाल दास पर बोली गई पंक्तियों की प्रशंसा करता हूँ, मृदुभाषी, सौम्य व्यवहार, विनम्र...।

सौमित्र चक्रबर्ती

रोटरी क्लब कलकत्ता इनोवैशन - मंडल 3291

पीडीजी सिल्विया व्हिटलॉक को सलाम

सितंबर अंक का लेख *जब महिलाओं को रोटरी में जीत हासिल हुई* आंखे खोल देने वाला है। पीडीजी सिल्विया व्हिटलॉक, जिन्होंने तत्कालीन नेतृत्वकर्ताओं द्वारा कड़े विरोध के बावजूद, रोटरी से जुड़ने के महिलाओं के अधिकार के लिए कानूनी लड़ाई लड़ी और आखिरकार पहली महिला गवर्नर बनी। यह जानकर खुशी हुई कि पहली बार एक महिला, जेनिफर जोन्स, 2022-23 में रो ई अध्यक्ष बनेगी।

मेजर डी के जरेकर

रोटरी क्लब नासिक-अंबाद - मंडल 3030

We welcome your feedback. Write to the Editor: **rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.**
Mail your project details, along with hi-res photos, to **rotarynewsmagazine@gmail.com**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/webinar should be sent to the Editor only at **rotarynewsmagazine@gmail.com** or **rushbhagat@gmail.com.**
WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** on our website: **www.rotarynewsonline.org** to read about more Rotary projects.

2020 रोटरी की ताकत बढ़ाने का साल

जब मैं पीछे मुड़कर 2020 को देखता हूँ, मैं देखता हूँ कि ज़िंदगियाँ कितनी बदल गई है। वैश्विक कोविड -19 महामारी ने हम में से बहुत लोग को दर्द और हानि पहुंचाई। और लगभग हम सभी के लिए, हमारा दैनिक जीवन, पारिवारिक समय, और काम भी इस वर्ष बदल गया है। लेकिन हमने इस कठिन वर्ष में भी सफलता अर्जित की है, अपने दम पर नहीं, बल्कि एक-दूसरे तक पहुंचकर, जैसा कि हम हमेशा रोटरी में करते है। हर एक बीतते वर्ष के साथ, मुझे हमारे संस्थान पर अधिक गर्व होता है।

मैं 2020 को एक महान परिवर्तन और हम सबकी ताकत के वर्ष के रूप में याद रखना चाहूँगा; महामारी के बावजूद भी रोटरी रुकी नहीं। हमने बाधाओं को हटा दिया, संपर्क के नए तरीके ढूंढ लिए, और सेवा के नए दृष्टिकोणों को अपनाया, जैसे कि ऑनलाइन परियोजनाएं और आभासी धन संचयन समारोह। मैंने दो रोटेरियनों को उनकी कहानियाँ साझा करने हेतु आमंत्रित किया है कि इस साल रोटरी कैसे मजबूत हुई है।

जब महामारी ने सब कुछ बंद कर दिया, तो हमारा उभरता हुआ ई-क्लब पहले से ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल सेवा प्रदान कर रहा था। विभिन्न रोटरी क्लबों के सदस्यों के रूप में चौदह अमेरिकी महिलाएं और मैं, कोस्टा रिका के ग्रामीण इलाकों में महिला उद्यमियों का मार्गदर्शन करने, उनके इकोटूरिज्म व्यवसाय, RETUS टूर्स (इस पत्रिका के मई अंक की कवर स्टोरी नेचर एण्ड नर्चर का विषय) को बढ़ाने में मदद करने के लिए व्हाट्सएप का उपयोग कर रहे थे। यह परियोजना विस्तृत हो गई है क्योंकि अब 30 रोटेरियन RETUS वेबसाइट और सोशल मीडिया के माध्यम से परामर्श और सहायता प्रदान कर रहे है। हमने संबंध बनाना और इन महिलाओं को सशक्त बनाना जारी रखा है। मैंने तो रोज़ा नामक एक महिला की एक ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हेतु अंग्रेजी में एक प्रस्तुतीकरण तैयार करने में भी मदद की। जबकि कोस्टा रिका की महिलाओं के साथ हमारे मेलजोल को अभी भी एक प्रायोगिक गतिविधि की आवश्यकता है, परंतु जरूरी नहीं है कि सबसे अधिक परिवर्तनकारी प्रभाव व्यक्तिगत रूप से ही आए। - लिज़ा लार्सन, रोटरी ई-क्लब एंगेज और रोटरी क्लब प्लानो ईस्ट, टेक्सास

लिज़ा लार्सन, रोटरी ई-क्लब एंगेज और रोटरी क्लब प्लानो ईस्ट, टेक्सास

जब कोविड -19 की मार पड़ी तब मैं अपने क्लब की अध्यक्ष था, और कई सदस्यों के पास तब तक ज़ूम नहीं था। महामारी के दौरान हमारे 53 सदस्यों में से केवल 10 सदस्यों ने पहली ज़ूम बैठक में भाग लिया था। मैंने सोचा कि हमारे सदस्यों को शामिल करने के लिए इसे प्रसारित करके दुनिया भर से अतिथि वक्ताओं को इसमें जोड़ने से मदद मिलेगी। कई रोटरी नेताओं, एक रोटरी शांति दूत, और यहां तक कि रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने आभासी मुलाकात करके हमारे क्लब से बात की। कुछ सदस्य जो हमारे शहर से बाहर काम करते थे और हमारी बैठकों में शामिल नहीं हो पा रहे थे, वे भी हमसे दोबारा जुड़े। *My Rotary* पर हमारी ऑनलाइन बैठकों को रजिस्टर करने से दुनिया भर के क्लबों के साथ संपर्क बढ़े और होल्गर द्वारा संबोधित संयुक्त बैठक ने 300 से अधिक आगंतुकों को आकर्षित किया। हमने अधिक धन भी जुटाया। सभी के अनुरूप बने रहने के लिए, अब हम मिश्रित बैठकें कर रहे है। मेरे लिए, रोटरी में 2020 सबसे अच्छा साल रहा क्योंकि मैंने कई नए दोस्त बनाए। - ब्लेसिंग माइकल, रोटरी क्लब पोर्ट हरकोर्ट नॉर्थ, नाइजीरिया

ब्लेसिंग माइकल, रोटरी क्लब पोर्ट हरकोर्ट नॉर्थ, नाइजीरिया

इन कहानियों से हमें आने वाले वर्षों में रोटरी को लेकर आशावादी रहने के सभी कारण मिल सकते है। हम केवल अस्तित्व में ही नहीं है बल्कि हम मजबूत भी हो रहे है। महामारी के दौरान भी रोटरी अवसर प्रदान करती है - अपने सदस्यों और जिन समुदायों की हम सेवा करते है, उन्हें विकसित करने, उनसे जुड़ने और उन्हें व्यस्त रखने के।

रेट्ज़बर्ग में हमारे घर से लेकर आपके घर तक, सुसैन और मैं आपके और आपके परिवार को इस अवसर पर शुभकामनाएं देना चाहते है। साल 2021 द्वारा लाई जाने वाली अच्छी चीजों को देखने का हम इंतजार हैं।

होल्गर नेक

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

कोविड राहत के बाद, भारत के गरीबों को आर्थिक पुनर्वास की आवश्यकता है

कोविड महामारी के बाद मंडराए चौतरफा संकट के बावजूद, अगर भारतीय इक्विटी शेयर बाज़ारों पर नज़र डालें, तो हमारी अर्थव्यवस्था फल फूल रही है, शेयर सूचकांक ने अभी तक के सारे कीर्तिमान ध्वस्त कर सर्वकालिक उच्च स्तर को छू लिया है और म्यूचुअल फंड जबरदस्त मुनाफ़ा दे रहे हैं। लेकिन इसका गंभीर पहलू यह है कि दलाल स्ट्रीट पर मचे कोलाहल की ये चकाचौंध कुछ प्रतिशत भारतीयों तक ही सीमित है जिन की संख्या नगण्य है।

दिसंबर के इस अंक में प्रकाशित कवर स्टोरी, जिसमें चेन्नई के प्रसिद्ध फूल विक्रेताओं की मर्मस्पर्शी कहानी है, जिसे पढ़ कर आपको अहसास होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था के लिए अति महत्वपूर्ण, लघु एवं असंगठित क्षेत्र जो भारत की सड़कों पर निकल पड़ते हैं, किस तरह के आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। लेकिन उस आर्थिक विषाद में भी महिलाएं, जो मोगरा, चमेली और अन्य सुगंधित फूलों को पिरो कर माला बनाती हैं, अन्तर्निहित इच्छाशक्ति और अदम्य साहस के साथ अपने जीवन की गाड़ी को धकेल कर आगे बढ़ रही हैं। इन सशक्त महिलाओं को निश्चय ही हमारे सलाम की ज़रुरत है, लेकिन इसके साथ हमारे संरक्षण की भी ज़रुरत है।

पत्रकारिता में अपने चार दशकों के अनुभव और पूरे देश की व्यापक यात्रा के दौरान, विशेषकर छोटे शहरों और गांवों में, मैंने हमारे कमजोर वर्गों को साहूकार के शिकंजे में फंसे देखा है... छोटे सब्जी और फल विक्रेता, फूल विक्रेता, घरेलू सहायक, और अन्य, जिन्हें आपात स्थिति में पैसे उधार लेने की जरूरत पड़ती है। चिकित्सा के सम्बन्ध में तो आपात स्थिति समझ में आती है, पर अफसोस की बात ये है कि गरीबों को भी, शादियों में, सामाजिक लोकाचार निभाने में, जितना कमाया या संचित किया है, उससे कहीं अधिक खर्च करना पड़ता है।

और निश्चित रूप से, जिनके घर में बेटियां हैं उन पर यह बोझ कई गुना अधिक पड़ता है, दहेज का अभिशाप उनका आखिरी रुपया भी चूस कर उन्हें साहूकारों के रहमो करम पर छोड़ देता है। कोई भी बैंक गरीबों की सहायता के लिए तैयार नहीं, जिनके पास ऋण लेने के लिए गिरवी रखने को कोई सम्पत्ति नहीं हैं, वे सिर्फ गांव के साहूकार की दयादृष्टि पर आश्रित हैं, और ब्याज की दरें तो इतनी ज़्यादा हैं कि आपका सर चकरा जाता है। आमतौर पर एक महीने में 10 प्रतिशत होती है; या दिमाग सुन्न कर देने वाली दर एक वर्ष में 120 प्रतिशत!

यही वो क्षेत्र है जो रोटरी के फोकस क्षेत्रों में से एक - आजीविका बढ़ाने - के दायरे में आता है। हम सभी जानते हैं कि भारत में और विदेशों में कई रोटरी क्लबों ने माइक्रोफाइनेंस मॉडल को अपनाया है और क्लब और मंडल परियोजनाओं के अंतर्गत वे महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ऋण वितरित कर रहे हैं। 1998 में ढाका और आसपास के गांवों में जमीनी स्तर से ग्रामीण मॉडल का अध्ययन करने के बाद जब 2006 में प्रो मुहम्मद यूनुस को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, मैंने बहुत नज़दीक से देखा था कि सामूहिक चेतना किस गतिशीलता से काम करती है।

यदि समूह की कोई सदस्य किसी परेशानी की वजह से किश्त का भुगतान नहीं कर पाती तो अन्य सदस्य उसके घर जा कर सलाह मशवरा करते हैं और यथासंभव मदद करते हैं, साथ ही यह भी सुनिश्चित करते हैं कि वह अपनी किश्तें चुकाती रहे। क्योंकि माइक्रोफाइनेंस का नियम है कि एक ऋण की सभी किश्तें चुका देने के बाद ही आप अगला और बड़ा ऋण लेने के पात्र हो सकते हैं।

जब प्रवासी श्रमिकों, दिहाड़ी मजदूरों, बेघरों को राहत देने का समय आया तो सम्पूर्ण भारत में रोटेरियन नेकदिल मददगार के रूप में उभरे हैं, इसके साथ उन्होंने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और अस्पतालों को सुरक्षा और चिकित्सा उपकरण प्रदान किये हैं। लेकिन राहत के साथ-साथ पुनर्वास की व्यवस्था भी करनी पड़ेगी। कोविड-बाद की दुनिया में तत्काल ही, भारत के आर्थिक रूप से पंगु हो चुके लोगों के लिए, जैसे चेन्नई के फूल विक्रेता, बड़े पैमाने पर आर्थिक पुनर्वास की आवश्यकता है।

क्या भारत के रोटरी क्लब, संकट की इस घड़ी में आगे आएंगे और जो कुछ भी कर सकते हैं वे करेंगे? मुझे पता है वे जरूर मदद करेंगे।

Rasheeda Bhagat

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG R Balaji Babu
RI Dist 2982	DG K S Venkatesan
RI Dist 3000	DG A L Chokkalingam
RI Dist 3011	DG Sanjiv Rai Mehra
RI Dist 3012	DG Alok Gupta
RI Dist 3020	DG Muttavarapu Satish Babu
RI Dist 3030	DG Shabbir Shakir
RI Dist 3040	DG Gajendra Singh Narang
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Rajesh Agarwal
RI Dist 3060	DG Prashant Harivallabh Jani
RI Dist 3070	DG CA Davinder Singh
RI Dist 3080	DG Ramesh Bajaj
RI Dist 3090	DG Vijay Arora
RI Dist 3100	DG Manish Sharda
RI Dist 3110	DG Dinesh Chandra Shukla
RI Dist 3120	DG Karunesh Kumar Srivastava
RI Dist 3131	DG Rashmi Vinay Kulkarni
RI Dist 3132	DG Harish Motwani
RI Dist 3141	DG Sunnil Mehra
RI Dist 3142	DG Dr Sandeep Kadam
RI Dist 3150	DG Nalla Venkata Hanmanth Reddy
RI Dist 3160	DG B Chinnapa Reddy
RI Dist 3170	DG Sangram Vishnu Patil
RI Dist 3181	DG M Ranganath Bhat
RI Dist 3182	DG B Rajarama Bhat
RI Dist 3190	DG B L Nagendra Prasad
RI Dist 3201	DG Jose Chacko Madhavassery
RI Dist 3202	DG Dr Hari Krishnan Nambiar
RI Dist 3211	DG Dr Thomas Vavanikunnel
RI Dist 3212	DG P N B Murugadoss
RI Dist 3231	DG K Pandian
RI Dist 3232	DG S Muthupalaniappan
RI Dist 3240	DG Subhasish Chatterjee
RI Dist 3250	DG Rajan Gandotra
RI Dist 3261	DG Fakir Charan Mohanty
RI Dist 3262	DG Saumya Rajan Mishra
RI Dist 3291	DG Sudip Mukherjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

रो ई निदेशकों

स्वस्थ मन, निरोगी काया

जिस तरह से दुनिया बीमारी और रोगों को देखती है, उसमें अब सदियों बाद उल्लेखनीय बदलाव आया है। 19वीं सदी में डॉक्टर संक्रमण को रोकने का तरीका नहीं जानते थे। युद्ध भूमि के पास अस्थायी रूप से स्थापित किए गए अस्पतालों में डॉक्टर गैंगरीन के डर से उन सैनिकों के हाथ और पैर काट देते थे जिनके हाथ पैर में मामूली चोट आई हो। पिछली दो शताब्दियों में यह सब बदल गया है। गोलियां, इंजेक्शन और सर्जरियाँ आज हमें विभिन्न बीमारियों और चोटों से बचाते है।

भारत में औसत जीवन प्रत्याशा 1950 के शुरुआती दशक के लगभग 31-32 वर्ष के आंकड़ों को पार करके 2018 में 70 वर्ष के आसपास पहुँच गई। अब निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। निवारक देखभाल गंभीर बीमारियों और चिकित्सा समस्याओं का पता लगाने या उन्हें रोकने में मदद करती है। आज गैर संचारी रोग (एनसीडी) - जिसमें हृदय रोग, दौरा, मधुमेह, फेफड़ों के रोग, गुर्दे की विफलता और कैंसर शामिल है - दुनिया भर में आम स्वास्थ्य समस्याएं है। गैर संचारी रोगों से भारत में लगभग 5.8 मिलियन लोगों की मौत होती है। चार भारतीयों में से एक को 70 की उम्र तक पहुँचने से पहले ही किसी गैर संचारी रोग से मरने का खतरा होता है। इनमें से अनेक दीर्घकालिक बीमारियों से बचा जा सकता है, क्योंकि ये खराब आहार और खराब जीवन शैली से जुड़ी होती है, जिनमें तंबाकू का उपयोग, अत्यधिक शराब का सेवन और अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि शामिल है।

बारूद की तुलना में चीनी अधिक खतरनाक होती है। एक आतंकवादी हमले से मरने की तुलना में एक व्यक्ति की कोला पीने से मृत्यु की बहुत अधिक संभावना होती है। सबसे बड़ी समस्या वो अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थ नहीं है जो हम खाते है, बल्कि वो पौष्टिक भोजन है जो हम नहीं खाते। अच्छी खबर यह है कि आपके पास जोखिम को कम करने में मदद करने के लिए सकारात्मक आहार और जीवन शैली में बदलाव करके दीर्घकालिक बीमारी को रोकने में मदद करने की शक्ति है।

इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के महीने में हम एक बार फिर रोटरी के प्रोजेक्ट पॉजिटिव हेल्थ - स्टॉप एनसीडी पर ध्यान केंद्रित करते है। इसके तीन महत्वपूर्ण स्तंभ है: जीवनशैली संशोधन - *एक चम्मच कम, चार कदम आगे* अभियान; नियमित चेक-अप - 'अपने आंकड़ों को जाने' अभियान और जागरूकता - रोटेरियनों, हमारे समुदाय और विशेष रूप से स्कूली बच्चों के मध्य। एक चम्मच कम (नमक, तेल और चीनी की); चार कदम आगे (प्रतिदिन नियमित व्यायाम) और 'नो टोबैको' सभी के लिए मूल मंत्र बनने चाहिए।

इस महामारी ने मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर भी ध्यान केंद्रित किया है। मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों से जुड़े कलंक को सहानुभूति, सहायता और चिकित्सा के साथ बदलने की आवश्यकता होती है जो किसी व्यक्ति के समग्र कल्याण में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को रेखांकित करता है। हमारा ध्यान केवल इसपर होना चाहिए कि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।

डॉ भरत पांड्या

रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

रोटरी ज़ोन इंस्टिट्यूट 2020-21

रोटरी हमारे प्रतिभागियों की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य को प्राथमिकता देती है, और दुनिया भर में रोटेरियन सभाओं के आयोजन के बारे में निर्णय लेते समय रो ई मंडल लगातार स्थानीय एवं वैश्विक स्वास्थ्य परिस्थितियों का आंकलन कर रहा है। विभिन्न कारकों के गहन विश्लेषण, और रो ई मंडल की नीतियों का पालन करते हुए, ज़ोन इंस्टिट्यूट समिति ने ज़ोन 4, 5, 6 और 7 के लिए 2020-21 रोटरी इंस्टिट्यूट का आयोजन 15-17 जनवरी, 2021 के दौरान आभासी तौर पर करने का फैसला लिया है।

मेरा मानना है कि वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर समिति द्वारा लिया गया यह निर्णय सर्वश्रेष्ठ है, हालांकि मुझे इस बात का भी एहसास है कि कोची में एकत्रित न हो पाने को लेकर आप निराश भी है। मैं आपको व्यक्तिगत रूप से आश्वस्त करता हूं कि इंस्टिट्यूट की टीम एक सफल आभासी इंस्टिट्यूट सम्पन्न करने हेतु एक उच्च गुणवत्ता वाला रोटरी अनुभव प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। कार्यक्रम जानदार होगा और इसमें दुनिया भर के रोटरी कार्यक्रमों, पहलों के अपडेट एवं दुनिया भर के प्रेरक वक्ताओं की बातें शामिल होगी।

अपने घर या कार्यालय के सुकून एवं सुरक्षा का अनुभव करते हुए ज़ोन इंस्टिट्यूट - *द ओडिसी, अ वर्चुअल इक्स्पीरीअन्स* - का आनंद उठाइए।

तारीख याद रखिए: **15, 16 और 17 जनवरी 2021**। समय: **शाम 4 से 8**।

रो ई अधिकारियों (पूर्व, वर्तमान और भावी) के लिए पंजीकरण शुल्क: 2,500। (जीवनसाथी का पंजीकरण शुल्क माफ है)

इंस्टिट्यूट के लिए पंजीकरण करने से आपको मिलेगा:

- आभासी बैठक में शामिल होने का पासकोड
- आपके और आपके जीवनसाथी के लिए एक उपहार।
- रोटरी बूथ एवं अन्य सुविधाओं तक पहुँच।
- आभासी बैठक में शामिल होने का प्रमाणपत्र।

ज़ोन इंस्टीट्यूट के लिए पंजीकरण करना कार्यक्रम के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है और यह वास्तविक व्यय के एक छोटे से हिस्से का खर्च पूरा करेगा। मैं आभासी मंच पर संस्थान में रो ई अधिकारियों की 100 प्रतिशत भागीदारी के लिए तत्पर हूं।

कोची इंस्टिट्यूट पंजीकरण शुल्क वापसी

बिना किसी रद्दीकरण शुल्क के हम 15 दिसंबर से कोची इंस्टिट्यूट के लिए आपके द्वारा दिए गए पंजीकरण शुल्क की वापसी की प्रक्रिया प्रारंभ करेंगे। दी ओडिसी - रोटरी इंस्टिट्यूट 2020-21 के लिए हम स्वत: ही आपका पंजीकरण कर लेंगे और 2,500 काटने के बाद शेष राशि को आपको भेज दिया जाएगा।

हालांकि, यदि आप किसी कारण से इंस्टिट्यूट के लिए पंजीकरण नहीं करना चाहते है, तो कृपया इंस्टिट्यूट प्रमुख पीडीजी संजय खेमका से संपर्क कीजिए जो आपके लिए आवश्यक कदम उठायेंगे।

कमल संघवी

रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPE Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250
RIDE A S Venkatesh	RI Dist 3232
RIDE Dr Mahesh Kotbagi	RI Dist 3131

Executive Committee Members (2020–21)

DG Sanjiv Rai Mehra Chair – Governors Council	RI Dist 3011
DG Sudip Mukherjee Secretary – Governors Council	RI Dist 3291
DG Sangram Vishnu Patil Secretary – Executive Committee	RI Dist 3170
DG Prashant Harivallabh Jani Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3060
DG S Muthupalaniappan Member – Advisory Committee	RI Dist 3232

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

खुशबू से निराशा की ओर बढ़ते चेन्नई के फूल विक्रेता

किरण ज़ेहरा

लॉकडाउन और कोरोना महामारी की वजह से चेन्नई के प्रसिद्ध फूल विक्रेताओं को बहुत बुरी मार पड़ी है। इस तटीय शहर में अपने सुगंधित एवं रंगीन फूलों को बेचते हुय वे मुसीबतों की सुनामी का सामना कर रहे है।

कल्याणी की उँगलियाँ तेज़ी से चलती हैं जब वह फूलों की लंबी डोर में धागे को घुमाते हुए उसमें ताजे मल्ली पू (चमेली) को जोड़कर उसकी माला बनाती है। प्लास्टिक की चादरों पर उसके पास बैठी दो अन्य महिलाएँ - रानी और विमला - भी अपनी फूलों की माला पर काम कर रही है। 35 वर्षों से यह तिकड़ी चेन्नई के पेरम्बूर बाजार में एक गिरवी की दुकान के सामने रोजाना सुबह 5 बजे एक विक्रेता के लिए फूलों की माला बनाने हेतु इकट्ठा होती है। ''लॉकडाउन को छोड़कर, इतने साल से हम रोजाना काम करते थे,'' 62 वर्षीय कल्याणी कहती है, आगे कहते हुए कि ''वे हमारे जीवन के सबसे बुरे महीने थे।'' तीन दिनों तक मैंने बिस्कुट और पानी पर ही गुजारा किया क्योंकि मैं इसके लिए तैयार नहीं थी और सब कुछ अचानक और बहुत तेज़ी से हो गया।

कोरोना से पूर्व के दिनों में, ''*ओरु मुलम* (कोहनी से मध्यम उंगली तक नापने की एक प्राचीन इकाई) *क्कु ओरु रूबा केडेक्कुम* (हमें प्रति नाप के ₹1 मिला करते थे), रानी कहती है। लेकिन अब यह घटकर 25 पैसे रह गया है। ''अब हम जितनी अधिक माला बनाएंगे हमें उतना अधिक मिलेगा। लेकिन दुर्भाग्य से खुद विक्रेता की ही पर्याप्त बिक्री नहीं हो रही है। इसलिए, हमारा काम भी कम हो गया है,'' वह ठंडी आहें भरती है। वह कहती है, ''माला बनाने वाले एक दिन में आसानी से 100-150 कमा लिया करते थे। लेकिन अब हम 10-25 ही कमा पाते है। इतने कम में कैसे गुजारा होगा? क्या आपको पता है कि हमने पिछले सात महीनों से चावल कांजी (दलिया) के अलावा और कुछ नहीं खाया है?''

फूल विक्रेताओं की स्थिति भी कुछ अलग नहीं है। सुगंधित *मल्ली* डोरी के रोल, उज्वल और रंगीन *सामन्ती और सम्पगी* (गुलदाउदी, गेंदा), जीवंत *दिसंबर पू*

माला बनाने वाले एक दिन में आसानी से 100–150 कमा लिया करते थे। लेकिन अब हम 10–25 ही कमा पाते है। क्या आपको पता है कि हमने पिछले सात महीनों से चावल कांजी (दलिया) के अलावा और कुछ नहीं खाया है?

रानी, एक फूल विक्रेता

(फिलीपीन वायलेट) और गुलाबी चमेली, किलापुक उद्यानों में स्थित सुमति के स्वामित्व वाले सड़क किनारे के स्टॉल को सुशोभित करते है। वह कुछ राहगीरों की नजर पड़ने का इंतजार करती है और ज़ोर से कहती है, ''*अय्या पू वांगीकोंगा* (महोदय, कृपया फूल ले लीजिए)।'' बेचने के तीन असफल प्रयासों के बाद निराश होकर वह कहती है ''कोई नहीं खरीद रहा! पिछली नवंबर में सड़क पैदल यात्रियों, जॉगिंग करने वालों, मंदिर जाने वालों से भरी रहती थी और सुबह 7.30 बजे तक मैं अपने अधिकांश फूल बेच दिया करती थी।'' अपने ऊबड़-खाबड़ स्टॉल पर चंद सिक्कों और 10 के कुछ नोटों की ओर इशारा करते हुए वह कहती है, ''आज मैंने बस इतना ही कमाया है। आप कवर के नीचे भी देख सकते है। मुझे बस इतना ही मिला है और मैं इतनी कम आय के साथ घर लौट रही हूँ।''

यह पहले एक फलता-फूलता व्यवसाय था और मैंने फूल बेचकर कमाए गए पैसों से अपनी दोनों बेटियों की शादी की और मुझे बहुत ही कम कर्ज लेना पड़ा था।

कमला अम्मा, एक फूल विक्रेता

क्या पूजा और दिवाली के मौसम के आने के बाद इन विक्रेताओं की स्थिति कुछ बेहतर हुई है? जवाब में, 75 वर्षीय फूल विक्रेता कमला अम्मा कहती हैं, ''क्या दिवाली? यह त्यौहार के मौसम जैसा बिल्कुल नहीं लग रहा है क्योंकि हम अभी भी लॉकडाउन का असर झेल रहे है।'' अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने जीविकोपार्जन के लिए फूल बेचना शुरू किया था। ''यह पहले एक फलता-फूलता व्यवसाय था और मैंने फूल बेचकर कमाए गए पैसों से अपनी दोनों बेटियों की शादी की और मुझे बहुत ही कम कर्ज लेना पड़ा था।'' उनकी दैनिक आय ₹500-₹850 से गिरकर ₹150 तक या गई और लॉकडाउन के दौरान उनकी कुल उधारी ₹30,000 तक पहुंच गई। ''मैं अब

थोक फूल बाज़ार माधावरम, चेन्नई में विक्रेता।

हर कोई लॉकडाउन से पीड़ित है और यह स्थिति बदतर हो सकती थी। हम कोरोना के कारण संक्रमित होकर मर भी सकते थे।

सुशीला, एक और विक्रेता

केवल ब्याज चुकाने की ही उम्मीद कर सकती हूँ और मुझे दिवाली पर अपनी पोतियों के पास खाली हाथ जाना होगा,'' वह अफसोस करती है, उनके आँसू लगभग निकलने ही वाले थे लेकिन वह अपनी भावनाओं को नियंत्रित करती है।

यह मत भूलिए कि इनमें से अधिकांश कमजोर वर्ग 120 से 500 प्रतिशत या इससे भी अधिक की घृणित वार्षिक ब्याज दरों पर पैसा उधार लेता है। कुछ मामलों में, विशेष रूप से सब्जी विक्रेताओं के बीच, सुबह लिया गया ₹50 का ऋण शाम तक ब्याज सहित ₹100 का हो जाता है। आप स्वयं अनुमान लगा सकते है।

सड़क किनारे बैठी एक विक्रेता, कनम्मा, विचारों में खो जाती है और मेरे सवाल करने पर विचारों से बाहर आते हुए कहती है। ''कहने के लिये कुछ नहीं है। मुझे नहीं पता कि आज मैं एक भी माला बेच पाऊंगी या नहीं। यदि आप यहाँ फूल खरीदने नहीं आई है, तो कृपया चली जाइए।'' कुछ गज की दूरी पर एक माँ और बेटा ग्राहकों की प्रतीक्षा में सड़क किनारे स्थित अपने स्टॉल पर बैठते है। ''मैंने अपने बेटे को स्कूल नहीं भेजा। वह बस फूल बेचना जानता है! मुझे अपनी नहीं बल्कि उसके भविष्य की चिंता है। यह केवल एक काम नहीं है, यह हमारी ज़िंदगी है,'' वह मां कहती है जो कोविड को भक्तों और गृहिणियों को फूल बेचने के हमारे पारंपरिक व्यापार को नष्ट करने का दोषी ठहराती है। ''फूलों के बिना कोई पूजा कैसे कर सकता है?''

कुछ उत्साही महिलाएं

मगर इस सब के बावजूद भी, वे सहनशीलता का प्रदर्शन करती है। एक अन्य विक्रेता सुशीला कहती है, ''लॉकडाउन हटने के बाद कम से कम अब हमारे पास कुछ काम तो है। थोड़ी उम्मीद है कि हमारी स्थिति बदल जाएगी। हर कोई लॉकडाउन से पीड़ित है और यह स्थिति बदतर हो सकती थी। हम कोरोना के कारण संक्रमित होकर मर भी सकते थे।'' फूल विक्रेताओं के लिए नवरात्रि और दिवाली सबसे अच्छे त्यौहार होते है ''हम इन दिनों अच्छा पैसा कमाते है। लेकिन इस नवरात्रि, चूंकि इनकी कीमतों में गिरावट आ गई, इसलिए हमने बहुत कम पैसा कमाया, लेकिन फिर भी यह कुछ न कमा पाने से सौ गुना बेहतर है।'' वह मुझे मुफ़्त में *मल्ली* का *मुलम* देते हुए कहती है इसे ले लो अम्मा, वैसे भी इन्हें कोई और नहीं खरीदने वाला।

''स्विगी की तरह, जो आपको डिलीवरी बॉय के शरीर का तापमान बताता है, काश, हमारे पास भी यह बताने का एक तरीका होता कि हम जो फूल बेचते है वे संक्रमित नहीं है। इस तरह हम लोगों को ऐसा लगे बिना फूल बेच पाते कि हम उन्हें

सुशीला अपने सड़क किनारे लगाए गये फूल की दुकान पर ग्राहकों का इंतज़ार करती हैं।

सुमति आपनी कमाई दिखाती है, जो बहुत कम हैं।

कोयम्बेडु थोक बाज़ार में लगभग 4,000 थोक और खुदरा दुकाने लगती थी जिससे करीब 20,000 से अधिक लोग अपनी आजीविका कमाते थे।

संक्रमित कर देंगे,'' सौंदर कहते है, जिनकी पेरम्बूर बाजार में फूलों की एक दुकान है।

मालती और रेखा दोनों ने कार्यालय में परिचारिकाओं के रूप में काम किया, लेकिन लॉकडाउन के दौरान उन्होंने अपनी नौकरियां खो दी। रेखा कहती है, ''मेरा कार्यालय अप्रैल में बंद हो गया था और मुझे तीन महीने का वेतन मिला, जिसके बाद मुझे बताया गया कि अगर दोबारा कार्यालय खुलता है तो मुझसे संपर्क किया जाएगा। अन्य दो महीनों तक मुझे कोई फोन नहीं आया और मैं अपने शराबी पति पर निर्भर नहीं रह सकती थी कि वो मेरा और मेरे बेटे का सहारा बनें।'' उसने अपनी चाची से मदद मांगी जो रेलवे स्टेशन पर फूल बेचती थी। अब रेखा सुबह और शाम फूल बेचती है और दिन में तीन घरों में घरेलू मदद का काम करती है।

थोक बाजार की स्थिति

1996 से फूलों को फलों और सब्जियों के साथ कोयम्बेडु थोक बाज़ार में बेचा जाता था और कभी इस परिसर में लगभग 4,000 थोक और खुदरा दुकाने लगती थी जिससे करीब 20,000 से अधिक लोग अपनी आजीविका कमाते थे। अप्रैल में कोविड हॉटस्पॉट के रूप में उभरने के बाद यह बाजार परिसर बंद हो गया। कोयम्बेडु के एक थोक फूल विक्रेता सेंथिल, जिनके पास वनागरम जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था, कहते है, पिछले साल की तुलना में बाजार में ''केवल 50 प्रतिशत फूल ही आए और हमारी समस्याओं में इजाफा करते हुए आयुध पूजा से ठीक पहले बारिश हो गई। हमारे अधिकतर फूल खराब हो गए क्योंकि उन्हें संग्रहित करने की कोई सुविधा नहीं थी। बाजार में जो भी माल आया उसे बेचा नहीं जा सका क्योंकि हर कोई उन्हें खरीदने से डर रहा था। हमारे पास उन खूबसूरत फूलों को फेंकने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। हममें से कुछ ने पैसे उधर लेकर फूल खरीदे थे इस उम्मीद में कि वे अच्छे पैसे कमा लेंगे। लेकिन अब सब कुछ हमारे खिलाफ होता नज़र आ रहा है।''

माधवराम थोक फूल बाज़ार, जिसे कोयम्बेडु बाजार परिसर से विक्रेताओं को अस्थायी रूप से स्थानांतरित करने के एक उपाय के रूप में स्थापित किया गया था,

कल्याणी, रानी और विमला पेरम्बूर, चेन्नई में एक दुकान के आगे फूल की माला बनाती हुए।

यह विभिन्न तरह के लगभग 100 टन फूल होंगे जो पिछले माह हुई बारिश की वजह से खराब हो गए। यह कचरा नहीं है, यह हमारी मेहनत की कमाई है जो अब कचरे में बदल गई है।

तिरुमाल, माधावरम से एक थोक व्यापारी।

तक पहुँचने का रास्ता ऊबड़-खाबड़ है और सड़क को मरम्मत की अत्यधिक जरूरत है। लेकिन विक्रेताओं के लिए पक्की सड़कों, और फूलों को संरक्षित करने एवं बेचने हेतु प्लास्टिक की चादरों एवं बांस से बने अस्थायी तंबू का न होना इतना भी बुरा नहीं है। ''सब ठीक है। अगर कोई समस्या हो भी तो हम उसके बारे में क्या कर सकते है?'' वहाँ के एक कमीशन एजेंट विजय पूछते है। उसका कहना है कि बारिश के कारण आयुध पूजा के बाद फूलों की थोक कीमतों में भारी गिरावट आ गई। वह कहते है, *सामंधी* ₹150-₹200 किग्रा की कीमत में बेच गया जबकि मल्ली को 300 किग्रा में और *संपंगी* को ₹260 से 300 कि.ग्रा. पर बेचा गया लेकिन स्थानीय विक्रेताओं ने इसे बहुत ही कम दाम पर थोक में खरीदा और उच्च कीमतों पर बेचा। ''हमारे ग्राहकों, थोक विक्रेताओं को फायदा नहीं हुआ क्योंकि स्थानीय विक्रेताओं ने नया स्टॉक नहीं खरीदा (थोक स्तर पर) क्योंकि खुदरा विक्रेताओं ने अपने फूलों को लगातार बढ़ी हुई दरों पर बेचना जारी रखा जो नियमित खरीदारों को पसंद नहीं आया।'' शहर भर में कई लोग फूलों की अत्यधिक कीमतों के कारण उन्हें खरीदने के लिए तैयार नहीं थे। ''हम स्थानीय विक्रेताओं को दोष नहीं दे सकते क्योंकि किसी ने भी ज्यादा समय तक कमाई नहीं की,'' वह आगे कहते है।

माधवराम के एक थोक व्यापारी तिरुमाल बताते हैं, ''हम व्यापार करने के लिए एक उचित बाज़ार स्थल के बिना जीवन यापन करने हेतु संघर्ष कर रहे है। कोयम्बेडु बाजार में पक्की इमारतें, उचित परिवहन और भंडारण प्रणालियाँ है, और फूलों की टोकरी को उतारने और चढ़ाने के लिए पर्याप्त कर्मचारी है।''

जैसे ही बूँदा-बाँदी होना शुरू होती है, वह अपने फूलों को बारिश से बचाने के लिए बांस की चौखट पर प्लास्टिक की चादरों को बांधने के लिए अपनी दुकान की ओर दौड़ते है। ''हमें कोयमबेडु में अपने व्यवसाय को प्रभावित करने वाली मानसून की बारिश को लेकर चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी,'' वह कहते है और बाज़ार के कोने में फेंके गए फूलों के विशाल ढेर की ओर इशारा करते हुए आगे कहते है, ''यह विभिन्न तरह के लगभग 100 टन फूल होंगे जो पिछले माह हुई बारिश की वजह से खराब हो गए। यह कचरा नहीं है, यह हमारी मेहनत की कमाई है जो अब कचरे में बदल गई है।''

चित्र: किरण ज़ेहरा

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटरी क्लब पुणे साउथ ने ज़ोरदार धमाके

रशीदा भगत

रोटरी क्लब पुणे साउथ की परियोजना सुवर्णकन्या के बाल लाभार्थी।

इस वर्ष, जून में, रो इ मंडल 3131 के प्राचीनतम क्लबों में से एक, रोटरी क्लब पुणे सउथ ने 50 वर्ष पूर्ण होने पर स्वास्थ्य और स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और कौशल आदि क्षेत्रों में कई उल्लेखनीय सेवा परियोजनाएँ करते हुए, अपने 100 सदस्यों के साथ स्वर्ण जयंती समारोह मनाया।

स्वर्ण जयंती के अध्यक्ष अभिजीत जोग की नज़र में इस वर्ष क्लब की सर्वाधिक प्रभावशाली परियोजनाओं मे से एक थी, सफाई कर्मचारियों में आत्मसम्मान का भाव जगाना और उनके कार्य को समाज में सम्मान दिलवाना। ''स्वच्छ भारत कार्यक्रम के माध्यम से, भारत ने नए शौचालयों के निर्माण के साथ, आम नागरिकों में स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

लेकिन इस अभियान की सबसे अग्रिम पंक्ति के लोग, सेप्टिक और गटर जल निकासी की सफाई में लगे कर्मचारी, लगभग अमानवीय परिस्थितियों में जरूरी उपकरणों के बिना काम करते हैं। भारत में सीवर और सेप्टिक टैंकों की सफाई के दौरान जहरीली गैस के कारण दम घुटने से, हर पांचवे दिन एक श्रमिक की मौत हो जाती है और प्रत्येक भारतीय के लिए ये एक शर्मनाक आंकड़ा है।''

इसके अलावा, उचित शिक्षा और पर्याप्त प्रशिक्षण के अभाव में, ये कार्यकर्ता सुरक्षा उपायों के प्रति पूरी तरह से लापरवाह रहते हैं और कई प्रकार के संक्रमणों की वजह से अल्पायु में ही मर जाते हैं। जब मालूम पड़ा कि ये हतोत्साहित लोग सामाजिक अवमानना को झेलते हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं तो क्लब ने उनके कल्याण की और उनके कार्य स्थल की परिस्थितियों में सुधार की ज़िम्मेदारी उठाते हुए, उनके बेहतर स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए परिष्कृत सुरक्षा साधन उपलब्ध करवाने का निर्णय किया।।

क्लब ने इस, क्षेत्र के विशेषज्ञ, KAM फाउंडेशन के साथ, 35 ''सफाई सैनिकों'' का चयन कर उनके व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए, पायलट स्तर पर कक्षा के भीतर और बाहर फील्ड में 12-दिवसीय सफाई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिससे उनमें आत्म सम्मान की भावना जाग्रत हो और वो अपने काम के प्रति गर्व महसूस करें साथ ही सुरक्षा उपायों का पालन सख्ती से करें।

कर्मचारियों को व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों का एक सेट दिया गया जिसके अंदर एक टोपी, काला चश्मा, मास्क, हाथ के दस्ताने, एक जैकेट और घुटने

के साथ 50 वर्ष पूर्ण किये

लाख दिए, इस परियोजना से इतने खुश हैं कि वे हमारे साथ आगे भी जुड़े रहना चाहते हैं, लेकिन कोरोना महामारी की वजह से हमारे कार्यक्रम में देरी ज़रूर हुई हैफ लेकिन ये हो जाएगा।''

बकरी के दूध से साबुन का निर्माण

रोटरी क्लब पुणे साउथ की एक अन्य महत्वपूर्ण परियोजना-कृषक परिवारों की सहायता-बकरी के दूध से साबुन बना कर। जोग बताते हैं कि लगातार सूखा पड़ने के कारण, ''यहां महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले में अकाल के कारण किसानों का जीवन दूभर हो गया था और उनमें आत्महत्या की प्रवृत्ति भी बढ़ रही थी जो कि सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं दोनों के लिए एक बड़ी चुनौती थी।''

इसके बचाव में आया शिवर फाउंडेशन, युवाओं का एक समूह, जिन्होंने आगे बढ़ कर इस चुनौती को स्वीकार किया, किसान परिवारों को लम्बे समय तक आजीविका प्रदान करने के लिए बकरी के दूध से साबुन बनाने का तरीक़ा सुझाया। जोग ने बताया कि उस्मानाबादी बकरी एक खास नस्ल की बकरी होती है और ''इसके दूध में असाधारण पौष्टिक गुण और त्वचा की देखभाल करने वाले तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं।'' विज्ञापन व्यवसाय से जुड़े युवा ने, बकरी के दूध से साबुन बनाने के लिए एक वाणिज्यिक उद्यम के सन्दर्भ में पहले जोग से संपर्क किया। ''लेकिन मुझे लगा कि हमें इसे एक सेवा परियोजना का रूप देना चाहिए और रोटरी को भी इसमें सम्मिलित होना चाहिए क्योंकि यह कृषक कल्याण परियोजना है और इस तरह हमारे क्लब ने इसे अंगीकार कर लिया।''

तक के गम बूट्स शामिल थे। ''हमें लगा कि आमतौर से वर्दी पहने हुए व्यक्ति को पहचान और सम्मान मिलता है और वह अपनी तरफ ध्यान आकर्षित करता है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले श्रमिकों ने भी ऐसा ही महसूस किया और शायद जीवन में पहली बार, अपने और अपने काम के बारे में अच्छा महसूस किया,'' जोग ने कहा।

शीघ्र ही क्लब ने पुणे नगर निगम के साथ एक महत्वपूर्ण सहभागिता की, जिसने इस कार्य का समर्थन किया और अपने कर्मचारियों और अनुबंध श्रमिकों को प्रशिक्षित होने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया। प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया और इस कार्यक्रम से उनके आत्मसम्मान और सुरक्षा आदतों पर पड़े जबरदस्त प्रभाव से उत्साहित हो कर क्लब ने प्रशिक्षित होने वाले सफाई कर्मचारियों की संख्या का लक्ष्य 1000 कर दिया, इस परियोजना के लिए एक जर्मन कम्पनी, एंड्रियास एसटीआईएचएल ने अपने सीएसआर कोष से ₹20 लाख रूपये का वित्तीय अनुदान दिया था।

प्रशिक्षण पूर्ण करने वाले पहले दो बैच को एक कार्यक्रम में सर्टिफिकेट और सेफ्टी किट वितरित किये गए, जिसमें एंड्रीयास एसटीआईएचएल इंडिया के प्रबंध निदेशक, परिन्द प्रभुदेसाई, पुणे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के वरिष्ठ अधिकारीगण, क्लब के सदस्य तथा उनकी धर्मपत्नियां (ऐन्स) शामिल थी। ''सफाई कर्मचारियों ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज का महत्वपूर्ण अंग होने पर उन्हें गर्व है और वे सम्मानित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वंचित और निर्धन वर्ग के लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आवश्यक हैं। पूर्व अध्यक्ष ने कहा, हम उन्हें एक मशीन भी देना चाहते थे, जिसकी कीमत लगभग ₹10 लाख थी, जो उनके काम को प्रतिष्ठित करेगी। एंड्रियास एसटीआईएचएल, जिसने हमें ₹20

शिवर फाउंडेशन अब बकरी का दूध खरीदता है, जो पूर्व में बच जाने के बाद फेंक दिया जाता था और अब इसका उपयोग कृषक-परिवारों में विशेषकर महिलाओं द्वारा किया जाता है जो दूध से साबुन बनाने के लिए इस में विशेष जडी-बूटियाँ और अन्य प्राकृतिक सामग्री मिलाती हैं। बाजार में इस साबुन को बेचने के लिए फाउंडेशन किसानों की मदद करता है, जिसकी कीमत करीब ₹150 है और यह अमेज़न पर भी उपलब्ध है।

यह परियोजना एक अन्य बड़ी परियोजना से सम्बद्ध है, जो क्लब की स्वर्ण जयंती की मील का पत्थर परियोजना है। *रोटरी उद्योजक मित्र,* इसका उद्देश्य आजीविका बढ़ा कर आय में वृद्धि करना है

हमें लगा कि आमतौर से वर्दी पहने हुए व्यक्ति को पहचान और सम्मान मिलता है और वह अपनी तरफ ध्यान आकर्षित करता है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले श्रमिकों ने भी ऐसा ही महसूस किया और शायद जीवन में पहली बार, अपने और अपने काम के बारे में अच्छा महसूस किया।

अभिजित जोग
अध्यक्ष, (2019-2020)
रोटरी क्लब पुणे साउथ

''व्यापार और उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में रोटेरियनों के ज्ञान और अनुभव के साथ नवोदित उद्यमियों की सहायता करना और व्यापार की प्रारंभिक अवधि में उनका मार्गदर्शन करना,'' पीडीजी अरुण कुडले का कहना था।

इस तरह, *रोटरी उद्योजक मित्र* ने शिवर फाउंडेशन के साथ मिलकर बकरी दूध से निर्मित साबुन का ब्रांड विकसित करने, इसके पैकेट की डिजाइन, विपणन रणनीति और साबुन बाजार में उतारने की योजना पर काम किया। इस उत्पाद को पेटेंट करने और पैकेजिंग के डिब्बे छापने में रोटेरियनों ने मार्गदर्शन किया, एक रोटेरियन ने स्वेच्छा से इस साबुन को पूरे भारत में खुदरा दुकानों पर रखवाने में भी सहायता की थी।

सुवर्णकन्या परियोजना अल्प आय वर्ग के परिवारों की 5 वर्ष से कम उम्र की प्रत्येक लड़की के नाम पर, कुल 50 लड़कियों के खाते में ₹20,000 एफडी में जमा कराये गए। यह राशि, इन लड़कियों को 18 साल की उम्र में दी जाएगी, जो उस समय ₹1 लाख से अधिक हो जाएगी और उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहायक होगी।

इथियोपिया में क्लब द्वारा आयोजित सर्जरी शिविर में डॉक्टर्स एंडोस्कोपिक सर्जरी करते हुए।

नवंबर 2019 में, पुणे में, प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेटर अजिंक्य रहाणे ने साबुन को औपचारिक रूप से बिक्री के लिए जारी किया था।

कुडले का कहना है कि इस साबुन से अपेक्षित बिक्री नहीं हो सकती, इसलिए क्लब ने निर्णय किया है कि इस क्षेत्र के कृषक परिवारों को एक बकरा और चार बकरी दान में देंगे जिसकी कीमत ₹40,000 है, ''जो उन्हें एक स्थायी समाधान प्रदान कर किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं को रोकेगा।''

वर्तमान में उस्मानाबाद जिले के एक तालुक में 250 परिवारों से बकरी का दूध खरीदा जाता है और आगामी एक वर्ष में, रो क्लब ऑफ़ पुणे साउथ की सहायता से, शिवर फाउंडेशन, उस्मानाबाद जिले के सभी आठ तालुकों के 10,000 परिवारों को इसमें सम्मिलित करने की योजना पर कार्य कर रहा है।

इथियोपिया में एक शल्य-चिकित्सा शिविर

इस क्लब ने इथियोपिया की राजधानी ऐडीस अबाबा स्थित सेंट पॉल अस्पताल में 10 से 15 फरवरी, 2020 तक विशिष्ट शल्य-चिकित्सा के लिए लोकमान्य अस्पताल, पुणे के साथ मिल कर एंडोस्कोपिक शल्य-चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। सामान्य शल्य-चिकित्सा, मूत्र शल्य-चिकित्सा, अस्थि रोग और स्त्री रोग से सम्बंधित शल्य क्रियाएं की गई। टीम के अंतर्गत चार विशेषज्ञ सर्जन, दो अनेस्थेसिस्ट और कई रोटरी स्वयंसेवकों ने पूरे धैर्य और परिश्रम के साथ मिल कर ''लगभग 100 लोगों की शल्य क्रिया की, जिनमें से अधिकांश क्रियाएं अत्यंत जटिल थीं,'' जोग कहते हैं।

चूँकि इथियोपिया में एंडोस्कोपिक सर्जरी में कुशल डॉक्टर उपलब्ध नहीं हैं इसलिए इस अफ्रीकी देश में कई सर्जरी पहली बार की जा रही थीं जिस की वजह से अरसे से परेशान रोगियों ने राहत की सांस ली है।

फुटबॉल खेलते हुए एक युवा लड़के के घुटने के लिगामेंट में चोट लग गई थी और पिछले तीन साल से वो असहनीय दर्द झेल रहा था। डॉ भूषण गनवीर ने उस के घुटने की आर्थोस्कोपी की और चार महीने बाद वह फिर से फुटबॉल खेल सकेगा। हर्निया की एक बड़ी गाँठ से परेशान महिला का आठ महीने तक इलाज नहीं हुआ। डॉ सुप्रशान्त कुलकर्णी

गीतांजलि पुरोहित (दाएं से दूसरी) एक स्कूल के प्रिंसिपल और शिक्षकों को किताबें सौंपती हुयी।

ने एन्डोस्कपिक पद्धति से शल्य क्रिया की जिससे उसे शारीरिक और मानसिक शान्ति मिली।

एक अन्य रोगी दुर्घटना में बुरी तरह से घायल होने के पश्चात सामान्य रूप से मल- मूत्र का निस्तारण नहीं कर सकता था और उसे अपने शरीर से लटकती दो थैलियों के साथ रह कर रोज़ अपमान का घूँट पीना पड़ता था, और जिसे लगातार साफ करने की आवश्यकता होती थी, ''डॉ सन्देश सुराणा उसके जीवन में एक देवदूत बन कर आये थे, उसके दोनों अंगों को शल्य क्रिया द्वारा पुनर्निर्मित किया। वो कृतज्ञ रोगी अब सामान्य जीवन जी सकेगा।''

अभिजित जोग (बाएं) और क्रिकेटर अजिंक्य रहाणे गोट मिल्क सोप लॉंच करते हुए।

इन डॉक्टरों ने डॉ मुकुंद थाटे, डॉ राजेंद्र गोसावी और डॉ गणेश घोंगटे के साथ मिल कर, स्थानीय डॉक्टरों को इन शल्य-चिकित्सा का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया और डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों दोनों को व्याख्यान भी दिए। ''स्थानीय चिकित्सा बिरादरी ने इन डॉक्टरों द्वारा दी गई जानकारी और प्रशिक्षण की बहुत सराहना की। हमारी प्रेस कॉन्फ्रेंस को, जिसमें भारत के राजदूत अनुराग श्रीवास्तव भी उपस्थित थे, स्थानीय मीडिया ने प्रमुखता से छापा था। रोटरी क्लब एडिस अबाबा वैस्ट ने अपनी बैठक में हमें आमंत्रित किया था जहां एडिस अबाबा स्थित सभी रोटरी क्लबों के अध्यक्षों से मिलना हुआ और उन सभी ने इथियोपिया में गरीब और जरूरतमंद मरीजों की सहायता करने के लिए अपनी प्रसन्नता और आभार व्यक्त किया। संभवतः भारत से किसी भी रोटरी क्लब का ये पहला अंतर्राष्ट्रीय सर्जिकल शिविर था, जिसे रोटरी क्लब पुणे सउथ द्वारा स्वयं के स्तर पर, अकेले ही आयोजित किया गया था वो भी रोटरी इंटरनेशनल से प्रकार की सहायता लिए बिना,'' उन्होंने कहा।

इस चिकित्सा शिविर पर ₹20 लाख व्यय हुए थे, ₹10 लाख पुणे स्थित लोकमान्य अस्पताल ने दान किए और बाकी रोटेरियनों द्वारा वहन किये गए।

उन्होंने कहा कि ''स्थानीय डॉक्टर इतने कृतज्ञ और अभिभूत थे कि हमें लगा कि इस शिविर का आयोजन हर साल करना चाहिए लेकिन कोविड की मेहरबानी से ये संभव नहीं हो पाया, एक साल के अंतराल के बाद हम इस परियोजना को जारी रख सकते हैं।''

लैंगिक समानता के लिए

लैंगिक समानता पर आधारित, एक अन्य सार्थक परियोजना के लिए एन्स की सक्रिय भागीदारी को धन्यवाद है, गरीब परिवार की लड़कियों के लिए शुरू की गई *सुवर्णकन्या* परियोजना और जिसे स्वतंत्र रूप से केवल महिलाओं द्वारा ही क्रियान्वित किया गया था और इसके अलावा, अल्प आय वर्ग के परिवारों की 5 वर्ष से कम उम्र की प्रत्येक लड़की के नाम पर, कुल 50 लड़कियों के खाते में ₹20,000 एफडी में जमा कराये गए। यह राशि, इन लड़कियों को 18 साल की उम्र में दी जाएगी, जो उस समय ₹1 लाख से अधिक हो जाएगी और उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहायक होगी। लेकिन साथ ही यह शर्त रहेगी कि वे उस समय अविवाहित हों।

स्वच्छता कार्य प्रगति पर है।

अन्य परियोजनाओं में 15 प्रतिष्ठित उद्यमियों पर मराठी में एक पुस्तक प्रकाशित करना शामिल है जिसे पुणे और उसके आसपास के 125 से अधिक स्कूलों में वितरित किया गया था, जिसका उद्देश्य वरिष्ठ छात्रों को नौकरी करने की जगह उद्यमी बनने के लिए प्रेरित किया गया। 50,000 छात्रों तक पहुंची इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य था कि अधिकांश छात्र इसे पढें और इस की बातों को अपने जीवन में उतारें। इसे और लोकप्रिय बनाने के लिए एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी जिस में 5,000 से अधिक छात्रों ने भाग लिया और शीर्ष तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप ₹10,000, ₹7,500 और ₹5,000 नकद प्रदान किए गये।

अभिजीत जोग एक सफाई कर्मचारी को सुरक्षा किट देता है, परिंद प्रभुदेसाई, एम डी, एंड्रियास एस टी आई एच एल इंडिया, भी चित्र में शामिल हैं।

नवंबर 2019 में, *स्वच्छ भारत* के संदेश को बढ़ावा देने के लिए, रोटरी क्लब पुणे सउथ से 40 रोटेरियन और एन्स पुणे से गोवा तक एक कार रैली में गए थे। कोविड लॉकडाउन के दौरान भी सदस्यों ने सेवा कार्य किये जैसे कि प्रवासी श्रमिकों को भोजन के पैकेट, सैनिटाइजर, पीपीई किट, मास्क आदि वितरित करना।

रोटरी के सदस्य सिर्फ काम ही नहीं करते, मौज मस्ती भी करते हैं। सितम्बर 2019 में क्लब के 50 सदस्यों ने 3 दिन भूमध्य सागर क्रूज शिप पर और स्पेन मे 5-दिन भ्रमण कर यात्रा का लुत्फ़ उठाया। ''हमारे क्लब में इस तरह के पर्यटन का इतिहास 10 वर्षों से है; ये आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ बनाता है।'' ■

मानवता हमारा कारोबार

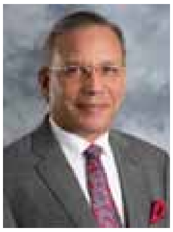

विक्टोरियन लंदन में क्रिसमस की कोहरेदार पूर्व संध्या पर, कुछ अभागे अपनी मेज़ पर बैठते है। दुनिया से दुखी और बेखबर, एबेनेजेर स्क्रूज को केवल एक ही चीज़ में रुचि है: उनके नफ़ा या नुकसान में। वह अपने भतीजे के क्रिसमस के रात्रिभोज के निमंत्रण को अस्वीकार कर देते है, गरीबों और वंचितों की सहायता करने से इनकार करते है, और क्रिसमस के दिन कम वेतन पर काम करने वाले अपने क्लर्क, बॉब क्रैचिट, को अनिच्छा से छुट्टी देते है।

उनके घर पहुंचने के बाद, अजीब चीजें होने लगती है। जैकब मार्ले, उसका मृत व्यवसायिक साथी, रस्सी से बंधे एक भूत की तरह दिखाई देता है, जो स्क्रूज से अपने आत्म-केंद्रित रवैये को बदलने के लिए कहता है नहीं तो उसका अंजाम भी वैसा ही होगा।

यह क्रिसमस कैरोल, चार्ल्स डिकेंस की एक उत्तम कहानी का आधार है, जिसमें एक व्यक्ति एक कठोर एकांतवासी से उदार मानव में परिवर्तित होता है। मेरे लिए, यह विश्वास या समय की परवाह किए बिना सभी को मूल्यवान सबक प्रदान करने वाला है। कहानी के अंत तक, स्क्रूज ने सबसे महत्वपूर्ण सबक सीखा: जब तक हम जीवित है, तब तक मानव जाति की सेवा करने हेतु खुद को समर्पित करने में देर नहीं होती।

वर्ष समाप्ति की छुट्टियां हमारे ऊपर है। यह देने और बांटने का समय है, लेकिन यह केवल हमारे प्रियजनों तक ही सीमित नहीं है। यह उन लोगों के लिए भी है जिनसे हम कभी मिले ही नहीं और न कभी उन्हें देखेंगे, जो हमारे जितने भाग्यशाली नहीं है और उन्हें हमारी मदद की आवश्यकता है। रोटरी संस्थान साल के 365 दिन देती है।

हमारा संस्थान एक धर्मार्थ संगठन और एक प्रदर्शक के रूप में एक साथ काम करता है; इस तरह, हम रोटरी के कुछ सबसे महत्वपूर्ण काम करते है, जैसे कि माताओं और उनके बच्चों की रक्षा करना और समुदायों की कोविड -19 के झटके से उबरने में मदद करना।

कृपया इस उदारता के क्षण में रोटरी संस्थान को अवश्य याद रखें। याद रखिए कि संस्थान के लिए आपके उपहार सभी ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में हमारे काम को बढ़ावा देते है। वे स्थायी है, केवल आज ही नहीं बल्कि हमारे जाने के लंबे समय के बाद तक के लिए। और जब तक हम आज संस्थान का समर्थन करते रहेंगे, तब तक यह आने वाले कल में दूसरों के लिए सेवा के अपने चमत्कार जारी रखेगा। रोटरी संस्थान के न्यासियों की ओर से, मैं 31 दिसंबर से पहले आपके उदार योगदान को भेजने के लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

के आर रवींद्रन

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

टीआरएफः आशा की किरण

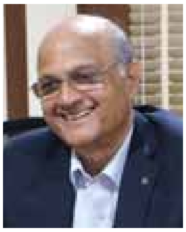

हमने कुछ दिनों पहले शांतिपूर्वक दिवाली मनाई। नवंबर में, हमने रोटरी संस्थान का उत्सव भी मनाया और उसपर ध्यान केंद्रित किया। दीवाली बुराई पर अच्छाई, अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और निराशा पर आशा की जीत का प्रतीक है। और हमारा संस्थान निराश लोगों को क्या प्रदान करता है? जवाब है, उम्मीद। जी हां, दिवाली का त्यौहार और दुनिया में अच्छा करने का TRF का उद्देश्य एक समान है!

नवंबर त्यौहार की तरह आया और चला गया, लेकिन दीवाली का महत्व प्रकाश के लिए कभी न खत्म होने वाली खोज है। दुनिया के कई नागरिकों के लिए, जिस प्रकाश की उन्हें तलाश है वो उस सुरंग के अंत में है जो स्वयं उनके अंदर है। एक सदी से भी अधिक समय से, टीआरएफ पथप्रदर्शक रहा है जो दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए आशा की किरण लेकर चलता है।

चूंकि मैं टीआरएफ का महिमा मंडन करते हुए हमारे देश के विभिन्न हिस्सों के रोटेरियनों को संबोधित करता हूं, तो मेरा संदेश बहुत स्पष्ट है: टीआरएफ को आवश्यकता है कि आप आर्थिक प्रकाश का दीप जलाकर सहयोग प्रदान करें ताकि उस अंधेरी सुरंग में लोगों को उम्मीद प्रदान की जा सके। टीआरएफ को दुनिया में अच्छा करना जारी रखने के लिए योगदान की आवश्यकता है, विशेष रूप से वार्षिक और पोलियो कोष के लिए।

मेरे साथी रोटेरियनों, जब आप दिसंबर में इसे पढ़ रहे होंगे, तो यह संभव है कि वैश्विक अनुदान के लिए विश्व कोष यदि पहले नहीं तो दिसंबर अंत तक समाप्त हो जाएगा। यह केवल वार्षिक कोष में देने की उत्साही अपील को मजबूत करता है क्योंकि जितना अधिक पैसा आएगा उतना ही विश्व कोष बढ़ेगा।

हम, टीआरएफ न्यासी, टीआरएफ को दिए गए आपके समर्थन के लिए आपके आभारी है और यह मानते है कि न्यासियों को वैश्विक अनुदानों को कार्यान्वित करने में रोटेरियनों की गहन रुचि के कारण विश्व निधि पर पड़ने वाले वित्तीय दबाव को संबोधित करने के लिए भी कदम उठाने चाहिए। इसके परिणामस्वरूप, रोटरी अनुदान स्टाफ का पुनर्गठन किया गया है। इसके तहत इस बात की आवश्यकता महसूस की गई कि कुछ अनुदान फाइलें एक क्षेत्रीय अनुदान अधिकारी से दूसरे तक स्थानांतरित की जाएं। कृपया पुष्टि करें कि आपका वर्तमान क्षेत्रीय अनुदान अधिकारी कौन है। कई क्षेत्रों के लिए, कोई परिवर्तन नहीं हुए है।

आपके धैर्य के लिए धन्यवाद क्योंकि आपके संस्थान कर्मचारी इन बदलते कार्यों और प्रत्येक अनुदान अधिकारी द्वारा संभाली जाने वाली फाइलों में हो रही वृद्धि के साथ अनुकूलित होते है। हम संस्थान के प्रति आपके समर्थन को महत्व देते है ताकि यह दुनिया में अच्छा करता रहे।

गुलाम ए वाहनवटी

ट्रस्टी, द रोटरी फौउंडेशन

कोविड-बाद की दुनिया में रोटेरियनों के समक्ष चुनौति और अवसर

के आर रवींद्रन

आपने फाउंडेशन में जितनी उदारता से योगदान किया है, उस का आभार व्यक्त करने के लिए ट्रस्टीज के पास शब्द नहीं है। जैसा कि गोएथ ने कहा है बातें बहुत हो चुकी; अंततः अब मुझे काम पर ध्यान देने दो! और आज हम जिन दाताओं का सम्मान कर रहे हैं, उन्होंने निश्चित रूप से उसी सिद्धांत पर काम किया है।

आज हमारी कुल संपत्ति में एन्डोमेन्ट फण्ड का अंश 500.5 मिलियन डॉलर है और 838.3 मिलियन डॉलर और प्रतिबद्ध हैं, कुल मिला कर 1.34 बिलियन डॉलर हैं। आज हमारे यहां आर्च क्लम्फ सोसायटी के 1,096 सदस्य ; 37,675 मेजर डोनर्स और 1,765,280 पॉल हैरिस फैलो हैं। लेकिन आज यहां आपके सामने मुझे एक महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान केन्द्रित करने दें। और जब आपके आस पास इतना महत्वपूर्ण मुद्दा है तो आप उसे नज़र अंदाज़ कर छोटी मोटी चीजों पर चर्चा नहीं करते।

फरवरी 2018 में, डब्ल्यूएचओ मुख्यालय में में, वैज्ञानिकों का एक समूह इस बात पर चर्चा करने और योजना बनाने के लिए एकत्रित हुआ था कि जिस की उन्होंने चेतावनी दी थी और दशकों से अपेक्षा थी : एक अज्ञात रोगाणु जिसका कोई इलाज नहीं, जो संभवतः जानवरों में उत्पन्न होता है, मनुष्यों में प्रवेश कर जाएगा और चुपचाप हर तरफ शीघ्रता से फैल जाएगा। रोगाणु के सटीक आनुवंशिक चरित्र का पूर्वानुमान वैज्ञानिक नहीं लगा पाए थे ना ही उनको मालूम था कि यह हमला कब करेगा। हाँ, पर इतना ज़रूर जानते थे कि वो आएगा और इसकी शुरुआत किस जगह से होगी। उन्हें इस बात का अंदाज़ा तो था कि इस संक्रमण की शुरुआत कैसे होगी और लोगों में कितनी आसानी से संक्रमण फ़ैल जाएगा, यहां तक कि यह योजना भी बना ली गई थी कि इसे पहचान कर कैसे रोका जाये। पर जब ये बीमारी आई तो इनके पैर जड़वत हो गए।

जैसा किसी ने कहा है, दुनिया भर की सरकारें अरबों खरबों डॉलर खर्च कर विशाल सैन्य दल का निर्माण करती हैं, पूरे ग्रह पर चल रही सेनाओं की आवाजाही पर नज़र रखती हैं और युद्ध का अभ्यास करती हैं। इसके बावजूद ये दुनिया एक छोटे से सूक्ष्म जीव के खिलाफ, जिस का आकर एक वाक्य के अंत में एक पूर्ण विराम के लगभग 10,000 वें अंश के बराबर है, बचाव के लिए तैयार नहीं थी। अब तक,

दुनिया भर में 46 मिलियन से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं और 1.2 मिलियन से अधिक मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। जब कोविड से किसी की मृत्यु होती है, तो अक्सर वो मृत्यु एकाकी होती है, किसी अस्पताल में, केवल अंतरिक्षनुमा सूट पहन, चहलकदमी करती अनजान प्रेतनुमा आकृतियों के बीच, पीड़ित रोगी भयभीत रहता है। पीड़ित के परिजनों को तो और तिरस्कार से गुजरना पड़ता है - कोई उचित अंतिम संस्कार नहीं, जल्दबाजी में दफन, शोक मनाने का मौका भी मुश्किल से मिलता है।

इसके अलावा और भी कीमत चुकानी पडी है। लगभग 400 मिलियन नौकरियां चली गई। आईएमएफ का कहना है कि इस साल वैश्विक उत्पादन में 5 फीसदी की गिरावट आएगी; 2008 के वित्तीय संकट से कहीं बदतर। विश्व बैंक का कहना है कि 100 मिलियन लोग अत्यधिक गरीबी में धकेल दिए जाएंगे। विश्व खाद्य कार्यक्रम का मानना है कि दुनिया भर में भूख और अकाल का आतंक छा जायेगा। यूनिसेफ का कहना है कि 51 देशों में 872 मिलियन छात्र स्कूल जाने से वंचित हैं और बच्चों के टीकाकरण की दर बुरी तरह से गिर गई है। सरकार को हम कठिन निर्णय से जूझते हुए देख रहे हैं - क्या लोगों को जीवित रखने के लिए हमें बंद की घोषणा कर देनी चाहिए या अर्थव्यवस्था को चलायमान रखने के लिए खुला रहना चाहिए? खामियां दोनों विकल्पों में हैं।

कोविड टीका

वैक्सीन की खोज ही इन सभी तकलीफों का एकमात्र इलाज है। लेकिन अगर हम ने खोज लिया तो भी, दर्दनाक सच ये है कि हम कोविड -19 से पूर्व की दुनिया में वापस नहीं लौट सकेंगे, इसकी बहाली का सफर लंबा है और इस सफर के सहज होने की संभावना भी नहीं है। जब एक वैक्सीन का निर्माण होगा, तो अरबों खुराक बनाने और इसे लोगों तक पहुँचाने में अगले साल काफी ज्यादा समय लगेगा। शुरुआती टीकों को अच्छी तरह से दो शॉट्स की आवश्यकता हो सकती है, और उन्हें उचित तापमान पर रखने के लिएजटिल ठन्डे वातावरण या कोल्ड चेन की आवश्यकता होती है। मेडिकल ग्लास की कमी पड़ सकती है। इन टीकों को ठंडे बक्सों में रख कर दुनिया भर में पहुंचाना अपनेआप में एक चुनौती होगी। ख-ढ- का अनुमान है कि सभी टीकों को वितरित करने के लिए हमें बोईंग 747 के 8,000 विमानों की आवश्यकता होगी!

निश्चित रूप से हमारा जीवन कुछ अलग होगा - कम से कम कुछ समय के लिए तो अवश्य ही। जब हम बाहर ही नहीं निकल सकते, तो हमारे सदस्य बीमार व्यक्तियों की देखभाल किस प्रकार करेंगे? उस बंजर भूमि को हम कैसे देखेंगे जिसे पानी की आवश्यकता है; टेबल और बेंच के बिना खाली पडी कक्षाओं की तरफ हमारा ध्यान कैसे जाएगा? परियोजना स्थलों पर हमारे कैडर सदस्य किस प्रकार जाएंगे? और जब परिसर में नहीं रहेंगे तो एकांत वातावरण में हमारे विद्वान कैसे प्रगति करेंगे?

जो भी नए क्लब बन रहे हैं या पुराने क्लब ख़त्म हो रहे हैं, वे दोनों वास्तविक दुनिया में नहीं बल्कि एक आभासी दुनिया में हो रहे हैं। कोविड के लिए रोटरी फाउंडेशन की प्रतिक्रिया त्वरित और प्रभावशाली रही है। हमने विशेष रूप से कोविद आपदा से लड़ने के लिए 7.2 मिलियन डॉलर के 319 अनुदान प्रदान किये और लगभग 21.7 मिलियन डॉलर के 331 कोविद वैश्विक अनुदान, कुछ सप्ताह में ही 29.6 मिलियन डॉलर का बहिर्वाह हुआ। कई अनुदान तो कुछ दिनों के भीतर ही संसाधित किये गए थे। हमारे स्टाफ ने शानदार काम किया है।

वास्तव में, दुनिया भर से, कोविड महामारी के लिए परोपकार की जो जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली वो अभूतपूर्व है। मई 2020 तक वैश्विक स्तर पर कम से कम 10.3 बिलियन डॉलर का दान किया गया। धन जुटाने के लिए परोपकारी लोगों और संस्थाओं पर निर्भर रोटरी के लिए ये एक अच्छा शगुन है।

चुनौतियां

इसका दूसरा पहलू यह है कि रोटेरियन खुद अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करते हैं। कई रोटेरियन ने नौकरी खो दी है और कुछ ने वायरस के सामने दम भी तोड़ दिया है। हम सभी ने अपने नज़दीकी और प्रियजनों को खोया है। अन्य कई लोगों की आय घट चुकी है। बहुत सारे रोटेरियन के कारोबार में राजस्व की भारी गिरावट देखी गई है और कुछ रोटेरियन तो आवर्ती लागत को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में चिंता का विषय यह है कि क्या हमारी सदस्य संख्या और रोटरी फाउंडेशन में योगदान को भी इसका खामियाज़ा भुगतना पड़ सकता है।

लेकिन इतिहास गवाह है कि रोटेरियन हमेशा से लचीले रहे हैं और अपनेआप को किसी भी परिस्थिति के अनुरूप ढाल लेते हैं ,और वे उन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं जिसके सामने दुसरे घुटने टेक देते हैं। वे दूरदर्शी हैं; एक आदर्शवादी, जो बड़े सपने देखते हैं; और सपने एक बेहतर दुनिया के। हालांकि, टीआरएफ ट्रस्टियों के पास इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में हमारे फाउंडेशन को चलाने की जिम्मेदारी सबसे महत्वपूर्ण है। नेतृत्व अधिक मायने रखता है और सबसे अधिक चुनौती इसे तब मिलती है,जब लोगों को स्वतंत्र खतरों का सामना करना पड़ता है, जब परंपरागत तरीकों से काम करना संभव नहीं होता और चारों तरफ भ्रम, निराशा और चिंता का वातावरण व्याप्त होता है।

संकट के दौरान, नेताओं को कठिन विकल्प ढूंढ़ने चाहिए ताकि इस अल्पावधि में उनके संगठन बचे रहें और लंबे समय तक चल सकें। बहुत ही भारी मन से हमने जो कठोर निर्णय लिए, उनमें से एक यह था कि टीआरएफ ने अपने विश्व कोष से अगले वर्ष के लिए नकद योगदान के लिए मिलने वाले 50 प्रतिशत मैच को समाप्त कर दिया है। समस्या यह है कि हमारे वैश्विक अनुदान इतने लोकप्रिय हो गए हैं कि हम खुद अपनी सफलता के शिकार हो गए हैं। उदाहरण के लिए, 2013-14 में 47 मिलियन डॉलर के 868 अनुदान थे; 2018-19 में 86 मिलियन के 1403 अनुदान थे। इसलिए कुल योगदान में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि वैश्विक अनुदान में 80 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

जुलाई और अगस्त के महीनों में जीजी पर हमारा खर्च 48 मिलियन डॉलर था, जबकि पिछले वर्ष इन्हीं महीनों में जीजी पर 16 मिलियन और 19 मिलियन डॉलर रहा था। इस वर्ष इन दो महीनों में हमने 715 परियोजनाओं को वित्त पोषित किया हैं, जबकि पिछले वर्ष समान अवधि में यह संख्या 271 थी। हम आश्चर्यजनक रूप से सफल रहे हैं!

लेकिन इसका नकारात्मक पहलू भी है। जैसा कि आप सब को पता है कि बैंक से पैसा निकालने के लिए बैंक में पैसा डालना होगा! हम इस बिंदु पर पहुंच गए हैं कि जो पैसा रोटेरियन डाल रहे हैं, वह उन पैसों के अनुपात में नहीं है जितना फंड हम प्रोजेक्ट्स को दे रहे हैं। आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि लगभग 20 प्रतिशत क्लब हमारे वार्षिक कोष में योगदान नहीं करते।

मैं आपके क्लब के सदस्य जे बी कामदार की प्रशंसा करता हूँ जो हमारे वार्षिक कोष में योगदान बढ़ाने के लिए बहुत बढ़िया काम कर रहे हैं। एनुअल फंड के ये समर्थक वो लोग हैं जिनके पास वो दृष्टिकोण है जो दूसरों के पास नहीं है - समस्याएं, संभावनाएं, आशा और उद्देश्य।

वार्षिक निधि के अलावा जो हमारे विश्व कोष को संचालित करता है, आप जानते हैं कि हमें पोलियो के लिए गेट्स मैच का लाभ उठाने के लिए पर्याप्त धन जुटाना होगा। जब आपके डीडीएफ का 1 डॉलर विश्व निधि के 1 डॉलर से मेल खाता है और उन 2 डॉलर को कुल 6 डॉलर बनाने के लिए गेट्स फाउंडेशन उसे दोगुना करता है, तो व्यावसायिक रूप से बात समझ में आती है! और पोलियो की बात करें, जब समय आएगा तो आप कोविड टीके के वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

वास्तव में, लंदन *Times* ने पिछले सप्ताह ही ये टिप्पणी की थी कि साथ मिल कर हम रोटरी इंटरनेशनल और अन्य संस्थाओं द्वारा सफल पोलियो टीकाकरण में प्राप्त अनुभव की मदद से हम कोरोनो वायरस सहित अन्य कई घातक बीमारियों को इतिहास की किताबों में पीछे धकेल सकते हैं और लाखों की जान बचा सकते हैं। पोलियो उन्मूलन के दौरान खड़े किये गए ढाँचे का इस्तेमाल कोविड -19 के प्रसार को रोकने में और प्रतिक्रिया का जवाब देने के लिए कई देशों में किया जा रहा है, जिस प्रकार पूर्व में इबोला, पीले बुखार और एवियन फ्लू के प्रकोप से लड़ने के लिए किया गया था।

तो आप देख रहे हैं कि हम जिस व्यवसाय में हैं उसका स्वरूप नहीं बदला हैं। संकट की इस घड़ी में अभी भी हम लोगों तक पहुंच रहे हैं, बस हमारी कार्यप्रणाली को बदलने की जरूरत है। परियोजना की रूप रेखा बनाने से ले कर उसे पूर्ण करने तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया को बदलने की ज़रुरत है।

जिस तरह से हम संचार और संवाद करते हैं, उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है।

मैं आपसे आशावान होने के लिए कहता हूँ, और पुनः याद दिलाता हूं, मत भूलिए कि हमारा मूल्यांकन इस पैमाने पर किया जाएगा कि हमने वर्तमान विपत्ति और इस अनिश्चितता को कितनी क्षमता और कुशलतापूर्वक नियंत्रित किया है। हमारे सदस्यों को प्रेरक नेतृत्व प्रदान करने की जिम्मेदारी हमारी है, फाउंडेशन के लिए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में, जब जीवन रूपी कोहरे में असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाए ,उस समय यथार्थ में फाउंडेशन की सहायता कर के दिखाना है।

इसके अलावा, जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी द्वारा दिए गए आंकड़ों को साबित भी करना है जिस के अनुसार रोटेरियनों द्वारा किए गए सेवा कार्यों में खर्च हुए समय का मूल्य 850 मिलियन डॉलर प्रति वर्ष था। भगवान पर भरोसा रखते हुए अगर हम साहसपूर्वक दृढ़ता से कदम बढ़ाएंगे तो अवश्य सफल होंगे।

रोटरी क्लब मद्रास द्वारा आयोजित एक वेबिनार में ट्रस्टी चेयर द्वारा दिए गए भाषण के अंश।

Rotary PEOPLE OF ACTION

सौर लालटेन ने चरवाहों के टेंट को रौशन किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी, रो ई मंडल 3131, ने पुणे के सासवड़ क्षेत्र के पहाड़ी घास के मैदानों में घूमने वाले चरवाहों के घुमंतू समुदाय मधनगरफ के टेंट को रौशन करने के लिए सौर लालटेन प्रदान किया।

वे मूल रूप से दक्षिण महाराष्ट्र के हैं और मानसून के दौरान चार महीने तक यहाँ रहते हैं, ताकि वे अपने मवेशियों को घास चरा सकें। वे इसके बाद गर्मियों के दौरान कोंकण क्षेत्र में चले जाते हैं। स्थानीय जमींदारों ने मवेशियों के गोबर से प्राकृतिक रूप से जैविक खाद पाने के उद्देश्य से मवेशियों के लिए मुफ्त चराई और धनगरों को शिविर लगाने की अनुमति दी थी। भूमि पर उगी घास-फूस मवेशियों के लिए चारे का काम करती हैं।

प्लास्टिक की चादरें उनकी और उनके थोड़े-से सामान की सुरक्षा के लिए टेंट का काम करती हैं। ''वे अपने इन घरों को रोशन करने के लिए तेल के दीयों का इस्तेमाल कर रहे थे। वे दूध और मवेशियों की अन्य उपज बेचकर जीवन यापन करते थे और तेल का खर्च उनकी जेब में भारी छेद कर रहा था,'' क्लब के सदस्य संदेश सावंत कहते हैं। ये सौर लालटेन उनके ईंधन की लागत को बचाएँगे और उन्हें भेड़ियों, लकड़बग्घों और सरीसृप जैसे जंगली जानवरों से सुरक्षित रखेंगे।

लगभग 100 युवा स्वयंसेवकों द्वारा संचालित मग्रासलैंड ट्रस्टफ ने क्लब को धनगर की इस तत्काल आवश्यकता के बारे में अवगत कराया था और लालटेन वितरित करने में मदद भी की। उन्होंने चरवाहों को सिखाया कि इन लालटेन को कैसे संचालित किया जाए। अगले चरण में क्लब ने पुणे के मोरगाँव के पास स्थित एक अन्य खानाबदोश जनजाति मपारधीफ को सौर-लालटेन प्रदान करने की योजना बनाई है।■

ADVT.

Rotary
District : 2982
Rotary Opens Opportunities
TEAM ACHIEVERS
Rotary
வர்ணஜாலம்
ரோட்டரி மாவட்ட மாநாடு 2020 – 2021
ரோட்டரி மாவட்டம் – 2982
மே 1 – 2
ஐடா ஸ்கட்டர் அரங்கம் (வேலம்மாள் மருத்துவமனை வளாகம்)
அனுப்பானடி, மதுரை – தூத்துக்குடி ரிங்ரோடு,
மதுரை
K.S.வெங்கடேசன்
மாவட்ட ஆளுநர் 2020-2021
HP : 98432 36679
V.சிவகுமார்
தலைவர்– மாவட்ட மாநாடு
HP : 99949 69012

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब बॉम्बे दो वैश्विक अनुदानों की सहायता से शिशुओं के दिल सुधारता है

रशीदा भगत

रोटरी मंडल 3141 का रोटरी क्लब बॉम्बे अपनी बाल हृदय शल्य चिकित्सा परियोजना की समर्पित टीम के सहयोग और दो वैश्विक अनुदानों की मदद से शिशुओं के दिलों की मरम्मत कर रहा है और यह आंकड़ा 100 को पार कर गया है और 103 बच्चों की हृदय शल्य चिकित्सा की जा चुकी है।

''हमारे क्लब ने 2018-19 के दौरान रोटरी क्लब बॉम्बे पियर के साथ 175,285 डॉलर (लगभग ₹1.26 करोड़) की GG के लिए आवेदन किया था। अब तक, पहले अनुदान के माध्यम से हम 97 सर्जरी कर चुके हैं और दूसरी के माध्यम से छह सर्जरी। इस परियोजना के लिए हम पहले ही ₹1 करोड़ दे चुके हैं या प्रतिबद्ध हो चुके हैं। इस वर्ष में ही 25 सर्जरी हो चुकी हैं और आने वाले महीनों में 25 और सर्जरी पूरी करने की उम्मीद हैं के जिस के बाद ये अनुदान पूर्ण हो जाएगा।'' क्लब के पूर्व अध्यक्ष विजय जटिया का कहना था।

उन्होंने कहा कि पिछले साल, ''हमारे क्लब के कई सदस्यों ने बच्चों के दिल की सर्जरी प्रायोजित करने के लिए उदारता से दान दिया है, हमने टीआरएफ में इससे भी बड़ी जीजी - 509 डॉलर के लिए आवेदन किया है, 255,780 डॉलर, ₹1.9 करोड़ के बराबर, पहली किश्त प्राप्त हो चुकी है। पहली किश्त का उपयोग करने पर ₹1.9 करोड़ की बकाया राशि भी मिल जाएगी।''

अलिस्फा सय्यद, एक लाभार्थी अपनी माँ के साथ।

जैसे ही कोरोना महामारी ने भारत में प्रवेश किया, इस कार्यक्रम में ठहराव आ गया था क्योंकि कोविड-19 के डर और सरकार के सख्त नियमों के कारण, स्वास्थ्य शिविरों में भाग लेने और अपने बच्चों को अस्पतालों में भर्ती करने के लिए परिजन राजी नहीं थे। हालांकि, सरकारी मानदंडों में छूट के साथ, अब यह बदल रहा है और अब अपने बच्चों का इलाज करवाने के लिए परिजन अस्पतालों पर भरोसा कर रहे हैं, पर्याप्त सावधानी बरत रहे हैं और सुरक्षा मानदंडों का पालन कर रहे हैं, इस परियोजना में शामिल क्लब की एक सदस्य स्वाति जगोदिया ने कहा। हाल ही में, छह बच्चों के दिल की सर्जरी सफलतापूर्वक की गई और रोगियों को छुट्टी दे दी गई है।

रोटरी क्लब बॉम्बे की बाल हृदय शल्य चिकित्सा समिति के चेयरपर्सन जैमिन झावेरी का कहना है कि यह क्लब मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल, एसआरसीसी अस्पताल और रोटरी हरिया अस्पताल, वापी, गुजरात जैसे अस्पतालों की साझेदारी में, गांवों में स्वास्थ्य शिविर आयोजित कर लाभार्थियों की पहचान करता है। इन शिविरों में एक कार्डियोलॉजिस्ट और कुछ डॉक्टर होते हैं और दिल के रोगों से संबंधित शिकायत के लिए यहां आने वाले बच्चों का परीक्षण किया जाता है, जैसे सांस फूलना, दिल में सरसराहट या धकधकी।

ऑपरेशन की लागत के बारे में, वे कहते हैं कि इन अस्पतालों में रोटरी के लिए विशेष दर हैं। ''इसके अलावा, विभिन्न अस्पतालों में भी

अलग-अलग श्रेणियां हैं और हम माता-पिता के वित्तीय बोझ को काफी कम करने केलिए प्रतिबद्ध है। जो लोग पांच या 10 फीसदी पैसे दे सकते हैं, देते हैं और बाकी का ध्यान ''हम रखते हैं। लेकिन जो बेहद गरीब हैं और कुछ भी नहीं दे सकते, उनके बच्चे का इलाज पूरी तरह से मुफ्त होता है।''

औसतन, विशेष दरों पर एक दिल की सर्जरी में लगभग ₹1.5 -1.75 लाख खर्च होता है। कई सरकारी योजनाएं हैं जो निर्धन वर्गों के इलाज के लिए वित्तीय छूट प्रदान करती हैं, और ये अस्पताल आर्थिक रूप से कमजोर रोगियों के लिए उन योजनाओं से धन प्राप्त करने में मदद करते हैं।

मैंने फोन पर 4 वर्षीय साहिल के पिता चव्हाण से बात की, साहिल एक जन्मजात सामान्य हृदय दोष के साथ पैदा हुआ था, जिसे एवीएसडी (एट्रियोवेंट्रिकुलर सेप्टल डिफेक्ट) के रूप में जाना जाता है, जिसे आमतौर पर दिल में छेद के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप बहुत अधिक रक्त बहता है या फेफड़ों में जमा हो जाता है और इस प्रकार हृदय का एक तरफ का भाग काम करता है। यदि इलाज नहीं किया जाता तो अंततः हृदय का दाहिना भाग बढ़ जाता है और कमजोर हो जाता है। फेफड़े में रक्तचाप भी बढ़ सकता है, जिस वजह से फुफ्फुसीय उच्च रक्तचाप हो सकता है।

साहिल के पिता चौहान एक दिहाड़ी मजदूर हैं, जो महाराष्ट्र के यवतमाल जिले में खेतों से गन्ने की कटाई करते थे। उनका गाँव मुंबई से लगभग 750 किमी दूर है, और साहिल की हालत देख कर चौहान और उनकी पत्नी गीता वास्तव में दुखी थे। वह ''चल तो सकता था लेकिन जब वह खेलना या दौड़ना शुरू करता, तो शिथिल पड़ जाता था और उसके दिल की धड़कन बहुत तेज बढ़ जाती, जिससे हम भयभीत हो जाते थे।''

> चल तो सकता था लेकिन जब वह खेलना या दौड़ना शुरू करता, तो शिथिल पड़ जाता था और उसके दिल की धड़कन बहुत तेज बढ़ जाती, जिससे हम भयभीत हो जाते थे।
>
> **चौहान**
> साहिल, एक लाभार्थी के पिता

स्वप्निल पवार अपने बच्चे शिवन्या के साथ।

रोज़ाना मुश्किल से वो ₹200-300 कमाता था, और बच्चे की ओपन हार्ट सर्जरी का खर्च उठाने की तो सोच भी नहीं सकता था, कोई तरीका नहीं था। उनका आठ साल का एक बड़ा बेटा भी है, और ''एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ता है,'' चव्हाण ने गर्व से बताया।

रोटरी क्लब बॉम्बे और उनके बाल हृदय शल्य चिकित्सा परियोजना को मदद के लिए धन्यवाद, साहिल के दिल की मरम्मत 2019 में एक ओपन हार्ट सर्जरी के माध्यम से की गई। बच्चा अब बिलकुल ठीक है, और ''उसे कोई तकलीफ नहीं है।''

लेकिन उन लोगों को समझने के लिए, जिन्हें रोटरी से मदद मिलती है, हम चौहान के जीवन की सच्चाई की तरफ मुड़ते हैं। मार्च 2020 में तालाबंदी की घोषणा के बाद से गन्ने के खेतों में उसे कोई काम नहीं मिला।

लेकिन वो और उसका परिवार, कृषि परिवारों में, पूरे वर्ष का खाद्यान एक साथ खरीद कर रख लेने की परंपरा की वजह से भुखमरी से बच गए, चव्हाण ने भी साल भर के लिए तीन क्विंटल गेहूं, ज्वार और दालें खरीद रखी थीं। तो ''मैडम, हम उसी से अपना गुजारा कर रहे हैं।''

और चावल?

''नहीं, हम चावल नहीं खाते,'' उसने उत्तर दिया।

और वह सब्ज़ी (सब्जियां) की व्यवस्था कैसे करता है?

वह चौंकाने वाला जवाब देता है : ''अपने जीवन में हमने सब्ज़ी कभी भी नहीं खरीदी। पैसे कहाँ है इसके लिए?''

इसके बावजूद उसका बड़ा बेटा, सरकारी स्कूल में नहीं जाता (''उधर पढाई अच्छी नहीं है'') बल्कि एक अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में जाता है। स्कूल आने जाने के लिए ऑटो है, जिसके लिए वह हर महीने ₹500 देता है। उसकी मासिक फीस के लिए हर महिने ₹500 जाते हैं। उसकी शिक्षा पर सालाना कुल खरचा ₹25,000 है।''

कपड़ों की सिलाई से मिलने वाले रुपये से गीता भी पारिवारिक आय में योगदान करती है। लेकिन

मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में डॉक्टरों के साथ रोटेरियन। DGN संदीप अग्रवाल (बाएं से दूसरे), पूर्व अध्यक्ष विजय जटिया (बाएं से चौथे) और IPP प्रीति मेहता (केंद्र) भी चित्र में शामिल हैं।

अब तो वो कमाई भी कम हो गई है, और एक हफ्ते में मुश्किल से ''वो ₹300-400 कमा पाती है,'' वह कहता हैं।

इससे हमें मालूम चलता है कि हमारे समाज में गरीब तबके के लोग भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को कितना अधिक महत्त्व देते हैं।

एक छोटी बच्ची शिवन्या पवार का जीवन भी इस परियोजना ने बचाया है, जो एक जन्मजात हृदय दोष के साथ पैदा हुई थीं, जिसका पता उसके माता-पिता को जन्म के एक महीने बाद चला था, क्योंकि ''वह सांस लेने के लिए संघर्ष किया करती थी और हर समय पसीना आता रहता था।'' उसके पिता स्वप्निल पवार ने रोटरी क्लब बॉम्बे की मदद से वीएसडी (वेंट्रिकुलर सेप्टल डिफेक्ट) छेद बंद करवाया था, तब वो सिर्फ नौ महीने की थी। आम तौर पर हृदय की झिल्ली में एक छेद होता है दिल के निचले दो कक्षों (निलय) को विभाजित करती है पर जन्म लेने से पूर्व ये छेद स्वतः ही बंद हो जाता है। अगर ऐसा नहीं होता है, तो हृदय के बाएं कक्ष में ऑक्सीजन युक्त रक्त दाएं कक्ष में प्रवेश कर ऑक्सीजन-रहित रक्त के साथ मिल सकता है जिससे बच्चे को बहुत सी तकलीफें पैदा हो सकती हैं।

4-वर्षीय साहिल चौहान।

एक दिहाड़ी मजदूर होने के कारण पवार अपने बच्चे का इलाज नहीं करवा सकता था। उसका परिवार महाराष्ट्र के सांगली जिले के एक गाँव में रहता है ''और मुंबई पहुँचने में मुझे बस से आठ घंटे से अधिक का समय लगता है'' उन्होंने कहा।

उनके सौभाग्य से, इस बाल चिकित्सा सर्जरी परियोजना के तहत, अक्टूबर 2019 में कोकिलाबेन अंबानी अस्पताल में उनके बच्चे का ऑपरेशन किया गया और कुछ समय के लिए वह स्वस्थ थी।

लेकिन जब फोन पर मैंने पवार से बात की तो अपनी छोटी बेटी के बारे में उसे चिंतित पाया। वो एक प्रवासी मजदूर है जो शुरू से आंध्र प्रदेश में काम करता रहा है। लॉकडाउन ने उसे घर भेज दिया क्योंकि ''मेरे पास कोई काम नहीं था।'' लेकिन अब वह आंध्र प्रदेश में दुकान पर वापस लौट गया है जहां उसे मासिक 7,000 रुपये मिलते हैं, पर उसने बताया, हालांकि सर्जरी के बाद शिवन्या ठीक थी, लेकिन ''पिछले कुछ हफ्तों से उसकी हालत ठीक नहीं थी। पहले हमने उसे अपने घर के पास ही एक स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया था, उसका इलाज हुआ और वो ठीक हो गई। लेकिन कल, मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि उसे फिर से बुखार आ गया है और जुकाम भी हो गया है - और मैं बहुत चिंतित हूँ - पहले भी उसे निमोनिया हुआ था। कल वे उसे मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल ले जा रहे हैं।''

वह भी ट्रेन से मुंबई जाने की योजना बना रहा है, ''लेकिन इसके लिए मुझे अनुमति लेनी पड़ी थी। कल मैं ट्रेन से जाऊंगा, मुंबई पहुंचने में मुझे 30 घंटे लगेंगे,'' उस व्यथित आदमी का कहना है। इसमें कोई संशय नहीं कि रोटरी क्लब बॉम्बे की समर्पित परियोजना टीम हर संभव प्रयास करेगी कि बच्ची ठीक हो कर घर लौट जाए।

इस बीच यह मेगा प्रोजेक्ट जारी है। जवेरी कहते हैं, ''हमने मुंबई और उसके आसपास की कई जगहों पर कुछ शिविर लगाने की योजना बनाई है ताकि हृदय रोग से पीड़ित अन्य और बच्चों की पहचान की जा सके।''

अगर कोई भी व्यक्ति जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित किसी गरीब और जरूरतमंद बच्चे की सिफारिश करना चाहता है, ''तो वह मुझसे या स्वाति से संपर्क कर सकता है,'' वे कहते हैं।■

बेंगलुरू में दो क्लबों ने 14 डायलिसिस यूनिट दान में दिए

टीम रोटरी न्यूज़

कोविड लॉकडाउन के दौरान, बेंगलुरू में दो रोटरी क्लबों ने रंगाडोर मेमोरियल अस्पताल के परिसर में नवनिर्मित ब्लॉक, बैंगलौर किडनी फाउंडेशन (बीकेएफ) को 14 डायलिसिस मशीनों को दान करने के लिए हाथ मिलाया। ''पीडीजी समीर हरिआनी 14 मार्च को नई सुविधा का उद्घाटन करने ही वाले थे लेकिन महामारी से जुड़े प्रतिबंधों की वजह से हमने उद्घाटन समाहरोह को बाद की तारीख हेतु स्थगित कर दिया। सभी मशीनें किडनी रोगियों के लिए पूरी तरह से चालू हैं,'' रोटरी बैंगलोर नॉर्थवेस्ट, रो ई मंडल 3190 ग्लोबल ग्रांट अध्यक्ष यू बी शंकर ने बताया। रो ई मंडल 5440, कोलोरोडो, अमेरिका के फोर्ट कॉलिन्स ब्रेकफास्ट रोटरी क्लब के सहयोग से ₹9.1 लाख की लागत वाले जी जी प्रोजेक्ट को पूरा किया गया।

बीकेएफ लंबे समय से बेंगलुरू के कई अस्पतालों में किडनी फेल्योर वाले रोगियों के लिए डायलिसिस प्रदान कर रहा है और बीकेएफ के संस्थापक और अध्यक्ष डॉ पी श्रीराम जो रोटरी साउथवेस्ट के एक रोटेरियन हैं, उन्होंने इस प्रोजेक्ट में दोनों क्लबों के बीच साझेदारी को मजबूत किया है। नए बीकेएफ ब्लॉक में पहले से ही 50 मशीनें थीं ''लेकिन उन्हें कुछ और मशीनों की आवश्यकता थी, और हमने 14 मशीनें प्रदान की हैं,'' शंकर ने कहा। क्लब का लक्ष्य अगले दो वर्षों में 100 मशीनें उपलब्ध कराने का है क्योंकि किडनी रोगियों से मशीनों की मांग लगातार बढ़ रही है।

सम्पन्न मरीज एक सत्र का ₹1,500-2,000 का भुगतान करते हैं जबकि निम्न-आय वाले परिवारों से ₹600 लिए जाते हैं और बीपीएल रोगियों के लिए डायलिसिस नि:शुल्क है और उनको भोजन और अनाज भी दिया जाता है।

''पिछले दो दशकों में हमने अपने ग्लोबल पार्टनर, रोटरी क्लब फोर्ट कॉलिन्स ब्रेकफास्ट के साथ 14 जी जी परियोजनाओं को पूरा किया है,'' शंकर ने बताया। के टी सुरेश, आईपीपी, रोटरी नॉर्थवेस्ट ने कहा कि बसावनगुडी का स्थानीय समुदाय इस डायलिसिस केंद्र से बहुत ही लाभान्वित हुआ है, खासकर कोविड प्रतिबंधों के दौरान।■

अमेरिका के फोर्ट कॉलिन्स ब्रेकफास्ट रोटरी क्लब के सहयोग से जी जी प्रोजेक्ट को पूरा किया गया।

यू बी शंकर
रोटरी क्लब बैंगलोर नॉर्थवेस्ट
मंडल 3190 के ग्लोबल ग्राट अध्यक्ष।

पीडीजी डॉ तूनजी फनशो

विश्व पोलियो दिवस की एक प्रस्तावना

टीम रोटरी न्यूज़

WGM की संस्थापक सुसैन रे (दाएं)।

10 देशों के 12 रोटरी क्लबों से निर्मित सिनर्जी रोटरी फ्रेंडशिप एलायंस ने अक्टूबर में रोटरी क्लब अंपारा, रोई मंडल 3220, श्रीलंका द्वारा आयोजित किए गए एक आभासी कार्यक्रम, *प्रैलूड टू वर्ल्ड पोलियो डे* पर रोटरी की नाइजीरिया नैशनल पोलियोप्लस समिति के अध्यक्ष डॉ तुनजी फुनशों को अफ्रीकी क्षेत्र से पोलियो उन्मूलन में उनके महत्वपूर्ण नेतृत्व के लिए सम्मानित किया।

पीडीजी (रो ई मंडल 9110) डॉ फुनशो, एक हृदयरोग विशेषज्ञ और लंदन के रॉयल कॉलेज ऑफ़ फिजिशियन के एक सदस्य, को हाल ही में 2020 के लिए *Time* के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक के रूप में मान्यता दी गई। ''यह पुरस्कार रोटरी के लिए है। रोटरी इस मिशन पर 35 वर्षों से है और संयोग से उसी वर्ष मैं रोटरी में शामिल हुआ था। और वास्तव में अपने पेशे के कारण मैं पोलियो उन्मूलन से जुड़ा था,'' ऑनलाइन बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा।

1996 में जब रोटरी की अनुशंसा पर पूर्व दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला द्वारा *किक पोलियो आउट ऑफ़ अफ्रीका* पहल की शुरुआत की गई, तब अफ्रीका में हर साल इस खतरनाक पोलियो वायरस के 70,000 मामले देखे जा रहे थे। इस पहल ने अफ्रीकी देशों को नियमित रूप से बड़े पैमाने पर जन अभियान चलाने हेतु प्रेरित किया, घर-घर जाकर यह सुनिश्चित किया जाने लगा कि प्रत्येक बच्चे को मौखिक पोलियो टीकाकरण के माध्यम से सुरक्षित किया जाए। नाइजीरिया इस साल अगस्त में थकज द्वारा पोलियो मुक्त घोषित किया जाने वाला अंतिम अफ्रीकी देश था।

सिनर्जी रोटरी फ्रेंडशिप एलायंस के बारे में

सिनर्जी एशिया के 10 देशों के 12 रोटरी क्लबों का रोटरी मैत्री गठबंधन है। सिनर्जी का उद्देश्य है:

- विभिन्न राष्ट्रों के क्लबों के बीच मित्रता को मजबूत करना
- एक पैमाने पर संयुक्त बैठकें आयोजित करना जो एक एकल क्लब या देश नहीं कर सकता
- अंतर्राष्ट्रीय विनिमय कार्यक्रमों और वैश्विक अनुदानों की प्रगति
- रोटरी की अन्तर्राष्ट्रीयता की शक्ति का उपयोग करना।

Participating clubs:

RI District 3201/3202
RC Kalamaserry
RC Cochin Harbour
RC Udumalpet Central, India

RI District 3220
RC Ampara, Sri Lanka

RI District 3271
RC Karachi, Pakistan

RI District 3272
RC Jalalabad, Afghanistan

RI District 3281
RC Dhaka Mavericks
Bangladesh

RI District 3292
RC Thimpu, Bhutan

RI District 3292
RC Dhulikhel, Nepal

RI District 3300
RC Melawati, Malaysia

RI District 3420
RC Semarang Kunthi
Indonesia

RI District 3790
RC Baguio Summer
Capital, Philippines

''यदि हम अफ्रीका में ऐसा कर सकते है, तो हम दुनिया भर में भी ऐसा कर सकते है। यदि हम पोलियो के साथ ऐसा कर सकते है, तो हम ऐसा किसी भी अन्य प्रकार के निदान के लिए कर सकते है,'' डॉ फुनशो ने कहा।

बैठक में बोलते हुए, टीआरएफ न्यासी अजीज मेमन ने कहा कि नाइजीरिया, पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे देश कोरोनोवायरस के प्रसार की रोकथाम करने के लिए रोटरी के मौजूदा पोलियोप्लस बुनियादी ढांचे का लाभ उठा रहे है। ''पोलियो और कोविड -19, दोनों की लड़ाई को जीतना अभी बाकी है, लेकिन पोलियो के अनुभव ने रोटरी को अधिक समन्वित गतिविधियों के साथ संकटों से निपटने की तत्परता प्रदान की है,'' उन्होंने आगे कहा।

टीआरएफ ट्रस्टी अज़ीज़ मेमन एक बच्चे को पोलियो ड्रॉप्स देते हुए।

पोलियो उन्मूलन के लिए एक निधीयन पहल, वर्ल्डस ग्रेटेस्ट मील (डब्ल्यूजीएम), की संस्थापक सुसेन रे ने कहा, ''कम से कम दो रात्रिभोज और 10 डॉलर के न्यूनतम उपहार से लेकर, जागरूकता फैलाने हेतु एक बैनर के साथ एक विमान से बाहर छलांग लगाने, कॉफी और बिस्कुट के साथ जंगली झाड़ी में भटकने और फिर उदारतापूर्वक ऑनलाइन दान करने तक, कुछ भी बहुत छोटा या बड़ा नहीं है!'' खुद पोलियो से बचने वाली सुज़ैन, रोटेरियनों को पोलियो के लिए जागरूकता फैलाने और धन जुटाने के लिए विभिन्न डब्ल्यूजीएम कार्यक्रम आयोजित करने हेतु प्रेरित कर रही है, और उनके प्रयासों ने अब तक 7 मिलियन डॉलर जुटाने में मदद की है, और उतनी ही राशि का मिलान बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा किया गया है।

इस आभासी कार्यक्रम ने स्विट्ज़रलैंड, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और ब्रुनेई के 200 से अधिक प्रतिभागियों को आकर्षित किया। INPPC के अध्यक्ष दीपक कपूर, अफगानिस्तान पोलियोप्लस के अध्यक्ष मोहम्मद इशाक, रो ई मंडल 3220 के डीजी अजीत वीरसांगे और डीजीई सिंडी बख्तियार ने इस बैठक में भाग लिया। ■

रैलियां, जागरूकता अभियान विश्व पोलियो दिवस को चिह्नित करते हैं

किरण ज़ेहरा

बाएं से: *A G अंकुर गर्ग और मंडल 3011 के सचिव मोहित आनंद भाटिया रोटरी क्लब दिल्ली रीजेंसी नेक्स्ट के अध्यक्ष आचार्य खन्ना से पोलियो फंड के लिए चेक स्वीकार करते हुए।*

विश्व पोलियो दिवस पर, 136 देशों के 4,000 से अधिक रोटरी क्लबों ने दुनिया भर से पोलियो को जड़ से खत्म करने के लिए जश्न मनाने और धन जुटाने के लिए लगभग 6,000 आयोजनों की मेजबानी की। INPPC अध्यक्ष पीडीजी दीपक कपूर और डीजी संजीव राय मेहरा ने नई दिल्ली में रो ई मंडल 3011 द्वारा आयोजित *राइड टू एंड पोलियो* साइकिल रैली की शुरुआत की।

कोविड के प्रतिबंधों के बावजूद, रोटेरियनों से एंड पोलियो रैली के लिए जबर्दस्त प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। हमें 500 से अधिक पंजीकरण प्राप्त हुए, लेकिन कोविड के प्रतिबंधों के कारण हमें प्रतिभागियों की संख्या केवल 125 तक ही सीमित करनी पड़ी। मंडल के विभिन्न क्लबों के अतिरिक्त 100 रोटेरियन साइकिल चालकों का उत्साह वर्धन करने के लिए रैली की शुरुआत में एवं विभिन्न स्टॉपों पर मौजूद थे। प्रत्येक स्टॉप पर, इस क्षेत्र के क्लबों ने आगे आकर पोलियो कोष के लिए रो ई मंडल 3011 के पास कुल 10,000 डॉलर की कीमत के चेक जमा किए। इंडिया गेट, नई दिल्ली पर समाप्त हुई इस 30 किमी की रैली में साइकिल चालक एंड पोलियो नाउ की टी-शर्ट और टोपी पहने देखे गए।

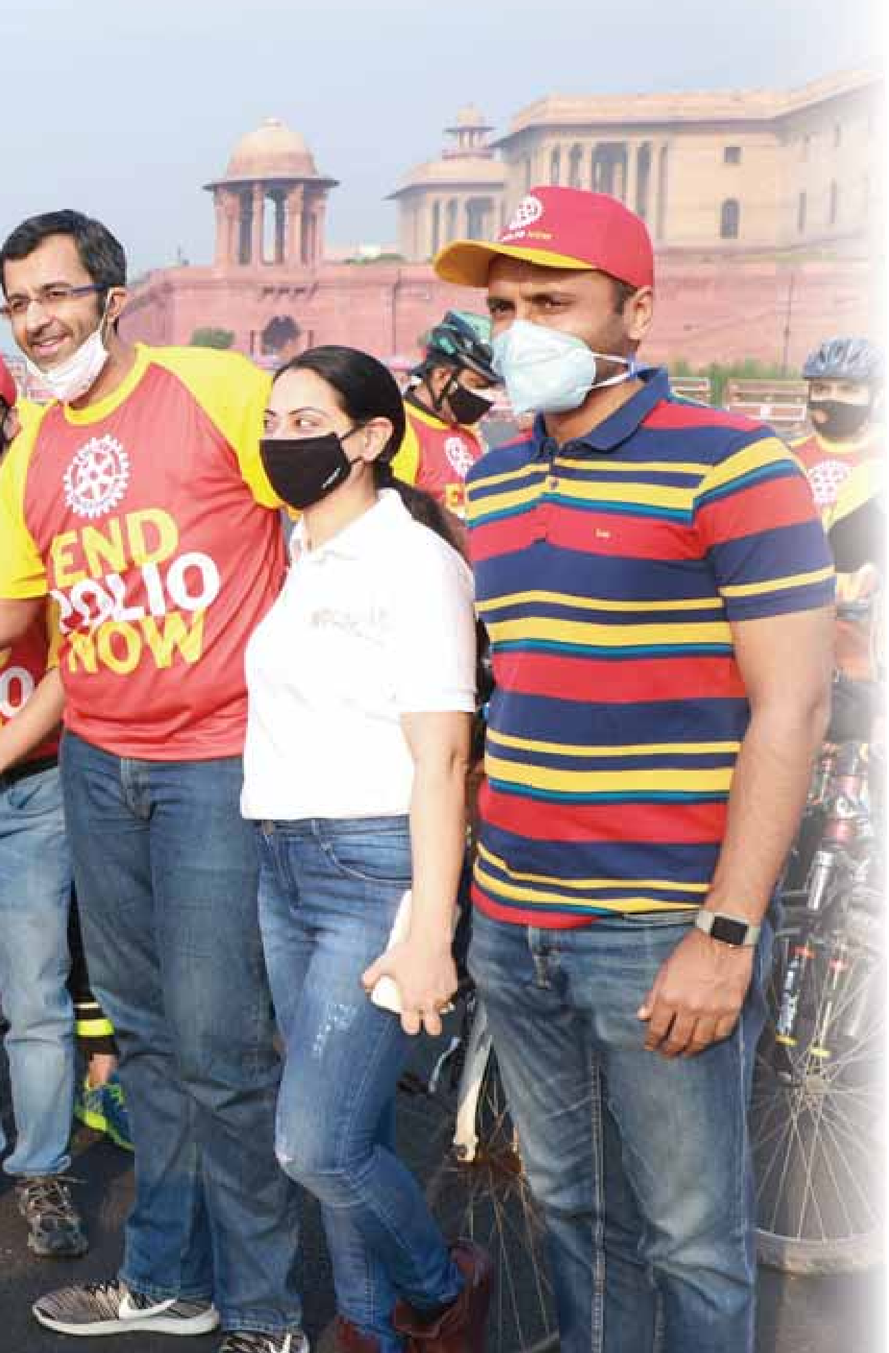

अफ्रीका का पोलियो मुक्त घोषित किया जाना एक बड़ी उपलब्धि है जो रोटरी और इसके वैश्विक साझेदारों के समर्पण और दृढ़ता से ही संभव हो पाई है। इस साल हम एक पोलियो मुक्त अफ्रीका का जश्न मनाते है, और जल्द ही दुनिया को पोलियो मुक्त बनाने की उम्मीद करते है।

एम पवन कुमार
अध्यक्ष, रोटरी क्लब काकीनाडा,
रो ई मंडल 3020

सभा को संबोधित करते हुए, संजीव मेहरा ने कहा, भारत पिछले दस वर्षों से पोलियो मुक्त है। लेकिन हमें सतर्क रहना होगा और देश को पोलियो मुक्त रखने के बारे में जागरूकता फैलानी होगी क्योंकि हमारे दो पड़ोसी देश - पाकिस्तान और अफगानिस्तान - अभी भी पोलियो महामारी से ग्रस्त है इसलिए संक्रमण का खतरा हमेशा बना रहेगा। हमें सभी पोलियो एनआईडीयों में उत्साह के साथ भाग लेना चाहिए और पांच साल से कम उम्र के सभी बच्चों को जीवनरक्षक पोलियो की दो बूंद पिलाने में मदद करनी चाहिए।

तीन साल तक पोलियो का एक भी मामला सामने न आने के कारण 2014 में, थकज द्वारा भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया गया और अब अगस्त 2020 में अफ्रीका को यह दर्जा प्राप्त हुआ है। ''अफ्रीका का पोलियो मुक्त घोषित किया जाना एक बड़ी उपलब्धि है जो रोटरी और इसके वैश्विक साझेदारों के समर्पण और दृढ़ता से ही संभव हो पाई है। इस साल हम एक पोलियो मुक्त अफ्रीका का जश्न मनाते है, और जल्द ही दुनिया को पोलियो मुक्त बनाने की उम्मीद करते है,'' **रोटरी क्लब काकीनाडा**, रो ई मंडल 3020 के अध्यक्ष, पवन कुमार एम ने कहा। उनके क्लब ने विश्व पोलियो दिवस को चिह्नित करने के लिए एक कार रैली का आयोजन किया। रोटेरियनों ने काकीनाडा के पास स्थित एक गांव, बोड्डू चिन्ना वेंकटायपलेम का दौरा किया, और बच्चों के लिए प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने वाली दवाओं

‘घर पर रहें, सुरक्षित रहें’ पर जोर देने वाले सुरक्षा मानकों से साथ हमारे लिए यह तय करना मुश्किल हो गया था कि हम विश्व पोलियो दिवस पर कौन सी प्रभावकारी गतिविधि करें।

अश्विनी किंजर
रोटरी क्लब बेंगलोर ब्रिगेडस्
रो ई मंडल 3190

ईस्ट गोदावरी के एसपी अदनान नईम आसमी ने रोटरी क्लब काकीनाडा, रो ई मंडल 3020 द्वारा आयोजित। कार रैली को हरी झंडी दिखाई।

नीचे: रोटरी क्लब देहरादून, रो ई मंडल 3080, ने स्थानीय विक्रेताओं को विशाल छतरियों का दान किया जिस पर रोटरी व्हील और एंड पोलियो नाउ के लोगो छपे हुए थे।

के वितरण के बाद एक पोलियो जागरूकता कार्यक्रम चलाया। यह जागरूकता कार्यक्रम पोलियो प्रमुख डॉ शहजाद अली द्वारा प्रायोजित किया गया था जिन्होंने यह कहकर अपनी निराशा व्यक्त की कि इस महामारी ने टीकाकरण के प्रयासों को रोकने पर मजबूर किया। ‘‘इस समय जो हम कर सकते है वह यह है कि जागरूकता फैलाएं और बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद करें।’’

समुदाय में एक प्रभाव लाने और पोलियो को लेकर जागरूकता पैदा करने के लिए, **रोटरी क्लब देहरादून**, रो ई मंडल 3080, ने एक विशिष्ट कार रैली और एक साइकिल रैली का आयोजन किया। रोटेरियनों के साथ देहरादून साइक्लिंग क्लब के चालीस साइकिल चालकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। विशिष्ट कारों को पोलियो जागरूकता बैनरों से सजाया गया और साइकिल चालकों ने भी पोलियो जागरूकता को लेकर विज्ञापन पत्र लगाए।

रोटरी क्लब कांगड़ा, रो ई मंडल 3070 द्वारा साइकिल रैली।

रोटरी क्लब बैंगलोर ब्रिगेडस, रो ई मंडल 3190, ने गांवों में जागरूकता अभियान चला कर विश्व पोलियो दिवस को चिह्नित किया।

रोटरी चक्र और एंड पोलियो नाउ के लोगो को प्रदर्शित करने वाली सूरज छतरियों को सड़क किनारे वाले विक्रेताओं को वितरित किया गया।

रोटरी क्लब कांगड़ा, रो ई मंडल 3070, ने विश्व पोलियो दिवस मनाने के लिए 23-24 अक्टूबर को दो साइकिल रैली आयोजित की। इस आयोजन में सभी स्वच्छता और स्वास्थ्य निर्देशों को ध्यान में रखते हुए 50 सदस्यों की भागीदारी देखी गई। **रोटरी क्लब बैंगलोर ब्रिगेड्स**, रो ई मंडल 3190, ने तमिलनाडु और कर्नाटक के 37 गांवों में जागरूकता अभियान के साथ विश्व पोलियो दिवस को चिह्नित किया। क्लब के अध्यक्ष, अश्विनी किंजर ने कहा, 'घर पर रहें, सुरक्षित रहें' पर जोर देने वाले सुरक्षा मानकों से साथ हमारे लिए यह तय करना मुश्किल हो गया था कि हम विश्व पोलियो दिवस पर कौन सी प्रभावकारी गतिविधि करें। हमने ग्रामीण आबादी तक पहुंचने और जागरूकता फैलाने का फैसला किया।''

रोटरी क्लब कनकपुरा, रो ई मंडल 3190, और रोटरी क्लब यूनाइटेड चेन्नई, रो ई मंडल 3232, के अलावा, बैंगलोर गोल्डन रॉक्स के रोटेरेक्ट क्लब और स्कूल ऑफ ऐन्शन्ट विज़्डम, रमैया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, प्रेसीडेंसी कॉलेज, एम्स इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन, और सुभाष चंद्र बोस स्कूल ने जागरूकता अभियान चलाया। स्थानीय भाषाओं में पोस्टर और विज्ञापन पत्र तैयार करके प्रदर्शित किए गए, इसके बाद नुक्कड़ नाटकों ने टीकाकरण के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया। क्लबों ने राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस से पहले एक अनुवर्ती अभियान भी चलाया।

रोटरी क्लब कसरगोड, रो ई मंडल 3202, द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम, ए वॉक टू एंड पोलियो, ने शहर में पोलियो जागरूकता फैलाने में मदद की। लोगों को संवेदनशील बनाने के लिए रोटेरियन आवासीय क्षेत्रों और झुग्गी बस्तियों में गए। इस रैली की शुरुआत कासरगोड के पोलियो से बचे एक व्यक्ति, महिन कुणिल ने की।■

संतप्त लोगों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने में मदद करें

केविन बार्कले

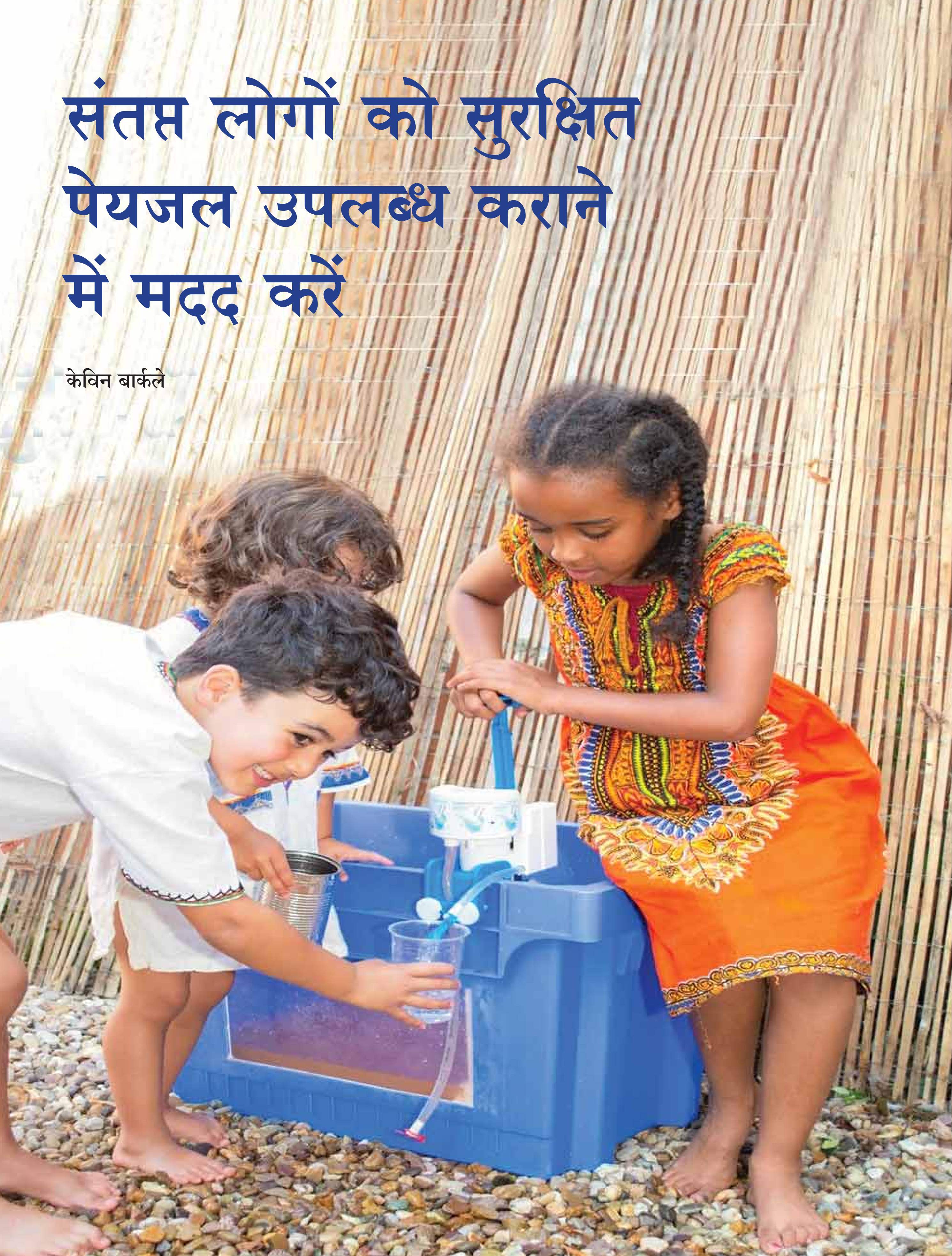

दुनिया भर में, 800 मिलियन से ज़्यादा लोग स्वच्छ पेयजल से वंचित हैं । मूलभूत सुविधा परियोजनाएं दीर्घकालिक समाधान तो प्रदान करती हैं लेकिन आपदा राहत उपलब्ध नहीं करातीं और संघर्षरत क्षेत्रों में परियोजनाएं नहीं की जाती हैं। एक्वाबॉक्स की भूमिका यहीं आती है - इसके लिए हम आगे आये और सबसे पहले हमने प्रतिक्रिया दिखाई, हमारा लक्ष्य संघर्षरत क्षेत्रों में पानी के फ़िल्टर जल्द से जल्द पहुंचाना है ।

एक्वाबॉक्स स्वयंसेवी नेतृत्व के तहत चलाई जा रही एक धर्मार्थ सामुदायिक परियोजना है जो इंग्लैंड के डर्बीशायर में स्थित है। यह पूरी दुनिया में कार्य करती है, जिसमें दुनिया भर के संकटग्रस्त क्षेत्रों और शरणार्थी शिविरों को सुरक्षित पेयजल (फिल्ट्रेशन इकाइयों का उपयोग करके) और मानवीय सहायता प्रदान की जाती है।

एक्वाबॉक्स की शुरुआत 1990 के दशक में रोटरी की एक गार्डन पार्टी में हुई थी। माइक हूले और पीटर हेयर, दोनों रो क्लब विर्कस्वर्थ, इंग्लैंड के सदस्य, सहायता बॉक्स को और उन्नत करने के तरीकों पर चर्चा कर रहे थे जिसे उस समय क्लब द्वारा आपदा क्षेत्रों में भेजा जा रहा था। स्वयंसेवी समूहों द्वारा प्रत्येक बॉक्स में कंबल, बर्तन, कटलरी और इसी तरह की वस्तुएं भरी गई थीं। माइक और पीटर ने सोचा कि बॉक्स को अधिक उपयोगी बनाने का एक तरीका है, इसका उपयोग पानी संचित करने के लिए किया जा सकता है।

एक्वाबॉक्स की शुरुआत 1990 के दशक में रोटरी की एक गार्डन पार्टी में हुई थी। अपनी स्थापना के बाद, एक्वाबॉक्स ने 115,000 से अधिक वाटर फिल्टर का वितरण और सहायता की है।

अब वर्तमान की बात करें तो ; 2018-19 में एक्वाबॉक्स ने फ़िल्टर इकाइयों की आपूर्ति की है जो प्रति मिनट 4,000 लीटर से अधिक पानी का उत्पादन करती है और दुनिया भर में 50,000 से अधिक हताश लोगों को जीवन रक्षक सहायता प्रदान करता है।

इन वर्षों में एक्वाबॉक्स ने सम्पूर्ण एशिया में सहायता उपलब्ध कराई है। हम प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों प्रकार की आपदाओं का सामना करते हैं और कई बार हमारी इस सहायता के सुरक्षित, निरापद वितरण के दौरान कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

नेपाल के साथ हमारे संबंध काफी लंबे समय से हैं, काठमांडू से ले कर दूर दराज इलाकों में बसे समुदायों तक हमारे सहायता बॉक्स के तत्काल वितरण को भूकंप, कीचड में धंसना ,भूस्खलन आदि नियमित रूप से प्रभावित करते रहे हैं। हालांकि हमारे लिए यह एक चुनौती भरा कार्य था पर हम बांग्लादेश में म्यांमार से भागे रोहिंग्या शरणार्थियों तक आराम से सहायता पहुंचाने में सफल रहे थे।

2019 में केरल में आई बाढ़ ने स्थानीय निवासियों को और कष्ट दिया था। एक्वाबॉक्स ने तत्काल पानी के फिल्टर वितरित किये थे और बाद में इसमें हमने भी सहयोग किया था।

हमारा गौरवशाली इतिहास रहा है तूफानऔर चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं से उबरने वाले समुदायों के साथ काम करने का। हाल ही में हमने उन समुदायों की सहायता की है जिन्हें बंगाल की खाड़ी में आये भयंकर चक्रवात अम्फन ने बर्बाद कर दिया था ।

अगली परियोजना, जर्मन रोटरी क्लब के साथ, सेनेगल में दूरदराज के कबीलों में फ़िल्टर वितरित करना है।

सम्यक् तत्परता के रूप में, हम ये सुनिश्चित करते हैं कि हमारी दी गई हर प्रकार की सहायता के वितरण की व्यवस्था उन्हीं स्थानीय एजेंसियों द्वारा किया जाए जो प्रभावित समुदाय से भली भांति परिचित हों और उपरोक्त सभी मामलों में, रोटरी इस कार्य में एक विश्वसनीय भागीदार और एक प्रमुख खिलाड़ी है।

1992 में अपनी स्थापना के बाद, एक्वाबॉक्स ने 115,000 से अधिक वाटर फिल्टर का वितरण और सहायता की है, प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदा पीड़ित देशों में, जिससे दुनिया भर के 50 से

अधिक देशों में सैकड़ों हजारों लोग लाभान्वित हुए हैं।

यह पूर्ण रूप से से स्वयंसेवकों द्वारा संचालित किया जाता है, इसलिए हमारे खर्चे बहुत कम हैं, जिसका अर्थ है कि एकत्रित धन के अधिकांश हिस्से का उपयोग वहां होता है जहां इसकी आवश्यकता है। यह पूरी तरह से दान पर और अपने समर्थकों द्वारा धन जुटाने वाली गतिविधियों पर निर्भर करता है और सहायता बॉक्स में दी जाने वाली वस्तुओं की खरीद करता है। ऐतिहासिक रूप से, यह सहयोग रोटरी परिवार के भीतर से आया है; रोटरी, इनर व्हील, रोटारैक्ट आदि से।

एक्वाबॉक्स भली भांति जानता है कि यह पूरी दुनिया की सुरक्षित पेयजल की कुल आवश्यकता के केवल छोटे से भाग को संबोधित कर रहा है। हालाँकि हमने सभी 5 महाद्वीपों पर आपदाओं में सहायता की है, लेकिन विश्व जोखिम सूचकांक के शीर्ष 25 देशों में ऐसे कई देश हैं जहां हम अभी तक फ़िल्टर भी नहीं पहुंचा सके हैं; प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति के साथ, आवश्यकताएँ भी बढ़ रही है, लंबे समय से चले आ रहे अनगिनत झगडे और असुरक्षित क्षेत्रों में लगातार राजनैतिक अस्थिरता के कारण जल आपूर्ति खतरे में है।

इसलिए एक्वाबॉक्स ने 2025 तक एक वर्ष में 100,000 लोगों तक पर्याप्त मात्रा में पानी पहुंचाने के लिए पर्याप्त फिल्टर उपलब्ध कराने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है।

ऐसा करने के लिए, अतिरिक्त धनराशि जुटाने हेतुइसे अपने निधीकरण के पारंपरिक आधार का विस्तार, रोटरी परिवार के अन्यत्र भी करने की आवश्यकता है और ये कॉर्पोरेट साझेदारी की ओर कदम बढ़ा रहा है। यह संस्था समान मूल्यों और मान्यताओं वाली कंपनियों के साथ दीर्घकालिक, परस्पर लाभदायक संबंध बनाने की इच्छुक है। इस बहुमूल्य सहयोग के बदले यह अपने सहयोगी को सामाजिक उत्तरदायित्व के उद्देश्यों की पूर्ती के कई अवसर प्रदान कर सकता है।

इसलिए, यदि आप एक रोटरी क्लब के रूप में, एक कॉर्पोरेट भागीदार या व्यक्तिगत रूप से एक्वाबॉक्स का सहयोग करना चाहते हैं; कोई भी राशि दुनिया के हताश लोगों को, उनके लिए निहायत जरूरी स्वच्छ जल उपलब्ध कराएगी। आप www.aquabox.org वेबसाइट पर दान कर सकते हैं; या समर्पित पेज JustGiving पर कर सकते हैं: https://www.justgiving.com/campaign/aquabox

केवल पानी के फिल्टरउपलब्ध करवाने के लिए यह 250 ब्रिटिश पौंड का दान स्वीकार करता है जो 10 परिवारों के लिए स्वच्छ जल की आपूर्ति के लिए पर्याप्त है !

अधिक जानकारी के लिए लेखक से संपर्क करें, जो ट्रस्टी हैं : kevin.barclay@aquabox.org

District Wise TRF Contributions as on October 2020

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	21,880	2,206	5,000	0	29,087	122	2.5
2982	9,158	8,249	20,770	36,270	74,448	41	1.3
3000	5,890	4,439	10	10,800	21,139	34	0.7
3011	(5,325)	7,381	40,450	157,646	200,153	52	1.4
3012	10,025	1,141	0	8,329	19,495	40	1.1
3020	44,091	16,041	0	2,726	62,858	115	2.8
3030	3,233	1,839	0	127,975	133,048	41	0.8
3040	1,604	67	0	50	1,721	12	0.6
3053	9,733	303	0	60,668	70,703	27	1.0
3054	60,315	343	0	79,108	139,766	218	3.6
3060	29,907	(579)	22,100	57,642	109,069	615	14.1
3070	5,453	100	0	17,745	23,298	49	1.6
3080	13,277	10,113	0	0	23,390	61	1.9
3090	15,871	0	0	(736)	15,135	34	1.5
3100	12,805	252	0	4,224	17,280	9	0.4
3110	10,509	0	0	0	10,509	25	0.7
3120	0	1,769	0	(1,769)	0	0	0.0
3131	31,066	21,799	109,000	275,715	437,580	211	4.1
3132	4,145	2,010	0	3,801	9,956	22	0.7
3141	175,428	9,178	15,865	587,079	787,550	372	7.0
3142	92,130	5,311	0	4,693	102,134	296	9.2
3150	17,406	801	42,667	22,023	82,896	260	7.9
3160	5,712	4,908	16	0	10,637	22	0.9
3170	8,623	13,836	125	93,979	116,562	46	0.8
3181	9,416	1,538	0	7,050	18,005	30	0.9
3182	17,975	2,865	0	7,265	28,105	31	1.0
3190	35,243	3,577	25,000	111,859	175,679	329	6.6
3201	12,478	13,634	0	110,591	136,702	205	3.7
3202	26,279	12,277	8,468	10,272	57,297	92	1.7
3211	934	1,899	0	39,738	42,571	3	0.1
3212	13,262	15,570	14	44,733	73,579	15	0.4
3231	(513)	245	0	10,194	9,925	2	0.1
3232	616	23,373	2,000	99,850	125,840	53	0.9
3240	19,146	12,050	0	46,117	77,313	106	3.5
3250	2,239	241	0	93	2,573	10	0.3
3261	9,578	601	0	2,833	13,013	21	0.8
3262	2,721	1,801	0	0	4,521	10	0.3
3291	6,584	643	0	44,004	51,231	23	0.6
India Total	**738,892**	**201,822**	**291,486**	**2,082,565**	**3,314,765**	**3,654**	**2.5**
3220 **Sri Lanka**	22,946	5,371	0	15,015	43,332	106	5.6
3271 **Pakistan**	1,006	1,025	0	22,100	24,131	0	0.0
3272 **Pakistan**	17,450	9,725	0	1,063	28,237	93	5.6
3281 **Bangladesh**	39,102	3,880	1,000	68,923	112,905	288	4.1
3282 **Bangladesh**	8,205	2,560	0	7,670	18,435	9	0.2
3292 **Nepal**	17,303	7,813	0	94,780	119,896	284	5.7
South Asia Total	**844,903**	**232,196**	**292,486**	**2,292,116**	**3,661,701**	**4,434**	**2.6**
World Total	**28,722,251**	**6,783,831**	**8,243,500**	**10,116,324**	**53,865,905**		

Source: RI South Asia Office

रोटरी क्लब मद्रास पल्लवा विशेष स्मारिकाओं के माध्यम से धन एकत्रित करता है

वी मुत्तुकुमारण

RIPE शेखर मेहता अपने जीवन के हर पल का जश्न मनाते है। नहीं, यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है... ''रोटरी में होना ही उत्सव मनाने का एक अवसर है। हम उन क्षणों को दोबारा जीते है जब ग्रामीणों को पानी पहुंचाकर, विभिन्न सेवा परियोजनाओं के माध्यम से लोगों की सेवा करके हम उनके चेहरों पर मुस्कुराहट लाए थे, और इस तरह हम उनकी खुशी का जश्न मनाते है,'' उन्होंने कहा।

वह रोटरी क्लब मद्रास पल्लवा, रो ई मंडल 3232, द्वारा भारत में रोटरी के 100 वर्षों को यादगार बनाने हेतु विशेष रूप से तैयार की गई स्मारिका के ऑनलाइन लॉन्च पर बोल रहे थे। रोटरी दूसरों को 'जीवन' देने का एक उत्सव है, मेहता ने कहा और नेपाल की एक बूढ़ी महिला को याद किया जिनकी दोनों आँखों की सर्जरी होने के बाद उनकी दृष्टि बहाल हो गई थी और उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। ''उन्होंने पहली बार अपने पोते/पोती को देखा और इसकी खुशी उनके चेहरे से साफ झलक रही थी। यह मेरे लिए खुशी का एक पल था।

इस महामारी ने जहां हमारे सामने चुनौतियाँ खड़ी की वहीं हमें नए अवसर और संभावनाएं भी प्रदान की,'' रोटेरियनों द्वारा की गई अनेक आभासी बैठकों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा।

RIPE शेखर मेहता

रो ई अध्यक्ष मनोनीत होने पर उनके उत्साहित होने को लेकर पूछे गए एक आम सवाल पर मेहता ने कहा कि इस शीर्ष पद को प्राप्त करना उनका सौभाग्य है, लेकिन जिस बात ने उन्हें सबसे अधिक खुश किया वह चीजों को करना था। उनकी ऊर्जा का रहस्य: ''मैं हमेशा खुश रहता हूं।''

नए अवसर

बड़े लक्ष्य रखने और बड़ी परियोजनाओं को करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए मेहता ने कहा कि अनुदान संचयन समारोह ऑनलाइन किए जा सकते है, ''अब अधिक रोटेरियन ऑनलाइन क्लब बैठकों में भाग ले सकते है। मेरा क्लब (रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर) अब अपनी आभासी नियमित बैठकों में 2,400 प्रतिभागियों को आकर्षित करने में सक्षम है।'' रोटरी इंडिया ने अपने सबसे बड़े अनुदान संचयन समारोहों में से एक, *छोटा सी आशा* को 26 जून को आयोजित किया, एक विशाल जनसम्पर्क अभ्यास, जिसमें तीन घंटे के लिए बॉलीवुड हस्तियों और व्यापारियों सहित एक मिलियन से भी अधिक लोगों ने भाग लिया। ''यह केवल लॉकडाउन के कारण संभव हुआ।''

जब रोटरी क्लब दिल्ली साउथवेस्ट ने उन्हें बच्चों के लिए एक चित्रकारी प्रतियोगिता का उद्घाटन करने हेतु आमंत्रित किया, ''मैं थोड़ा झिझक रहा था, लेकिन मैंने देखा कि इसमें आमतौर पर दिल्ली के 6,000 प्रतिभागियों के शामिल होने के बजाय 22 देशों के 12,000 बच्चे शामिल हुए थे। लॉकडाउन के केवल सकारात्मक पक्ष को देखें।''

अक्टूबर से, कक्षा 1-12 के लगभग 25 करोड़ छात्र सरकार के स्वामित्व वाले स्वयं प्रभा चैनल के माध्यम से रोटरी द्वारा विकसित ई-लर्निंग कार्यक्रमों में शामिल हो रहे है। ''हमने पूरे भारत में छात्रों के लिए पाठ्यक्रम को प्रसारित करने हेतु इस टीवी चैनल के लिए 1,400 वीडियो तैयार किए है। यह सामग्री अब हिंदी, गुजराती, मराठी और असमिया भाषा में उपलब्ध है। इसे अन्य भाषाओं में भी अनुवादित किया जाएगा।'' उन्होंने ई-लर्निंग पाठ्यक्रम के निर्माण के लिए बहुमूल्य जानकारी प्रदान करने और एक नाद पट बनने हेतु RIDE ए एस वेंकटेश को धन्यवाद दिया। ''ऐसा कुछ भी नहीं है जो किया नहीं जा सकता।''

उन्होंने कहा कि पीडीजी जे बी कामदार के मार्गदर्शन में एक टीम एक कॉफी टेबल बुक पर काम कर रही है जिसे कोचि संस्थान में रिलीज किया जाना है, इसमें रोटरी भारत की कुछ चिन्हक परियोजनाएं शामिल होंगी। RIDE वेंटकेश ने कहा कि कोई भी रोटरी क्लब कुछ अलग सोचने और सालों से की गई विशाल परियोजनाएं करने के लिए जाना जाता है। ''यह स्मारिका खुशी की भावना लाएगी, नवागंतुकों को रोटरी के बारे में अधिक जानने और पुराने लोगों को इस संस्थान के लिए खुद को फिर से समर्पित करने हेतु सक्षम बनाएगी।'' रो ई मंडल 3232 के सभी 128 क्लब इसे एक सामान्य मंडल स्मारिका बना सकते है जो रोटरी और इसकी महान वंशावली के बारे में अपने ज्ञान को ताज़ा करने का एक अवसर होगा, उन्होंने कहा।

डी जी एस मुत्तुपलनियप्पन ने कहा कि 2021-22 के लिए शेखर मेहता द्वारा रो ई अध्यक्ष का पदभार संभालने के बाद सबकी नज़रें भारत पर होंगी। प्रोजेक्ट ऑरेंज, दृष्टि केंद्रों के साथ एक नेत्र देखभाल पहल, को जल्द ही 1.7 मिलियन डॉलर कीमत के सात वैश्विक अनुदान प्राप्त होंगे और इसे 30 क्लबों द्वारा लागू किया जाएगा। इस परियोजना के अंतर्गत 2.5 लाख नेत्र सर्जरियाँ और एक मिलियन से अधिक चश्मों का वितरण किया जाएगा।

पीडीजी कामदार ने कहा कि चार्टर अध्यक्ष ए एल चिदंबरम द्वारा रखी गई मजबूत नींव ने क्लब के

RIDE ए एस वेंकटेश

सदस्यों को हैप्पी विलेज और स्कूल इंटू इस्माइल्स जैसी प्रमुख परियोजनाएं करने के लिए प्रेरित किया जिन्हें बाद में मंडल परियोजनाओं के रूप में अपनाया गया। ''पूर्व अध्यक्ष रोटरी क्लब मद्रास पल्लवा में विशाल परियोजनाओं को डिजाइन करने और उनका मार्गदर्शन करने में सक्रिय रहते है,'' उन्होंने कहा।

चिदंबरम ने अपने भाषण में कहा कि क्लब के 90 फीसदी सदस्य पॉल हैरिस फ़ेलो थे, तीन प्रमुख दानकर्ता थे, दो अक्षयनिधि दानकर्ता थे और एक AKS सदस्य थे। मंडल में टीआरएफ को देने में यह क्लब आठवें स्थान पर है। 1992 में 30 सदस्यों के साथ शुरू हुए इस क्लब में अब विभिन्न व्यवसायों से 45 रोटेरियन शामिल है। बैठक में डीजीई जे श्रीधर, पीडीजी ए सुब्रमण्यम, बाबू पेरम, ISAK नज़र, ए पी कन्ना, जी ओलिवन्नन, वी राजकुमार और अन्य मंडल नेताओं ने हिस्सा लिया।

आईपीडीजी जी चंद्रमोहन अपने कार्यकाल के दौरान भारत में रोटरी के 100 साल पूरे होने के जश्न को कुछ अनोखे अंदाज में मनाना चाहते थे। हमारे सचिव डी रवि ने सुझाव दिया कि हमें एक विशेष नक्काशीदार स्मारिका तैयार करनी चाहिए जिसे अनेक रोटेरियनों को बेचकर परियोजनाओं के लिए पैसे एकत्रित किए जा सकते है, रोटरी क्लब मद्रास पल्लवा के अध्यक्ष, एम वी रॉबर्ट ने कहा। क्लब को इन स्मारकों - पहियों के लिए रोटरी लोगो के साथ एक खूबसूरती से गढ़ी गई मोर गाड़ी - में से 3,000 को बेचने की उम्मीद है जिनकी प्रत्येक की लागत ₹ 750 है। जहाँ 10 फीसदी धनराशि टीआरएफ के पास जाएगी, वहीं बाकी की धनराशि का उपयोग चेन्नई के उपनगरीय इलाके, तिरुमुल्लईवॉयल में एक झील के पुनरुद्धार हेतु किया जाएगा।

इस बीच, विशाल भित्ति चित्र बनाने का 50 प्रतिशत काम भी किया जा चुका है और ''हम उन्हें चेन्नई में व्यस्त स्थानों पर एक जनसम्पर्क अभ्यास के तहत स्थापित करेंगे,'' रॉबर्ट ने आगे कहा। ■

Rotary
PEOPLE OF ACTION

गुर्दे संबंधी रोगियों की आवश्यकताओं को संबोधित करना

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल, रो ई मंडल 3131 में, पुणे के लिए चिकित्सा बुनियादी ढाँचा तैयार करने की परंपरा है। जहाँ गरीब और जरूरतमंदों के लिए सुविधाएँ अपर्याप्त और महँगी हैं, वहाँ इसने आँखों की देखभाल, कैंसर की देखभाल और स्वास्थ्य जागरूकता के लिए कई परियोजनाएँ लागू की हैं, ऐसा क्लब के संयुक्त सचिव और पीआर निदेशक, लेखा नायर का कहना है।

इसी परंपरा को ध्यान में रखते हुए, क्लब ने फरवरी में घएच् अस्पताल में छह डायलिसिस मशीनों को स्थापित किया, जो वैश्विक अनुदान के माध्यम से 'आर्य ओमनीटॉक वायरलेस सॉल्यूशंस' के CSR योगदान से वित्त पोषित है। परियोजना की लागत ₹45,29,000 (64,700 डॉलर) है। बच्चों में गुर्दे की विफलता को संबोधित करने के लिए इनमें से दो मशीनें, अस्पताल के मबाल चिकित्सा डायलिसिस वार्डफ में स्थापित की गई थीं। लेखा का कहना है, गुर्दे के रोगियों में, ''डायलिसिस के लिए इंतज़ार करने का समय बहुत कम हो गया है और शुल्क में गरीबों के लिए सब्सिडी दी जाती है।''

KEM अपताल, पुणे में डायलिसिस सेंटर में रोटेरियन।

हाल ही में क्लब ने, आर सी न्यू सिटी, रो ई मंडल 7210, यू एस और टी आर एफ से जुड़े एक अन्य वैश्विक अनुदान के माध्यम से, 'सूर्य सह्याद्री अस्पताल' में एक डायलिसिस वार्ड स्थापित किया। इसमें एक गुर्दा-विभाग था, लेकिन वह डायलिसिस के लिए रोगियों को कहीं और भेजा करता था। ₹95 लाख (131,500 डॉलर) की लागत वाली इस सुविधा में 13 डायलिसिस मशीनें, एक वॉशर और एक बाय-कार्बोनेट मिक्सर शामिल हैं, और एक दिन में 45 रोगियों की सेवा कर सकते हैं।

चूँकि इस अस्पताल को राज्य और केंद्र सरकार की मचिकित्सा बीमा योजनाओं के तहत सूचीबद्ध किया गया है, इसलिए यहाँ गरीबों को डायलिसिस की मुफ्त सेवा प्रदान की जाती है, ऐसा लेखा का कहना है। ■

गुजराती खाने

के शौकीनों के लिए एक दावत

रशीदा भगत

एक छोटी लड़की के रूप में, पारुल भट्ट जमीन पर पालथी मार कर बैठे हुए अपनी दादी को जमीन पर बने एक साधारण से चूल्हे पर परिवार के लिए स्वादिष्ट, सुगंधित, शाकाहारी भोजन बनाते हुए देख रही थी। मानो उनके जादुई हाथों के स्पर्श से विभिन्न सामग्रियाँ जी उठती हो, यह देखकर ही उस छोटी लड़की के मन में खाना पकाने का उत्साह उत्पन्न हुआ, जो बीतते वर्षों के साथ बढ़ता ही गया। ''मेरी दादी की तरह ही, मेरी माँ, और मेरी फोइबा (भुआ) भी शानदार खाना बनाती थीं, और मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा,'' वह कहती है।

खाना पकाने का उनका जुनून अचार, पापड़ और पूड़ी एवं अन्य स्वादिष्ट नमकीन बनाकर बेचने में तब्दील हो गया क्योंकि उनके दोस्तों ने उन्हें उनके खाना पकाने के कौशल को एक बड़े समूह के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

लेकिन चिकने पृष्ठों वाली कॉफी टेबल बुक - *पारुल्स मैजिक: एव्रीडे डिलिश्यस ईज़ी टू कुक गुजराती डिशेश* - ने कमाल कर दिया तब ''मैं 2014 में अपनी बड़ी बेटी के प्रसव के दौरान उसके पास अमेरिका में थी,'' वह मुस्कुराती है। नई माँ और चेन्नई में उसकी छोटी बहन, जो तब 22 वर्षीय थी - दोनों को अपनी माँ के हाथ का खाना बहुत पसंद था। ''हर रात, जब मैं अपनी छोटी बेटी से बात करती थी, तो वह शिकायत करती थी कि उसे रसोइए द्वारा तैयार किया गया भोजन अच्छा नहीं लगता। वह मेरे हाथ के खाने के लिए तरस रही थी। इसलिए, मैंने एक आसान विधि लिखी जो मेरे आईपैड पर तैयार की जा सकती थी और फिर उसे भेज दिया। उसने इसे बनाया, अपने कार्यालय में दोपहर के भोजन पर अपने सहयोगियों के साथ इसे साझा किया और मुझे बताया कि उन सभी को वह बहुत पसंद आई,'' पारुल मुस्कुराती है।

खिचड़ी

जब वह अमेरिका से अपने घर लौटी, तब तक उसके आईपैड पर लगभग 40 व्यंजनों की विधियों का संग्रह था। बेशक, वे सभी पारंपरिक गुजराती, शाकाहारी व्यंजन थे, और उसके दिमाग में एक विचार ने जन्म लिया कि उन्हें व्यंजन की एक पुस्तक लानी चाहिए।

लेकिन मुझे व्यंजन की एक किताब लिखने, या इस विषय में कुछ भी लिखने का कोई अंदाजा नहीं था। लेकिन अपने परिवार के पीआर व्यवसाय में अपने रोटेरियन पति सत्यन भट्ट की मदद करते हुए, और मद्रास के एक उत्साही इतिहासकार, स्वर्गीय एस मुथईया के साथ *मद्रास डेज़* पर करीब से काम करते हुए, उन्होंने एक बार उनसे अपनी व्यंजन की एक किताब प्रकाशित करने के

लहसुन, कोतामारी और खजुर और इमली की चटनीयाँ।

लपसी (कसार)

लपसी या कसार एक पारंपरिक गुजराती मिठाई है जिसे प्रसाद के रूप में परोसा जाता है, या परिवार में किसी भी शुभ अवसर के दौरान बनाया जाता है। मेरी चाची मुझसे कहा करती थी कि कसार उन दिनों तैयार की जाने वाली पहली मिठाई में से एक थी। इस विशुद्ध मिठाई के लिए केवल चार सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

गुजराती परिवार में शादी के दिन कसार बनाने का भी रिवाज है।

कसार भक्षण समारोह: शादी के तुरंत बाद यह एक जोड़े के लिए एक साथ पहला भोजन होता है। दुल्हन की मां एक थाली में कसार लाती है और वह जोड़ा एक दूसरे को खिलाकर अपने मिलन का प्रतीक दर्शाता है।

सामग्री

- 1 कप रवीला गेहूँ का आटा
- मिलाने के लिए 2 बड़ी चम्मच घी
- 1 कप पानी
- ½ कप गुड़ का पाउडर
- परोसने के लिए
- 4 बड़ा चम्मच घी
- ¼ कप कैस्टर शुगर/पाउडर

विधि

- एक बर्तन में गेहूं का आटा लें और 2 बड़ी चम्मच घी मिलाएं और इसे अच्छी तरह से अपने हाथ से मिलाएं
- एक मोटे पेंदे वाली कढ़ाई या नॉन स्टिक कढ़ाई में 1 कप पानी लें, इसमें गुड़ मिलाएं और 10 मिनट तक या जब तक गुड़ पिघल न जाए तब तक उबालें। इसे आंच से हटा लें और स्टील की छलनी से छान लें ताकि कुछ कचरा हो तो वह उसमें रह जाए।
- फिर से गुड़ के पानी को मोटे पेंदे की कढ़ाई में उबालें, उबलते पानी में गेहूँ का आटा डालें और लकड़ी की चम्मच या फेंटनी से अच्छे तरह मिलाएं। ध्यान रखें की कोई गुठली न रह जाए
- तवा/ग्रिडल को कढ़ाई के नीचे रखें और उसे एक ढक्कन से ढक दें। मंद आंच पर 10 मिनट पकाएं
- इसे आंच से उतार लें। इसे फेंटनी से मिलाएं और ध्यान रखें कि इसमें कोई गुठली न रहे
- बचा हुए घी डालें और अच्छी तरह मिलाएं। कैस्टर शुगर मिलाकर गरमागर्म परोसे।
- आप इसे अपने हाथों से मिलाकर परोस सकते है

लपसी

ध्यान दें:

- गेहूं के आटे की गुणवत्ता पर पानी की मात्रा निर्भर करती है
- अगर आपको लगता है लपसी बहुत सूखी है तो मिलाते वक्त उसमें थोड़ा और पानी डालें

कसार भक्षण शादी के तुरंत बाद यह एक जोड़े के लिए एक साथ पहला भोजन होता है। दुल्हन की मां एक थाली में कसार लाती है और वह जोड़ा एक दूसरे को खिलाकर अपने मिलन का प्रतीक दर्शाता है।

अपने सपने के बारे में बताया। ''उसके बाद, वह लगातार मुझसे इस पुस्तक की प्रगति के बारे में पूछते रहे। जब मैंने उनसे कहा कि वास्तव में मुझे कोई अंदाजा नहीं है कि इस तरह की किताब कैसे लिखी जाए, तो उन्होंने मुझे चंद्र पद्मनाभन (लेखन और प्रकाशन के अनुभव के लिए) के संपर्क में रखा।''

यह 2016 की बात थी और अब तक पारुल के रेसिपी के पिटारे में 60 दिलचस्प गुजराती व्यंजन थे। चंद्रा ने उन्हें अपना पूरा एक सप्ताह दिया और ''7 दिनों के लंबे सत्रों ने मुझे बहुत अच्छे विचार और रचनात्मक सुझाव दिए कि एक किताब में क्या और कैसा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सिर्फ इतना कहना कि 'नमक या पानी डालें' पर्याप्त नहीं है ... इनकी मात्रा बताना भी आवश्यक है जैसे एक चौथाई छोटा चम्मच नमक, दो कप पानी आदि। ब्योरा देने वाले बने। क्योंकि हर कोई आपकी तरह विशेषज्ञ नहीं होता है। उन्होंने मुझे माप का महत्व सिखाया और कहा: अपनी रसोई में वापस जाओ, व्यंजन बनाओं, माप लो उस व्यंजन में आप कितना मसाला या पानी, तेल या घी डालते है और फिर विधि लिखें। उन्होंने वास्तव में मुझे मार्गदर्शन दिया कि इस तरह की किताब कैसे लिखी जानी चाहिए।''

पारुल ने उनकी सलाह को गंभीरता से लिया और वह अपने ड्राइंग रूम - इस मामले में उनकी रसोई - में वापस चली गई और सब कुछ फिर से लिखा। अंत में, इस पुस्तक ने

किसने सोचा था कि हल्दी, काली मिर्च पाउडर और शहद के साथ, आप हल्दी के दूध में घी भी डाल सकते है? और यह कि जब दूध बहुत गर्म हो तो शहद कभी नहीं डालना चाहिए?

आकार और संरचना दोनों प्राप्त की और परिणामस्वरूप यह आकर्षक पुस्तक सामने आई जिसमें 142 व्यंजन है, जो आपको पारुल के 'जादू' का वादा करते है।

उदाहरण के लिए बाजरा वड़ा लें; इसके नाम से पता चलता है कि यह स्वस्थ होगा क्योंकि इसका मूल तत्व बाजरा है न कि मैदा या गेहूं का आटा। ''आज, गुजरात में भी बहुत से लोग इसे नहीं बनाते है, लेकिन अगर आप इसे सही ढंग से बनाते है, और मेरी रेसिपी का अनुसरण करते है, जो काफी सरल है, तो ये वड़े बिना रेफ्रिजरेशन के भी 7 दिनों तक अच्छे रहेंगे। यह बहुत ही स्वास्थ्यवर्धक नाश्ता है और आप इसे चाय के समय अचार या दही के साथ खा सकते है।''

एक अन्य स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन जिसकी वह अनुशंसा करती है, वह है हांडवों जो ''एक विशिष्ट गुजराती मसालेदार सेंक कर बनाया जाने वाला व्यंजन है, जिसमें सभी प्रोटीन और पोषण होते है, क्योंकि आप इसे किसी भी सब्जी के साथ बना सकते है; मैंने इसकी विधि दूधी (लौकी) के साथ दी है लेकिन आप अपनी किसी भी पसंदीदा सब्ज़ी का उपयोग कर सकते है,'' वह कहती है।

एक विधि जो आकर्षक है वह है पुरानी लापसी की, एक विशिष्ट गुजराती मिठाई जो गेहूं के रवे, घी, गुड़ से बनाई जाती है और ऊपर से चीनी बुरकाई जाती

थेपला

गुजरातियों का सदाबहार पसंदीदा भोजन होता है और वे कभी भी इसे खाने से नहीं थकते।

ऐसे भी दिन होते है जब थेपलों को मसाला चाय के साथ नाश्ते की टेबल पर, बच्चों के टिफिन में चुनदों के साथ, और सादे दही और बटाटा नू रसालू शेक (ग्रेवी में आलू) के साथ रात्रिभोज में जगह मिलती है। थेपला गुजरातियों की यात्रा और पिकनिक का भी साथी होता हैं।

मसाला थेपला

सामग्रियाँ

- 2 कप गेहूं का आटा
- 2 बड़ी चम्मच बेसन
- 4 छोटी चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- ¾ छोटी चम्मच नमक
- 1 ¼ छोटी चम्मच जीरा
- 3 छोटी चम्मच तिल
- 3 छोटी चम्मच अमचूर पाउडर
- 2 बड़ी चम्मच तेल और 1 छोटी चम्मच घी
- ¾ कप आटा गूँथने के लिए
- थोड़े तेल में तलने के लिए तेल

थेपला

विधि

- एक बड़े से बर्तन में सभी सामग्रियों को मिला लें (तलने वाले तेल को छोड़कर)
- थोड़ा-थोड़ा करके पानी डालें और नरम आटा लगाएं। एक गीले मलमल के कपड़े से इस आटे को ढँककर 20 मिनट के लिए अलग रख दें।
- आटे के बराबर के आकार के गोले बनाएं
- प्रत्येक गोले को गोलाकार में पतला बेल लें (5'' व्यास में)
- मंद आंच पर तवा गरम करें। एक बार जब तवा गरम हो जाए, उसपर थेपले को डाले और पकने दें।
- जब आपको उसपर कुछ बुलबुले दिखाई देने लगे तो इसे पलट कर दूसरी तरफ से सेकें। थेपले पर एक छोटा चम्मच तेल डालें और उसे करछी से दबाएं और तब तक सेकें जब तक यह भूरे रंग का न दिखने लगे। इसे तवे से हटा लें और प्लेट पर रख दें।
- बाकी बचे आटे के साथ भी ऐसा ही करें।
- चुनदों - मीठा आम का आचार या कोई भी अन्य आचार या दही के साथ इसे परोसें। यह चाय/कॉफी के साथ भी अच्छा लगता है।

मेथी थेपला

½ कप ताजी मेथी की पत्तियां (तोड़ें, धोएं और बारीक काटें), ½ कप सादा दही, 2 छोटी चम्मच हरी मिर्च का पेस्ट और 2 छोटे चम्मच अदरक लहसुन का पेस्ट मिलाएं और एक नरम आटा गूँथकर तैयार कर लें, (आवश्यक हो तो पानी मिलाएं)। ऊपर दी गई विधि का अनुसरण करें।

टिप:

- इसे एक एयरटाइट डिब्बे में भरकर साधारण तापमान पर संग्रहित किया जा सकता है। साथ ही यात्रा के दौरान इसे आसानी से ले जाया जा सकता है।
- इसे तवे पर भूनते समय आप थोड़ा और तेल का इस्तेमाल कर सकते है।

पारूल भट अपनी व्यंजन पुसतक के साथ।

भिंडी न रावैया

हल्दी, काली मिर्च पाउडर और शहद के साथ, आप हल्दी के दूध में घी भी डाल सकते है? और यह कि जब दूध बहुत गर्म हो तो शहद कभी नहीं डालना चाहिए?

पारुल की किताब से स्वादिष्ट चटनी बनाना - चाहे वह धनिया, लहसुन - या खजूर की हो और यहां तक कि सदाबहार पसंदीदा गुजराती नाश्ता - गाठिया - बनाना सीखिए!

जब मनोज देसाई रो ई निदेशक थे तब जिन्होंने रोटरी कार्यक्रमों में भाग लियर था, विभिन्न तरह की खिचड़ियाँ बनाने की विधियाँ देखकर उनके मुँह में पानी आ जाएगा।

है। ''मुझे याद है कि मेरे बचपन में जैसे ही यह तैयार होती थी, मेरी माँ इस पर चीनी छिड़क देती थी, और अपनी मुट्ठी से इसकी गेंद बनाकर मुझे देती थी। अब कौन सा बच्चा ऐसे मीठे पकवान से इंकार करेगा?''

सादी दाल या टमाटर के सूप की क्रीम से लेकर आकर्षक बादाम सूप तक, इस किताब में सब कुछ है।

हममें से जिनको बताया गया है कि हम जिन चीजों में हल्दी डाल सकते है उन सब में हमें हल्दी डालना चाहिए ताकि हम इस भयानक कोरोनोवायरस से बचे रहें। किसने सोचा था कि

वह हमेशा किसी भी तरह की खिचड़ी खाना पसंद करते थे!

पारुल विशेष रूप से भरवां ढोकली की शौकीन है जो उनकी माँ बनाया करती थी; ''वह इसे दूधी से भरती थी, और इसे ताजा और गरमागर्म खाया जाता है वह इसे रविवार को बनाती थी। लेकिन मेरे पिता विशेष रूप से आलू के शौकीन थे, इसलिए वह इसे आलू से भी भरती थी,'' वह हँसती है!

इन व्यंजनों के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वे सरल, आसान और जल्दी से बनने वाले है, और अधिकांश आवश्यक सामग्रियाँ आम तौर पर एक भारतीय रसोई में उपलब्ध होती है।

यह किताब शुद्ध शाकाहारियों को वास्तविक आनंद प्रदान करती है क्योंकि इसमें बहुत सारे सरल और स्वादिष्ट विकल्प मौजूद है। लेकिन, पारुल कहती है, ''भले ही उन्होंने इसे इस तरह से योजनाबद्ध नहीं किया था मुझे अब एहसास हुआ कि जैन लोग जो प्याज, लहसुन आदि न खाने को लेकर बहुत सख्त होते है, वे मेरी किताब से कई व्यंजनों की विधियों का उपयोग कर सकते है। मुझे मेरी एक पंजाबी मित्र ने बताया था कि वे लोग नवरात्रि के दौरान प्याज और अन्य कंद-मूलों का सेवन नहीं करते है, लेकिन जब उन्होंने इसकी एक प्रति खरीदी तो वह ऐसे बहुत सारे व्यंजन बना सकती थी, जिसमें प्याज, लहसुन नहीं होता!''

सुंदर चित्रों के साथ आर्ट पेपर पर मुद्रित यह किताब, जिसकी अधिकांश तस्वीरें उन्होंने घर पर अपने आईफोन पर ली है, की कीमत ₹3,000 (50 डॉलर) है।

जब मैंने टिप्पणी की कि इतनी कीमत बहुत से लोग दे नहीं पाएंगे, तो वह कहती है कि वह निकट भविधी में कागज़ चढ़ी किताब लाने का सोच रही है जिसकी कीमत बहुत ही मामूली होगी।

पुस्तक की कीमत ₹3000 हैं, और इसे आप *www.parulsmagic.com* पर आर्डर कर सकते हैं।

बाजरा खिचड़ी

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

हम रोटरी के भविष्य का निर्माण कर रहे हैं

People of Action, के द्वारा होनेवाले और उनके लिए एक मजबूत योजना

रोटरी एक मजबूत, अधिक प्रभावी और जीवंत भविष्य की रूपरेखा तैयार कर रही है। और इस प्रयास के केंद्र में हमारी कार्य योजना है:
एक बहु-वर्षीय रणनीतिक योजना जो हमें वैसी रोटरी बनने में मदद करेगी जैसी हम बनना चाहते है - और जैसी दुनिया को हमारी आवश्यकता है। कार्य योजना हमारे अपने पेशेवर जीवन और करियर में विकसित की गई उल्लेखनीय क्षमताओं पर आधारित होती है, और यह नेतृत्वकर्ताओं, क्लबों और कार्यवाही करने वाले लोगों के वैश्विक समुदाय के रूप में हमारी ताकत के रूप में उभरती है।

अपनी योजना बनाने के लिए, हमने डेटा, सदस्यता अनुमानों और उभरते सामाजिक रुझानों को देखा। और हमने रोटेरियनों, रोटरेक्टरों, और अन्य लोगों की बातें सुनी जिन्होंने हमसे रोटरी के भविष्य को लेकर अपनी उम्मीदें साझा की और हमें बताया कि हमें:

नए विचारों और चेहरों के प्रति अधिक कुशल और खुला बनने की आवश्यकत है ताकि हम जनसांख्यिकीय और सामाजिक बदलावों के साथ विकसित हो सकें।

कार्यक्रमों को बेहतर बनाने और मानवीय जरूरतों पर एक स्थायी प्रभाव बनाने के लिए डेटा को अधिक सख्ती के साथ इकट्ठा करके उसका उपयोग करने की जरूरत है

नई तकनीकों का लाभ उठाने और अधिक समृद्ध, आकर्षक और सुलभ अनुभव प्रदान करने की जरूरत है, ताकि रोटरी से अधिक उभरते हुए नेता जुड़ सकें

हमने इस बात का आँकलन किया कि हम अभी जहाँ है वहाँ से उस जगह जाने के लिए हमें क्या करना होगा जहाँ हम जाना चाहते है। हमारी कार्य योजना महत्वाकांक्षी है - और उसे हासिल किया जा सकता है।

कार्य योजना की चार प्राथमिकताएं

पहली प्राथमिकता

हमारे प्रभाव को बढ़ाना

दूसरी प्राथमिकता

हमारी पहुँच को बढ़ाना

तीसरी प्राथमिकता

सहभागियों की साझेदारी को बढ़ाना

चौथी प्राथमिकता

अनुकूल बनने की हमारी क्षमता को बढ़ाना

अधिक जानना चाहते है?

रोटरी के भविष्य के निर्माण में हमारी मदद करने हेतु कार्य करें शुरू करने के लिए rotary.org/actionplan पर जाएं।

Rotary

महिला रोटेरियन ने नए विचारों और प्रोजेक्ट के ज़रिए महामारी को हराया

जयश्री

कोविड लॉकडाउन के बावजूद, दुनिया भर से चार महिला रोटेरियन के एक समूह ने, महिला रोटेरियन के लिए एक विशेष मंच बनाया है, ताकि वे गतिविधियों पर मंथन और उनको समन्वित कर समुदायों का विकास कर सकें. लंदन के, आरसी टावर्स हेमलेट्स, की शर्मिला नागराजन द्वारा एक संयोगवश और बोरियत को दूर करने के लिए शुरू किया हुआ व्हाट्सएप ग्रुप, अब एक पूर्ण रूप से रोटरी-अंतरराष्ट्रीय-महिला (आरआईडब्ल्यू) ग्रुप में बदल गया है, जिसमें नवंबर के अंत तक 21 देशों के 251 सदस्य थे। शर्मिला के साथ-साथ दूसरी सदस्या जैसे आरसी चेन्नई मीनांबक्कम की दक्षायनी, आरसी चेन्नई टेम्पल सिटी की विद्या श्रीनी और आरसी इबीसा, स्पेन की डेनिस किल्शन, इस आरआईडब्ल्यू की संस्थापक सदस्या हैं, जिसका निर्माण इस साल के अप्रैल में किया गया था।

दक्षायनी कहती हैं, महिला रोटेरियन का आरआईडब्ल्यू में शामिल होने पर स्वागत है, ''हमारे प्रोजेक्ट्स का फ़ोकस रोटरी के सात क्षेत्रों पर केंद्रित है और एक वैश्विक समूह के रूप में हम इन गतिविधियों को समूचे विश्व की भलाई के रूप में देखते हैं. पूरी दुनिया के रोटरी नेता हमारे इस ग्रुप के समर्थक हैं।''

आरआईडब्ल्यू हर महीने वर्चुअल सेशन आयोजित करता रहा है। इस ग्रुप में पुरुष रोटेरियन भी हैं, जो अपने रचनात्मक सुझावों और प्रशंसा के साथ मुखर हैं। जुलाई सत्र जिसका शीर्षक *पॉवर-अप* था, उसमें मुख्य अतिथि के रूप में आरआई अध्यक्ष होल्गार नाक थे, जहाँ उन्होंने रोटरी की विविधता, एकता और समावेश की नीतियों पर ज़ोर दिया। उन्होंने क्लबों से, महिलाओं को नेतृत्व के लिए प्रोत्साहित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, ''इस साल हमारे रो ई बोर्ड में छह महिलाएँ होंगी और आरआईपीई शेखर मेहता के कार्यकाल में आरआईपीएन जेनिफर जोनस सहित नौ महिलाएँ होंगी।''

इस इंटरैक्टिव मीट में, उन्होंने रोटरी एक्शन ग्रुप्स (आर ए जी) से आग्रह किया कि वे इस क्षेत्र के क्लबों/मंडलों के साथ मिलकर काम करें क्योंकि, आर ए जी, ''रोटरी को उसकी रणनीतिक योजनाओं को प्राप्त करने और सदस्यता बढ़ाने के लिए सपोर्ट करते हैं।'' उनकी पत्नी सुज़ैन ने 2014 से शुरू अपनी रोटेरियन यात्रा को शेयर किया, जब उन्होंने जर्मनी में एक ई-क्लब को किराए पर लिया था। ''हमने सितंबर में शुरू किया था और दिसंबर तक हमारे पास 14 महिलाएँ और 9 पुरुष सदस्य थे। अब हम 36 सदस्य हैं - 11 महिलाएँ और 25 पुरुष।'' विद्या के इस सवाल पर कि रोटरी में और ज़्यादा महिलाओं को कैसे लाया जाए, सुज़ेन ने कहा, ''लचीलेपन से, यह कहते हुए उन्होंने बताया कि दोपहर के भोजन या नाश्ते पर होनेवाली बैठक की बजाय, जो कि रोटरी क्लब नियमित रूप से बुलाते हैं, उनका ई-क्लब रात के 9 बजे बैठक बुलाता है।''

विद्या ने पूछा, क्या आप अपने क्षेत्र के आरएजी के लिए एक निदेशक के रूप में सेवा करना चाहती हैं? सुज़ैन का जवाब था, ''अब मैं होल्गार की टीम में आकर खुश हूँ। उनकी भूमिका अब अधिक महत्वपूर्ण है। अगर उनकी महिला एक और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, तो यह रोटरी के लिए अच्छा नहीं है. हमें विभिन्नता की ज़रुरत है; ऐसी जोड़ी की नहीं जो बहुत कुछ कर रही हो।''

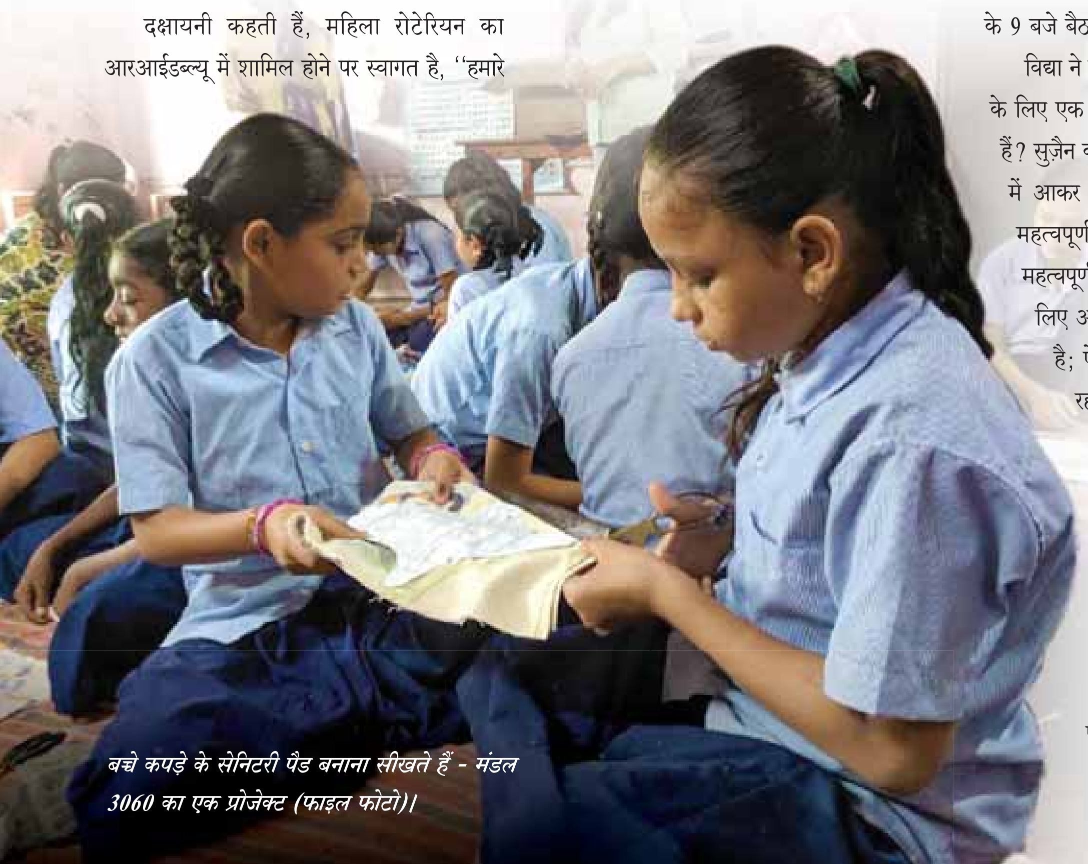

बच्चे कपड़े के सेनिटरी पैड बनाना सीखते हैं - मंडल 3060 का एक प्रोजेक्ट (फाइल फोटो)।

आरएजी-एमएचएच

हर महीने के दूसरे शनिवार को यह ग्रुप विश्व के दर्शकों के साथ महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करता है। एक मीटिंग में 'मासिक-धर्म स्वास्थ्य और स्वच्छता (एम एच एच)' पर चर्चा की गई थी और इस प्रकार एम

एच एच के लिए एक रोटरी एक्शन ग्रुप को बनाने के विचार ने जन्म लिया. आरआई के साथ इसका रजिस्ट्रेशन प्रोसेस में है।

हाल ही में हुए एक मीट, जिसका शीर्षक *हैप्पी पीरियड्स* था, ग्लोबल विन्स के चेयर पीआरआईडी पीटी प्रभाकर ने ग्रुप के मासिक-धर्म स्वच्छता कार्यक्रमों के लिए विन्स की ओर से सपोर्ट का आश्वासन दिया। ''आपका आर ए जी समय की ज़रुरत है, क्योंकि यह खराब मासिक धर्म स्वच्छता को संबोधित करेगा जो कि तीसरी दुनिया के अधिकांश देशों में बैन है,'' उन्होंने कहा।

रो ई मंडल 3190 के आरसी बैंगलोर वेस्ट की सदस्या, डा मीनाक्षी भरत ने मासिक-धर्म कप और फिर से इस्तेमाल किए जानेवाले कपड़े के सेनेटरी नैपकिन के बारे में जानकारी दी। उनके सुझाव, रोटरी को सैनिटरी-पैड डिस्पेंसिंग मशीनों और इन्सिनरेटर में निवेश करना बंद कर देना चाहिए, का स्वागत किया गया। उन्होंने रोटेरियंस से WinS प्रोजेक्ट्स के लिए किए जा रहे कामों की तरह लड़कियों और महिलाओं में एक व्यवहारिक बदलाव की शुरूआत करने का आग्रह किया।

जब प्रभाकर ने कहा, ''यह एक अद्भुत विषय है और मुझे आश्चर्य होता है कि रोटरी ने पहले ऐसा क्यों नहीं सोचा था,'' इस पर डेनिस ने टिप्पणी की, ''मुझे लगता है कि रोटरी में बहुत सारे पुरुष हैं,'' तब इस पर मीनाक्षी ने चुटकी ली, ''पुरुष पीरियड्स के बारे में नहीं सोच सकते।''

यह आर ए जी रोटेरियन और गैर-रोटेरियन दोनों के लिए खुला है और यह दुनिया भर के सर्वोत्तम कार्यप्रणाली को शेयर करने की सुविधा प्रदान करता है, दक्षायनी कहती हैं। ''हमने मई 2021 में, 25 देशों में किए जाने वाले मासिक-धर्म स्वास्थ्य पर एक वैश्विक प्रोजेक्ट की योजना बनाई है। इसके बाद, हम आरआईडब्ल्यू के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के लिए एक आरएजी बनाएँगे. हमारे पास विभिन्न क्षेत्रों में फोकस के साथ काम करनेवाली टीमें होंगी।''

आरआईडब्ल्यू के पास पीडीजी बिल ग्रे (रो ई मंडल 7040, कनाडा) था। टीआरएफ ट्रस्टी गीता मानेक और आरआई उपाध्यक्ष जोह्निता सोलारी ने अपनी आभासी मीटिंग्स को संबोधित किया। ''आरआईपीएन जेनिफर जोनस ने भी हमें संबोधित करने के लिए हमारे निमंत्रण को स्वीकार कर लिया है।'' दक्षायनी के मुताबिक, हम फरवरी में पीआरआईपी मार्क मैलोनी और विल्फ़ विल्किंसन सहित वरिष्ठ नेताओं के साथ एक बड़ी बैठक की योजना बना रहे हैं, जो कि 'अंतरराष्ट्रीय सेवा माह' की तर्ज़ पर होगी।

रो ई ने 2022-23 तक रोटरी में महिलाओं की संख्या और नेतृत्व की स्थिति को 30 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है और आरआईडब्ल्यू उस दिशा में काम करेगी, वह मुस्कुराते हुए कहती हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

जीवन को प्रकाशित करना

टीम रोटरी न्यूज़

इस दिवाली नासिक के पास सागपाड़ा गाँव के रहने वाले एक आदिवासी समुदाय के घरों में बहुत ही प्रकाशमान चमक होगी, रोटरी क्लब नासिक, रो ई मंडल 3030 को धन्यवाद, जिसने रंगीन दीयों की बिक्री के माध्यम से उन्हें आय कमाने का अवसर प्रदान किया है।

इससे पहले, क्लब की अध्यक्षा मुग्धा लेले, सचिव विजय दीनानी और पिछले अध्यक्ष अनिल सुकेनकर ने इस गाँव का दौरा किया था और चूँकि दिवाली नजदीक थी, इसलिए ग्रामीणों को मिट्टी के दीयों को रंगने में प्रशिक्षित करने का निर्णय लिया गया। ''लगभग 12 पुरुषों और महिलाओं को कला में प्रशिक्षित किया गया था। क्लब के सदस्य विनायक देवधर कहते हैं, कि वे दीये बनाने और उन्हें बेचकर कुछ पैसे कमाने के विचार से काफ़ी उत्साहित थे।''

क्लब ने दीयों, रंग और पैकेजिंग सामग्री को खरीदने तथा इन तैयार उत्पादों को नासिक, पुणे और मुंबई के बाजारों में पहुँचाने के लिए ₹1 लाख का माइक्रोक्रेडिट भी बढ़ाया। हमने शिल्पकारों को एक सप्ताह तक रहने और विभिन्न बाजारों में उनके उत्पाद बेचने के लिए बोर्डिंग और ठहरने का खर्च भी उठाया।

क्लब पिछले पाँच वर्षों में, ₹5 लाख के अपने कोष के माध्यम से विशिष्ट प्रयोजनों के लिए माइक्रो-लोन का विस्तार कर रहा है और हमने एक बार भी किसी डिफ़ॉल्ट का सामना नहीं किया है।

देवधर को भरोसा है कि सजावटी दीये कम से कम ₹40,000 की शुद्ध आय प्राप्त करेंगे, और प्रत्येक ग्रामीण को एक सप्ताह के काम के लिए ₹3,500 प्रदान करेंगे। ■

पूरे भारत में रोटेरियन ने किए महामारी राहत-कार्य

वी मुत्तुकुमारण

जैसे ही कोविड महामारी ने नाराज़गी जताई और लाखों लोगों को संक्रमित किया, वैसे ही हमारे रोटेरियन इस लॉक-डाउन के दौरान पूरे देश भर के हमारे अग्रिम योद्धाओं (डॉक्टर्स, नर्सेज़, स्वास्थ्य कर्मचारी), अस्पतालों, स्वास्थ्य विभागों, ज़रूरत-मंद परिवारों और प्रवासी-मजदूरों तक पहुँच गए। रोटरी क्लबों ने अक्टूबर तक 30 मिलियन डॉलर के कोविड-राहत प्रोजेक्ट किए हैं, जिसमें कोविड देखभाल-केंद्र स्थापित करना, उपकरण दान करना, पीपीई किट और अस्पतालों को अन्य महत्वपूर्ण आपूर्ति और हजारों ज़रूरतमंद परिवारों को बड़े पैमाने पर भोजन और किराने की किट वितरित करना शामिल है।

अस्पतालों में कोविड रोगियों के लिए बिस्तर की कमी होने की वजह से ज़्यादातर लोगों को उनके घरों में ही क्वारन्टाइन किया जा रहा है, **रो ई मंडल 3132** के पीडीजी डॉ हरिप्रसाद सोमानी ने, लातूर में छह रोटरी क्लबों के अध्यक्षों और जिला-अधिकारियों जिसमें पीडीजी विजय राठी और डीजीई डॉ ओम मोतीपावाले शामिल थे के परामर्श से, अपने घरों में क्वारन्टाइन जरूरतमंद मरीजों को ऑक्सीजन-कॉन्सन्ट्रेटर मशीनों की आपूर्ति करने का निर्णय लिया। सुधीर लातुरे और राज धूत द्वारा प्रबंधित प्रोजेक्ट के लिए 11 मशीनों की खरीद के लिए कई रोटेरियन ने दान दिया।

लातूर के जिला कलेक्टर जी श्रीकांत और महापौर विक्रांत गोजमगुंडे ने रोटेरियन के प्रयासों की सराहना की। पीडीजी सोमानी ने कहा, ''मरीजों की प्रतिक्रिया को देखने के बाद, रोटरी क्लबों ने समुदाय के लिए अधिक-से-अधिक ऑक्सीजन मशीनें खरीदने का फैसला लिया है।''

प्रोजेक्ट करुणा

रो ई मंडल 3292 के रोटरी क्लब बेलूर ने 6,600 पीपीई किट, 6,600 N95 मास्क और 3,300 फेस शील्ड्स, हमारे अग्रिम योद्धाओं को दान किया। *करुणा - हमारे मुक्तिदाताओं को बचाओ* एक वैश्विक अनुदान प्रोजेक्ट है, जिसे टीआरएफ से 47,774 डॉलर प्राप्त हुआ। एक बड़ी रकम सोशल-मीडिया के माध्यम से जुटाई गई। इस प्रोजेक्ट की कल्पना क्लब के चिकित्सा निदेशक आनंद अग्रवाल ने अपने दोस्तों - सिंगापुर के अयान सेन, बेल्जियम की मोनालिसा सेन, ऑस्ट्रेलिया की अर्पिता चटर्जी और अर्कदीप कुमार के विचारों को ध्यान में रखते हुए किया था। हम अपने वैश्विक साझेदारों, रोटरी क्लब सिंगापुर और रोटरी क्लब सिंगापुर-नॉर्थ के शुक्रगुजार हैं कि जिन्होंने अनुदान निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई,

DG रश्मि कुलकर्णी (बाएं) के साथ RIDE डॉ महेश कोटबागी (बाएं से 6th) DGE पंकज शाह (दाएं से 4th), DGN डॉ अनिल परमार (बाएं से 3rd) और PDG यों ने रोटरी लोगो के साथ पीपीई किट प्रस्तुत किया।

इंटरेक्शन क्लब लक्ष्मी स्कूल की समन्वयक पद्मजा ऋषि कोविड -राहत सामग्री दान सामग्री, मदुरै निगम आयुक्त एस विसाकन को सौपते हुए।

आरसी बेलूर के अध्यक्ष, आलोक कुमार कनोडिया ने कहा। कोविड किट के वितरण के समय डीजीई प्रबीर चटर्जी, पीडीजी रवि सहगल, सचिव अमर कुमार मल्होत्रा और क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

रो ई मंडल 3291 के रोटरी क्लब न्यू अलीपुर, कलकत्ता ने लॉक-डाउन के दौरान ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने के लिए एक दूर-दराज के गाँव की स्कूली लड़कियों को स्मार्टफोन दिया, क्लब के अध्यक्ष अजय बलदावा ने कहा। रो ई मंडल 3054 के **रोटरी क्लब हिम्मतनगर** के डीजी राजेश अग्रवाल ने कोविड-राहत पहल के लिए एक वैश्विक प्रोजेक्ट के तहत 'कृष्णा सार्वजनिक अस्पताल' में तीन BiPap मशीनें दान कीं। डीआरएफसी ललित शर्मा, पीडीजी जगदीश पटेल और अन्य रोटेरियन इस हैंड-ओवर इवेंट में मौजूद थे।

इंदौर के अस्पताल के लिए उपकरण

रो ई मंडल 3040 के डीजी गजेंद्र नारंग ने, इंदौर के एमआरटीबी अस्पताल में, 10 BiPap मशीनें (फेफड़ों में हवा भरने के लिए), 25 नेबुलाइज़र, 100 ऑक्सीमीटर, 500 विशेष गैर-साँस लेनेवाले मास्क, एक कॉफ़ी वेंडिंग मशीन, 25 दीवार घड़ियाँ और कोविड रोगियों के उपचार के लिए अन्य सहायक वस्तुओं को दान किया।

यह वैश्विक अनुदान प्रोजेक्ट संयुक्त रूप से की गई थी, जिसमें रोटरी क्लब इंदौर मेघदूत और इंदौर नार्थ, के साथ में रो ई मंडल 3292 के रोटरी क्लब काठमांडू उनके अंतर्राष्ट्रीय भागीदार के रूप में शामिल थे। कार्यान्वियन क्लब रोटरी क्लब इंदौर मेघदूत, कोविड-रोगियों का इलाज करने वाले अस्पतालों की सहायता करने के लिए 35000 डॉलर की लागत वाला कोविड-राहत प्रोजेक्ट कर रहा है। रोटरी क्लब इंदौर मेघदूत के आईपीपी घनश्याम सिंह ने कहा, आईपीडीजी धीरन दत्ता ने इस GG प्रोजेक्ट में हमारा समर्थन किया और वैश्विक भागीदार बनाया।

रोटरी क्लब न्यू पनवेल, रो ई मंडल 3131 ने 100 से अधिक पुन: प्रयोज्य पीपीई किट के साथदो धर्मार्थ अस्पतालों और एक डायलिसिस सेंटर को दान दिया।

रो ई मंडल 3070 के अंतर्गत रोटरी क्लब अमृतसर-नार्थ के आईपीडीजी सुनील नागपाल के कार्यकाल में स्वीकृत जिला अनुदान प्रोजेक्ट के लिए शहर के सर्किट हाउस में पीपीई किट के वितरण के लिए एक प्रोजेक्ट-मीटिंग की गई थी।

किराना सामग्री की किट

रो ई मंडल 3190 के अंतर्गत, **रोटरी क्लब बैंगलोर** लेकसाइड क्षेत्र के निवासी-कल्याण-संघ ने क्राउड-फंडिंग द्वारा किराना सामग्री की किट देहाड़ी मजदूरों, प्रवासी परिवारों और सड़क के किनारे बेचने वालों को दान में दी।

पहले चरण में, क्लब ने एक प्रवासी कॉलोनी में रहने वाले 1,300 परिवारों तक यह किट पहुँचाई। जैसा कि लॉकडाउन फैला हुआ था, इसलिए रोटेरियन्स ने इस बार अज़ीम प्रेमजी परोपकारी पहल (एपीपीआई) के समर्थन से बेंगलूरु के पूर्वी और दक्षिणी हिस्सों में अन्य 2,000 परिवारों की मदद की। इस प्रोजेक्ट पर ₹14 लाख का खर्चा आया। क्लब के सदस्य जयंत तिवारी ने कहा, ''हम लंबे समय से अन्य प्रोजेक्ट में भी एपीपीआई के साथ काम कर रहे हैं और वे हमारे साथ बहुत खुश हैं।''

तीसरे चरण में, एक जर्मन कॉर्पोरेट 'फ्रायडेनबर्ग इंटरनेशनल' के माध्यम से यूरो 22,000 की फंडिंग के साथ, रोटेरियन ने शहर के विभिन्न हिस्सों में अनाथालयों, ऑटो चालकों, आशा किरण कार्यकर्ताओं, किन्नर समुदायों और कचरा चुनने वालों को किराने का सामान वितरित किया।

क्लब ने एक महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम मप्रोजेक्ट दुर्गाफ के साथ भागीदारी की, और 3,000 से अधिक जरूरतमंद लोगों को राशन-किट और प्रसाधन-सामग्री मुहैया कराया। तिवारी ने कहा, हमने चार महीनों के लॉकडाउन में शहर से 400 किलोमीटर दूर तक फैले हुए लगभग 10 गाँवों की यात्रा की है।

क्लब बेंगलुरु के विक्टोरिया, मैसूर के बॉरिंग, मंड्या के निमहांस और कोलार के किदवई के अस्पतालों को चिकित्सा उपकरण और पीपीई किट

बाएं से: प्रोजेक्ट सह-अध्यक्ष राज धूत, पीडीजी डॉ हरिप्रसाद सोमानी, डीजीई ओमप्रकाश मोतीपुर, लातूर महापौर विक्रांत गोजमगुंडे और जिला कलेक्टर जी श्रीकांत।

प्रदान कर रहा है। क्लब कोविड पीड़ितों का अंतिम संस्कार करने के लिए स्वयंसेवकों के एक समूह ममर्सी एंजेल्सफ को सपोर्ट कर रहा है।

मदुरइ के सरकारी अस्पताल के लिए विशेष उपकरण

बच्चों को कोविड से बचाने के लिए, रो ई मंडल 3000 के रोटरी क्लब मदुरइ नार्थ ने स्मॉल माइक्रोफ़ाइनेंस द्वारा फंड किए गए, मदुरइ के मराजाजी सरकारी अस्पताल, के बाल-विभाग को ₹7 लाख के उपकरण दान किए हैं, आईपीपी डीएन गोवर्धन ने कहा।

एक नई फंड निर्माण योजना के तहत, रो ई मंडल 3000 के रोटरी क्लब मदुरइ मिडटाउन द्वारा प्रायोजित *इंटरेक्ट क्लब ऑफ़ लक्ष्मी स्कूल* ने एक डिजिटल कला प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें 70 प्रतिशत छात्रों ने भाग लिया। इंटरेक्ट एडवाइजर, आर श्रीनिवासन ने कहा, ''इंटरेक्टर्स ने अपने माता-पिता की मदद से ₹2.32 लाख जुटाए और मदुरइ के जिलाधिकारी डॉ टी जी विनय को सौंपे।'' इंटरेक्ट क्लब ने जिला कलेक्ट्रेट, पुलिस आयुक्त कार्यालय और मंडल स्वास्थ्य विभाग को ऑक्सीमीटर, पीपीई किट और फर्नीचर भी दान किया।

रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड के रोटेरियन जरूरतमंदों को किराने का सामान वितरित करते हुए।

डोंडइचा में ऑक्सीजन-लाइन स्टेशन

रो ई मंडल 3060 के **रोटरी क्लब डोंडइचा सीनियर्स** ने एक केंद्रीय ऑक्सीजन लाइन स्थापित किया, जिसके माध्यम से एक अकेला सिलिंडर 12 कोविड रोगियों की ज़रूरतों को एक साथ पूरा कर सकता है। यह डोंडइचा के उप-जिला नागरिक अस्पताल में डॉक्टरों द्वारा किए गए अनुरोध के 24 घंटों के भीतर ही स्थापित कर दिया गया था। ₹3.47 लाख की लागत वाली यह सेवा कोविड की मौतों को टालने या कम करने में मदद करती है। क्लब इस ऑक्सीजन-सप्लाई नेटवर्क को बनाए रखेगा। ₹35,000 के मासिक खर्च पर एक मस्वैब संग्रह कक्ष' भी स्थापित किया गया है।

प्रोजेक्ट का उद्घाटन विधायक जयकुमार रावल ने किया; डीजी प्रशांत जानी और एजी अनीश शाह ने ऑनलाइन बैठक में भाग लिया।

बढ़ते रोगियों की संख्या के साथ-साथ, ऑक्सीजन सिलिंडरों की बढ़ती माँग को ध्यान में रखते हुए, क्लब ने उप-जिला नागरिक अस्पताल को रोज़ाना पाँच सिलिंडरों की सप्लाई करने का निर्णय लिया है। इस पर मासिक खर्चा ₹75,000 आता है। ■

ताइपे के आकर्षक मंदिर

सूसी एल मां

अगर आप , 2021 के रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन, के लिए 12-16 जून ताइपे में हैं, तो शहर के कुछ मंदिर और अन्य स्मारकों को देखने जरूर जाएँ। ताइपे के सबसे लोकप्रिय में से एक लुंगशान मंदिर, मुख्य रूप से यह एक बौद्ध मंदिर है, यह नक्काशीदार और चित्रित संरचना मूल रूप से 1738 में बनाई गई थी और यह पूजा का एक सक्रिय स्थान बनी हुई है। मंदिर परिसर एक शांत स्थान हैं।

इस मंदिर में 100 से अधिक देवताओं का प्रतिनिधित्व किया जाता है, जिसमें दया की देवी और युद्ध के देवता शामिल हैं। छात्र परीक्षा से पहले, साहित्य के संरक्षक देवता वेनचांग से प्रार्थना करने आते हैं, और न्याय और सम्मान के मामलों पर लोग गुआन यू से सलाह लेते हैं, जो चीनी लोकगीतों के एक प्रसिद्ध योद्धा हैं। एमआरटी, ताइपे की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली की नीली रेखा पर इसके खुद के ठहराव के माध्यम से आसानी से मंदिर पहुँचा जा सकता है।

ज़ाइहाई शहर के गॉड टेम्पल को मैचमेकर गॉड , या ओल्ड मैन अंडर द मून की मूर्ति के लिए जाना जाता है, जो कुछ लोग उन्हें बुलाते थे। यह मंदिर दिहुआ स्ट्रीट पर है, जो पारंपरिक औषधीय और कारीगर की दुकानों के साथ-साथ फैशनेबल बुटीक और कैफे से भरा है।

चियांग काई-शेक मेमोरियल हॉल ताइपे की सबसे प्रमुख ऐतिहासिक संरचना है, जिसे चीन गणराज्य के पूर्व राष्ट्रपति को श्रद्धांजलि के रूप में बनाया गया है। यह हॉल एक काम्प्लेक्स का हिस्सा है जिसमें दो प्रदर्शन कला भवन, एक बड़ा प्लाज़ा, अतिसुन्दर उद्यान और शांतिपूर्ण तालाब शामिल हैं। आप सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे के बीच गार्ड को बदलते देख सकते हैं।

convention.rotary.org पर अधिक जानें और रेजिस्टर करें।

2021 TAIPEI

2021-22 की इंटरेक्ट एडवाइज़री काउंसिल में सेवा देने के लिए आवेदन करें

रोटरी के इतिहास में पहली बार इंटरेक्टर और इंटरेक्ट के पूर्व छात्रों का एक ग्रुप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सेवा करने और आरआई बोर्ड को इंटरेक्ट के भविष्य को आकार देने की सलाह देगा. इंटरेक्ट एडवाइज़री काउंसिल में सलाहकार के रूप में दुनिया भर के आठ वर्तमान इंटरेक्टर और दो हाल के भूतपूर्व इंटरेक्टर छात्र शामिल होंगे।

पात्रता मापदंड

आवेदन के समय आवेदक इंटरेक्टर एक सक्रिय इंटरेक्ट क्लब में वर्तमान सदस्य होना चाहिए और उसकी आयु कम से कम 13 वर्ष होनी चाहिए. उसे 30 जून 2022 तक एक सक्रिय इंटरेक्टर बनने की योजना बनानी चाहिए. भूतपूर्व इंटरेक्ट सलाहकार छात्र आवेदकों को एक रोटेरियन, रोटरैक्टर या भूतपूर्व छात्र होना चाहिए और जो हाल ही में (पिछले 5 वर्षों के भीतर) एक इंटरेक्ट क्लब का सदस्य रहा हो. लघु वीडियो के साथ एप्लिकेशन को पूरा करें, जिसमें अपनी आवाज़ में यह बतायें कि ऐसा क्यों लगता है कि आपको इस असाइनमेंट के लिए चुना जाना चाहिए. 20 दिसंबर, 2020 से पहले आवेदन जमा करना होगा. अंग्रेजी में संवाद करने में काबिल लोगों को पसंद किया जाता है.

परिषद के सदस्यों को चाहिए कि वे 2-3 आभासी बैठकों में ईमेल के माध्यम से सहयोग करें और भाग लें. जबकि अपने स्कूल, परिवार, कार्य, क्लब, आदि के लिए अपने व्यक्तिगत कर्तव्यों को पूरा करने में सक्षम होने के साथ-साथ; इंटरेक्ट के बारे में जोशीले हों और रोटरी के एक्शन प्लान के साथ सामंजस्य रखते हुए आपके विचारों में नवीनता हो.

ज़्यादा जानकारी के लिये : http://on.rotary.org/InteractAdvisoryCouncil पर जाएं।

एक सफल वैश्विक अनुदान स्वीकृति के लिए

उत्सव आर दोषी

वैश्विक अनुदान के माध्यम से रोटरी क्लब मुंबई कफ परेड द्वारा प्रदान की गयी वर्षा जल संचयन सुविधा।(फाइल फोटो)

टीआरएफ के पास वैश्विक अनुदान आवेदनों का पुनरीक्षण करने की एक अत्यंत विश्वसनीय प्रणाली है। आवेदनों की प्राप्ति के दौरान, धनराशि के वितरण से पहले और कार्यान्वयन की समीक्षा करते समय मानक संचालन प्रक्रिया का पालन किया जाता है। इस तीन-स्तरीय फ़िल्टर सिस्टम ने रोटरी को वह बनाने में एक अहम भूमिका निभाई जो वह आज है और जो उसकी पारदर्शिता, अखंडता और सबसे महत्वपूर्ण रूप से जीवंत परियोजनाएं करने की क्षमता के अनुरूप है।

एक परियोजना के किसी भी स्तर पर ऑडिट के लिए अनुदान की जांच की जा सकती है। ऑडिट के दौरान, मैं अक्सर देखता हूं कि सभी गलतियाँ दुर्भावपूर्ण नहीं होती हैं; गलतियों का मुख्य कारण क्लब के सदस्यों का टीआरएफ प्रोटोकॉल के साथ अच्छी तरह से वाकिफ न होना होता है। इस लेख का उद्देश्य इस बात की स्पष्ट जानकारी देना है कि एक सफल ऑडिट के लिए क्या करें और क्या न करें।

यह करें

- प्रत्येक अनुदान के लिए एक अलग बैंक खाता खोलें जिसमें स्पष्ट रूप से निर्धारित किए गए उत्तरदायित्वों के साथ उस खाते को संचालित करने का लिखित ब्योरा हो।
- अनुदान समिति सदस्यों की पहुँच तक एक समर्पित फ़ाइल रखें जिसमें (1) परियोजना प्रस्ताव, सामुदायिक मूल्यांकन सर्वेक्षण आदि की पुष्टि करने वाली क्लब की बैठक का लिखित ब्योरा (2) मुद्रांकित बैंक विवरण (नेट-बैंकिंग से डाउनलोड नहीं किए गए); (3) कोटेशन और क्रय आदेश; (4) चालान; (5) अनुदान प्रबंधन समिति की बैठकों के लिखित विवरण (6) रोटरी और विक्रेताओं के साथ किए गए संचार के प्रिंट आउट; (7) सांविधिक और नियामक स्वीकृति का प्रमाण; (8) भुगतान की पुष्टि पावती; (9) वारंटी/रखरखाव समझौते और अन्य जैसी सभी चीजें मौजूद हो परंतु केवल यहीं तक सीमित न हो। इन सभी दस्तावेजों को स्कैन करना और उन्हें क्लाउड पर या आपके मेलबॉक्स में संलग्न वस्तु के रूप में अपलोड करना सबसे अच्छा अभ्यास है।
- हर परिस्थिति में संवहनीयता के बारे में सोचें। अगर टंकी ना हो तो सोने से बना शौचालय खंड भी बेकार है। और इसी तरह, एक टूटे पैर वाली स्कूल बेंच एक बोझ है, वरदान नहीं। किसी परियोजना को जीवित रखने का एक तरीका है समय-समय पर उसकी निगरानी करना। बारीकी से निरीक्षण करने का कार्य सौंपने के लिए मौजूदा क्लब के सदस्यों के बीच एक समिति का गठन करें।
- परियोजना स्थल पर एक ऊँचा और स्पष्ट रोटरी पहचान सूचक लगाएं। ताकि आने-जाने वाले प्रत्येक लाभार्थी रोटरी का नाम पढ़ सकें। एक पहचान सूचक जिसमें दानकर्ताओं, कॉर्पोरेटों, सहयोगी संगठन, क्लब के अधिकारियों का नाम

हो किन्तु रोटरी का लोगो छोटा हो तो वह एक संगठन के रूप में रोटरी और उसके रोटेरियनों द्वारा किए जाने वाले अच्छे काम को प्रत्यक्ष रूप से बाहर लाने में विफल होगा।

- सहयोगी संगठन के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करें। यह क्षेत्रीय भाषा में भी हो सकता है जिसे बाद में एक प्रमाणित अनुवादक द्वारा अनुवादित किया जा सकता है।
- एक कैडर स्रोत से मदद प्राप्त करें। RISAO एक नजदीकी कैडर रोटेरियन की पहचान करने में मदद कर सकता है।

क्या न करें

- ❖ आवेदन में बिना सोचे समझे लाभार्थी संख्या न दें। वास्तविक बनें। उदाहरण के लिए, जब आप कहते है कि एक नैदानिक केंद्र से सालाना 20,000 रोगियों के लाभान्वित होने की उम्मीद है जबकि वास्तव में पूरे अस्पताल में आने वाले मरीजों की कुल संख्या ही 12,000 है। इसलिए उस नैदानिक केंद्र के लिए इस आँकड़े तक पहुँचना असंभव होगा।
- ❖ क्लब के सदस्यों या उनके रिश्तेदारों से सामानों या सेवाओं की खरीदी न करें, जब तक कि अनुदान प्रबंधन समिति के साथ-साथ रोटरी अधिकारियों के हर एक व्यक्ति को इसकी जानकारी न हो और यह बहुत ही आवश्यक न हो।
- ❖ जब तक सामानों या सेवाओं के समान सेट के लिए 3-5 कोटेशन प्राप्त नहीं होते, तब तक किसी भी विक्रेता को लेकर अंतिम निर्णय न लें।
- ❖ नकद में बड़े मूल्य का भुगतान न करें; विक्रेता को बैंकिंग मोड के माध्यम से ही लेन-देन करने हेतु राजी करें। याद रखें कि आजकल एक किसान के पास भी बुनियादी बैंक खाता होता है।
- ❖ प्रशिक्षण की आवश्यकता को महत्वहीन न समझें, यह किसी भी सफल परियोजना के लिए आवश्यक है।
- ❖ जब परियोजना के निष्पादन में समय लग रहा हो तो संस्थान से धन की मांग न करें।
- ❖ मुझे आशा है कि यह लेख आपको अपने कैडर ऑडिटर को खाली हाथ, बिना किसी काम के बोझ के एक खुश दिल के साथ अलविदा कहने में मदद करेगा। मैं कैडर प्रमुख, प्रबंधक कर्मचारी और साथी कैडर सहयोगियों को उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूं।
- ❖ अस्वीकरण: इस लेख का दायरा उतने शब्दों तक सीमित है जितने प्रिंट किए जा सकते है। इसमें लिखी किसी भी चीज़ के बावजूद, हर बार कृपया अनुदान स्वीकृति के लिए टीआरएफ दिशानिर्देशों का पालन करें। विभिन्न प्रकार के ऑडिट की अलग-अलग आवश्यकताएं होती है; यहां उल्लिखित आइटम परियोजना की वित्तीय लेखा परीक्षा के बाद के मार्गदर्शन का केवल एक सहारा मात्र है।

लेखक एक वैश्विक अनुदान तकनीकी समन्वयक है - वित्तीय लेखा परीक्षा।

Rotary PEOPLE OF ACTION

आदिवासी महिलाएँ मशरूम की खेती सीख रही हैं

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब राउरकेला स्टील सिटी, रो ई मंडल 3261 पहल के कारण, राउरकेला के जबनपोश और आसपास के दूसरे गाँव की आदिवासी महिलाएँ अपनी आजीविका के लिए मशरूम की खेती करना सीख रही हैं। ''ग्रामीणों के लिए जीवन कठिन हो गया है। कोविद ने उनकी नौकरियाँ छीन ली थी और वे काम की तलाश में बाहर नहीं जा सकती थीं,'' क्लब की सचिव एनाबेले डिसूज़ा कहती हैं।

परियोजना की सह-अध्यक्षा, गौरी नाग, मशरूम की खेती में कुशल हैं और क्लब अध्यक्षा सुचिस्मिता बिस्वास के समर्थन से, उन्होंने स्वयं-सहायता समूह के पहले बैच को सीप मशरूम उगाने के लिए प्रशिक्षित किया, जिसमें 20 महिलाएँ शामिल हैं। स्थानीय खाद्य और सुरक्षा अधिकारी ने उनको स्वच्छ और स्वस्थ रहने की प्रक्रिया के बारे में समझाया। एनाबेले कहती हैं, ''जैसा कि पश्चिमी ओडिशा में अनुदानित दरों पर बीज की

परियोजना के सह-अध्यक्ष गौरी नाग जबापानपोश गाँव में महिलाओं को मशरूम खेती शिक्षण प्रधान करती हुई।

आपूर्ति के लिए कृषि अनुसंधान केंद्र का अभाव है, इसलिए SHG को हम बीज उपलब्ध कराएँगे। उन्हें विश्वास है कि प्रत्येक परिवार प्रतिदिन कम से कम ₹100 कमा सकता है और ''हम अपने दायरे के क्षेत्रों में इन उपज को बाजार में लाने में भी मदद करेंगे।'' प्रोजेक्ट चेयरमैन कुमार बेहरा महिलाओं की सहायता के लिए सरकार के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। ■

MAGAZINES

Read all about 'em

Rotary's magazines reach audiences around the world

Rotary launched *The National Rotarian*, a magazine for its members, in 1911. Since then, we've undergone two name changes, to *The Rotarian* in September 1912 and to *Rotary* in September 2020. As the Rotary movement spread across the globe, members from other parts of the world began publishing magazines of their own to spotlight local Rotary stories; there are now 34 regional magazines in 25 languages serving members in 129 countries and geographic areas. Rotary's magazines provide a direct link between Rotary International and each of its members, sharing news and information and inspiring readers with stories of people of action. In honour of this magazine's 110th anniversary, here's a look at the scope of all of Rotary's magazines.

Compiled by Donna Cotter

Extra, extra
As part of a pilot programme, Rotary Russia is published as a digital-only magazine serving Chechnya and Russia. And in Venezuela, where hyperinflation makes subscriptions prohibitively expensive, Revista Rotaria continues to publish for a limited readership.

(Rotary News Trust (RNT), India, also brings out a quarterly issue of Rotaract News which is mainly a digital publication. RNT believes this is the only Rotaract magazine that is published by a regional Rotary magazine.)

THE ESSENTIALS

▸ Rotary
First published: **1915**
Language: **English**
Circulation: **45,000**
Areas served: Great Britain and Ireland
rotarygbi.org/magazine
Facebook: /RotaryinGBI
Twitter: @RotaryGBI
YouTube: /RIBImarketing

▸ Rotary Canada
(a quarterly supplement to *Rotary* magazine in North America)
First published: **2009**
Languages: **English and French**
Circulation: **22,700**
Area served: Canada
Email: rotarycanada@rotary.org

▸ Rotary en México
First published: **2017**
Circulation: **5,500**
Language: **Spanish**
Area served: Mexico

▸ Rotary en el Corazón de las Americas
First published: **2017**
Language: **Spanish**
Circulation: **3,700**
Areas served:
Costa Rica, Dominican Republic, El Salvador, Guatemala, Honduras, Nicaragua, and Panama
rotaryca.org
Facebook: /rotaryca.org

▸ Revista Colombia Rotaria
First published: **1970**
Language: **Spanish**
Circulation: **2,300**
Area served: Colombia
colombiarotaria.com
Facebook: /Revista-Colombia-Rotaria-117107886359044
YouTube: /channel/UCGrZVr8m1D782sItBroUb3A

Total circulation
1.08 million

▸ Rotary
First published: **1911**
Language: **English**
Circulation: **400,000**
Areas served: United States and Canada
rotary.org/magazines
Facebook: /rotary
Twitter: @Rotary

▸ España Rotaria
First published: **2001**
Language: **Spanish**
Circulation: **5,000**
Area served: Spain
Facebook: /España-Rotaria-604139663042334/

▸ El Rotario Peruano
First published: **1932**
Language: **Spanish**
Circulation: **2,300**
Areas served: Ecuador and Peru
revistarotaryperu.com
Facebook: /el.r.peruano
Twitter: @RotarioPeruano

▸ Vida Rotaria
First published: **1955**
Language: **Spanish**
Circulation: **7,900**
Areas served: Argentina, Bolivia, Paraguay, and Uruguay
editorialrotariaargentina.com.ar

▸ Revista Rotary Brasil
First published: **1924**
Language: **Portuguese**
Circulation: **46,500**
Area served: Brazil
revistarotarybrasil.com.br
Facebook: /revistarotarybrasil
Twitter: @revistarotarybr
YouTube: /BrasilRotario

▸ El Rotario de Chile
First published: **1927**
Language: **Spanish**
Circulation: **4,000**
Area served: Chile
elrotariodechile.org

Illustration by Francesco Muzzi/StoryTK

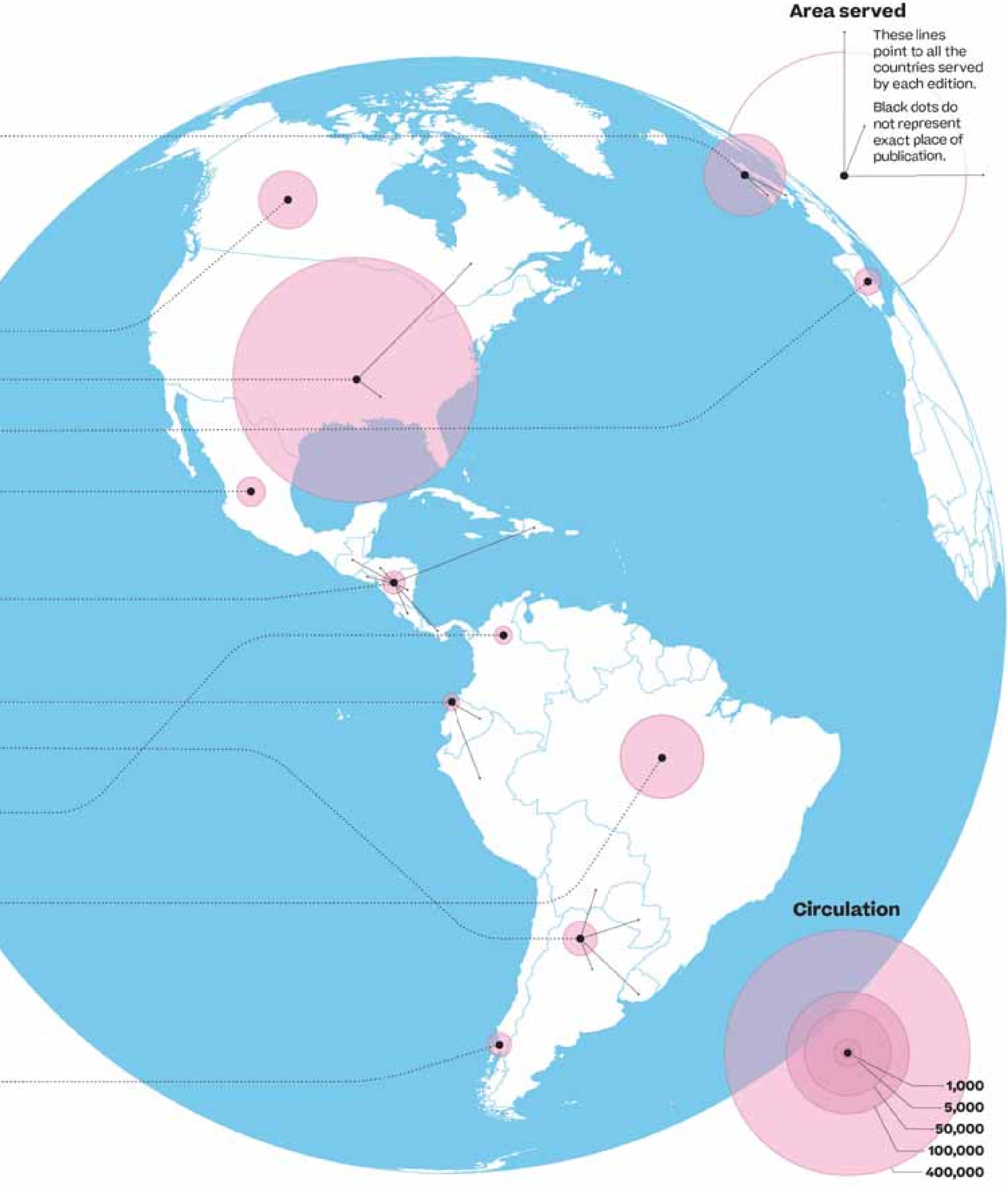

Area served
These lines point to all the countries served by each edition.
Black dots do not represent exact place of publication.
Circulation
1,000
5,000
50,000
100,000
400,000

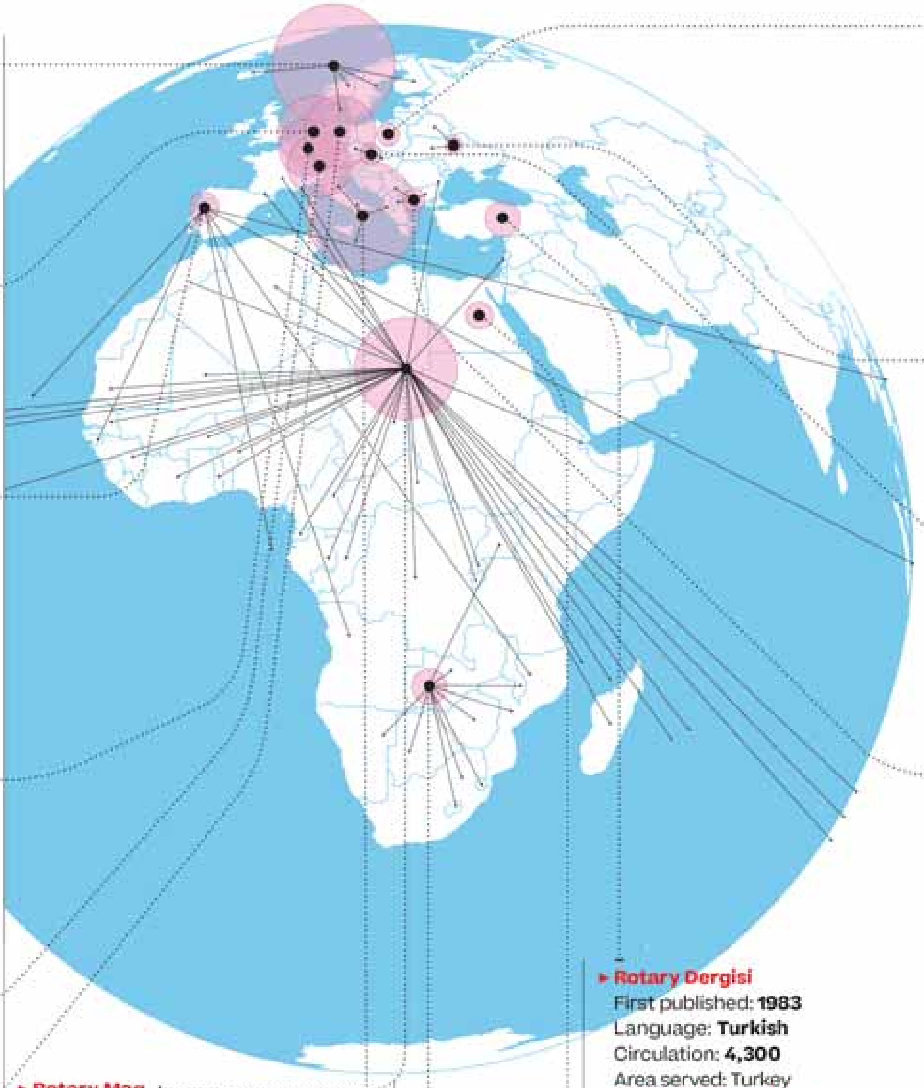

▸ Rotary Norden
First published: **1936**
Languages: **Danish, Finnish, Norwegian, and Swedish**
Circulation: **50,000**
Areas served: Denmark, Finland, Iceland, Norway, and Sweden
rotary.no/no/rotary-norden

▸ Rotary Magazine
First published: **1927**
Language: **Dutch**
Circulation: **17,300**
Area served: The Netherlands
rotary.nl/rotarymagazine
Facebook: /RotaryNL

▸ Portugal Rotário
First published: **1984**
Language: **Portuguese**
Circulation: **3,100**
Areas served: Angola, Cabo Verde, Democratic Republic of Timor-Leste, Guinea-Bissau, Macao, Mozambique, Portugal, São Tomé and Príncipe
portugalrotario.pt
Facebook: /portugalrotario

▸ Rotary Contact
First published: **1984**
Languages: **Dutch and French**
Circulation: **11,000**
Areas served: Belgium and Luxembourg
rotarybelux.org
Facebook: /RotaryBelux

▸ Rotary Suisse Liechtenstein
First published: **1926**
Languages: **French, German, and Italian**
Circulation: **13,200**
Areas served: Liechtenstein and Switzerland
rotary.ch

▸ Rotary Magazin
First published: **1929**
Language: **German**
Circulation: **64,000**
Areas served: Austria and Germany
rotary.de
Facebook: /RotaryDeutschland
Twitter: @RotaryDE

▸ Rotary Italia
First published: **1924**
Language: **Italian**
Circulation: **41,000**
Areas served: Albania, Italy, Malta, and San Marino
rotaryitalia.it
Facebook: /RotaryItalia

▸ Rotary Mag
First published: **1952**
Language: **French**
Circulation: **33,600**
Areas served: Algeria, Andorra, Benin, Burkina Faso, Burundi, Cameroun, Central African Republic, Chad, Comoros, Côte d'Ivoire, Democratic Republic of Congo, Djibouti, Equatorial Guinea, France, French Guiana, French Polynesia, Gabon, Guadeloupe, Guinea, Lebanon, Madagascar, Mali, Martinique, Mauritania, Mauritius, Mayotte, Monaco, Morocco, New Caledonia, Niger, Republic of the Congo, Réunion, Romania, Rwanda, Saint Pierre and Miquelon, Senegal, Togo, Tunisia, and Vanuatu
rotarymag.org
Facebook: /RotaryMag
Twitter: @rotarymagfr

Languages

25

▸ Rotary Dergisi
First published: **1983**
Language: **Turkish**
Circulation: **4,300**
Area served: Turkey
rotarydergisi.com.tr

▸ Rotary Magazine
First published: **1929**
Languages: **Arabic, English, and French**
Circulation: **2,500**
Area served: Egypt
rotaryd2451.org
Facebook: /RotaryD2451
Twitter: @RotaryD2451

▸ Rotary Africa-South
First published: **1927**
Language: **English**
Circulation: **4,000**
Areas served: Botswana, Eswatini, Lesotho, Malawi, Mozambique, Namibia, South Africa, Uganda, Zambia, and Zimbabwe
rotaryafrica.com
Facebook: /rotaryafricamag

Rotary Polska
First published: **2017**
Language: **Polish**
Circulation: **1,600**
Area served: Poland
rotary.org.pl/media/magazyn-rotary-polska
Facebook: /RotaryPolska

Rotariets
First published: **2007**
Language: **Ukrainian**
Circulation: **1,000**
Areas served: Belarus and Ukraine
rotarietsmagazineukr.readz.com
Facebook: /RotaryInUkraine
Twitter: @RotaryUkraine

Rotary Good News
First published: **1990**
Languages: **Czech and Slovak**
Circulation: **1,500**
Areas served: Czech Republic and Slovakia
rotary2240.org/cs/good-news
Facebook: /RotaryDistrict2240

Rotari na Balkanite
First published: **1995**
Language: **Bulgarian**
Circulation: **1,700**
Areas served: Bulgaria, North Macedonia, and Serbia
rotary.bg
Facebook: /profile.php?id=100009822010550

Philippine Rotary
First published: **1978**
Language: **English**
Circulation: **18,200**
Area served: Philippines
rotaryphilippines.com

Rotary Down Under
First published: **1965**
Language: **English**
Circulation: **32,400**
Areas served: American Samoa, Australia, Cook Islands, Democratic Republic of Timor-Leste, Fiji, French Polynesia, Kiribati, New Caledonia, New Zealand, Norfolk Island, Papua New Guinea, Samoa, Solomon Islands, Tonga, and Vanuatu
rotarydownunder.com.au
Facebook: /rotarydownunder
Twitter: @rotarydownunder
Pinterest: /rotarydownunder

Regional magazines

34

Countries and geographic areas

129

Rotary Thailand
First published: **1983**
Language: **Thai (with English online)**
Circulation: **8,300**
Areas served: Cambodia, Laos, Myanmar, and Thailand
rotarythailand.org/mag
Facebook: /rotarythailand

Rotary News
First published: **1952/1983/2018**
Languages: **English/Hindi/Tamil**
Circulation: **127,000**
Areas served: India, and Nepal
rotarynewsonline.org
Facebook: /RotaryNewsIndia
Twitter: @NewsRotary

The Rotary Korea
First published: **1963**
Language: **Korean**
Circulation: **64,300**
Area served: Korea
rotarykorea.org/index_rk

Taiwan Rotary
First published: **1960**
Language: **Chinese**
Circulation: **10,800**
Area served: Taiwan
taiwan-rotary.org

The Rotary-No-Tomo
First published: **1953**
Circulation: **92,500**
Language: **Japanese**
Area served: Japan
rotary-no-tomo.jp

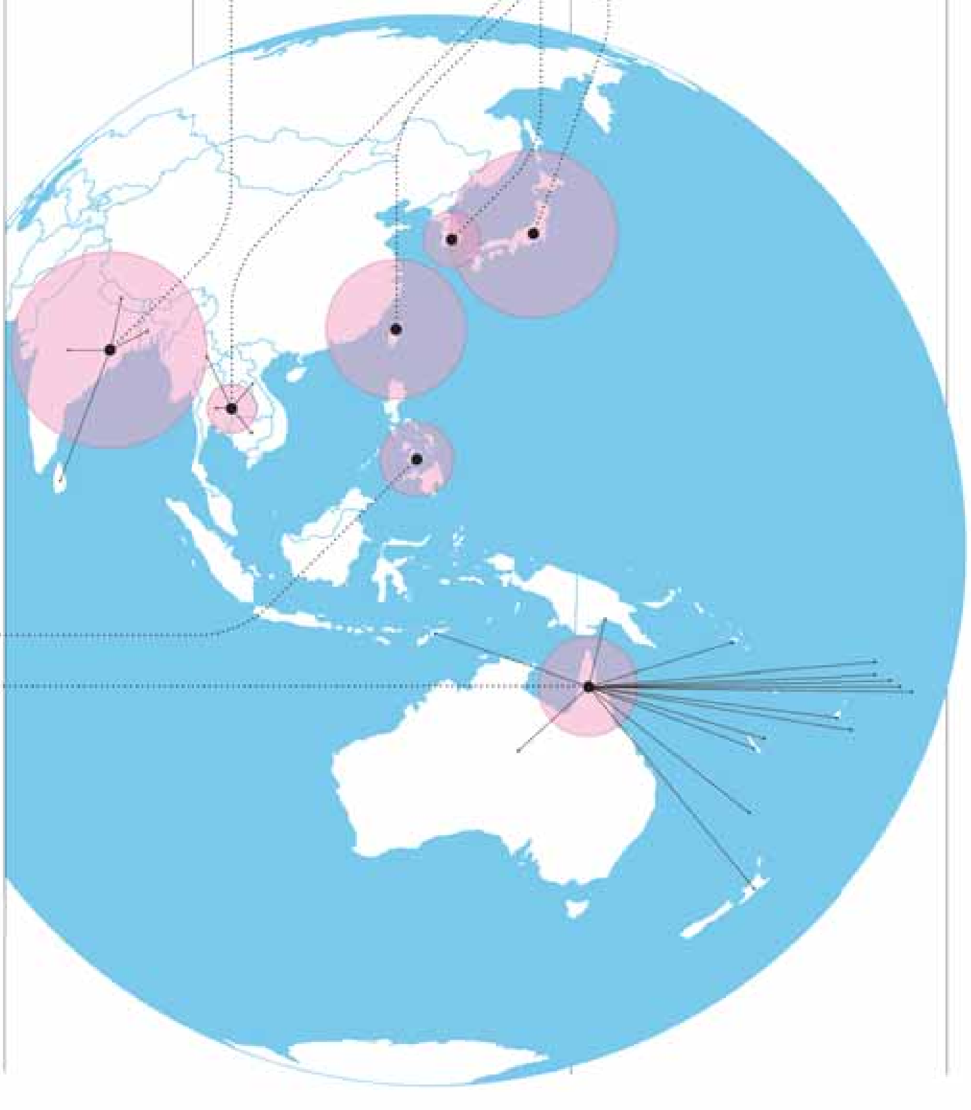

संगीत और माधुर्य

मन्ना डे की शक्ति, ऊर्जा, सटीक उच्चारण

एस आर मधु

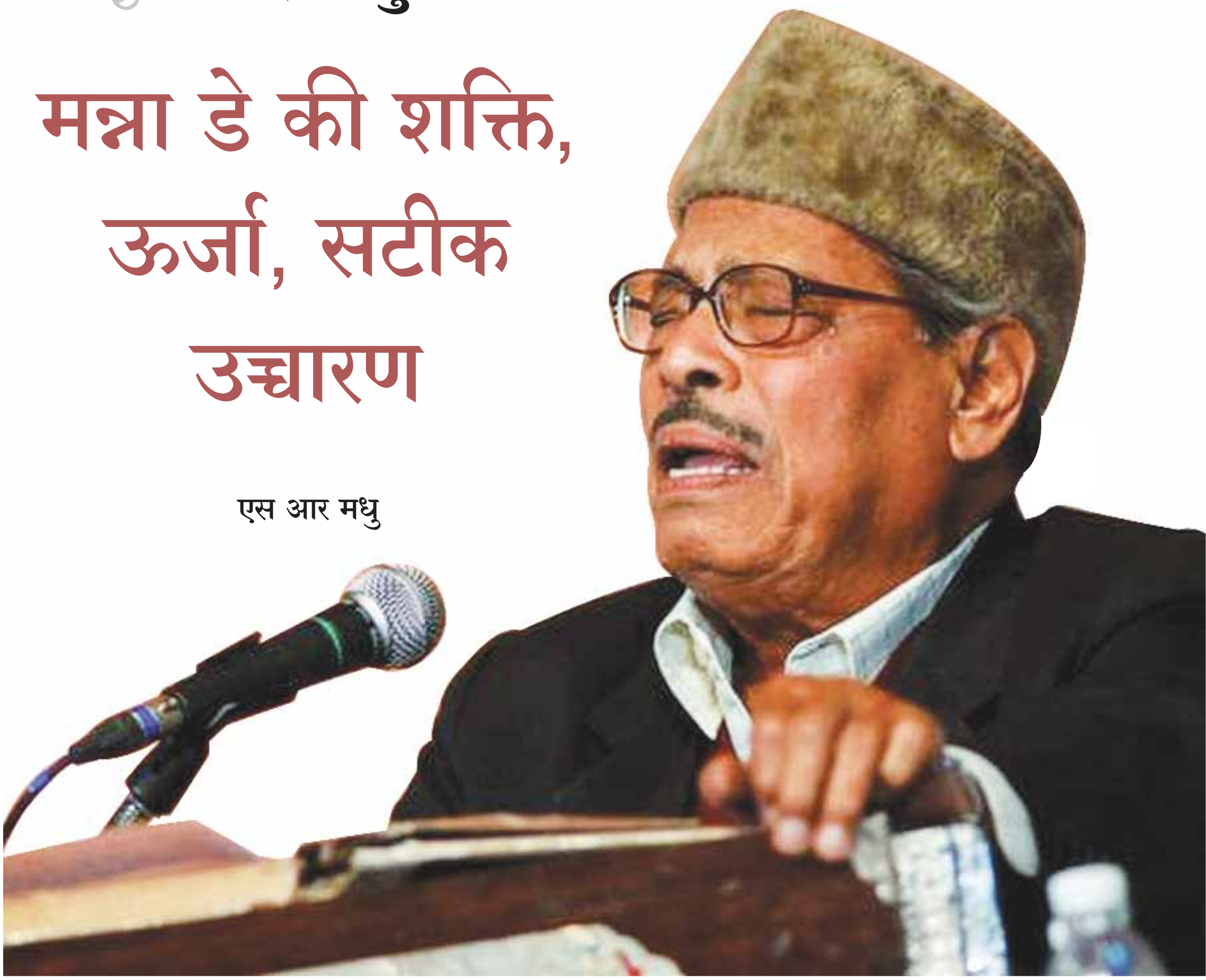

युवा गायिका कविता कृष्णमूर्ति उत्साहित थी। उनका एक फिल्मी गीत सुपर हिट हो गया था और वह इस खुशखबरी को साझा करने के लिए अपने गुरु मन्ना डे से मिलने गई। कोनसा गाना? मन्ना डे ने पूछा। फिल्म मोहरा से *तू चीज़ बड़ी है मस्त मस्त*, उन्होंने जवाब दिया।

मन्ना डे ने अपना आपा खो दिया और कविता को फटकार लगा दी। ''यह गीत भारतीय महिला का अपमान करता है, यह उन्हें एक वस्तु कहता है। तुम इस तरह का गाना कैसे गा सकती हो, और अपने खुद के लिंग को बदनाम कर सकती हो?'' कविता अश्रू भरे नैनों से अपने घर लौट गई। लेकिन गुरु के कठोर शब्दों, (जिसका उन्हें बाद में पछतावा हुआ) से भी कविता का उनके प्रति सम्मान कम नहीं हुआ।

यह घटना मन्ना डे के संगीत के प्रति दृष्टिकोण को उजागर करती है। वह कुछ भी अश्लील या खराब चीज़ को अस्वीकार कर देते थे। वह गाने से इंकार कर देते थे यदि किसी गीत में अश्लीलता की झलक होती थी या उसका दोहरा अर्थ होता था।

उनका गायन भी सैद्धांतिक और संगठित था। वह नोट्स और नोटेशन के साथ पूरी तरह से तैयार होकर रिकॉर्डिंग करने के लिए आते थे - एक अभ्यास जिसका किसी अन्य पार्श्व गायक ने अनुपालन नहीं किया।

मन्ना डे हिंदी फिल्म संगीत के स्वर्ण युग के सर्वश्रेष्ठ छह पुरुष गायकों में से एक

थे - अन्य में मोहम्मद रफी, हेमंत कुमार, मुकेश, तलत महमूद और किशोर कुमार शामिल थे। उन्होंने अन्य सभी से ज्यादा जीवन जिया था - जब 2013 उनका निधन हुआ था तब वह 94 वर्ष के थे। (मुकेश 1976 में, रफी 1980 में, किशोर 1987 में, हेमंत कुमार 1989 में, तलत महमूद 1998 में मृत्यु को प्राप्त हुए थे)। उन्होंने अपने छह दशक के लंबे करिअर में लगभग एक दर्जन भाषाओं (मुख्यतः हिंदी और बंगाली) में कुछ 4,000 गीत गाए थे।

अक्सर यह कहा जाता है कि रफ़ी अपने गानों में अपना दिल निकाल कर रख देते थे; वहीं मन्ना डे अपनी आत्मा निकाल कर रख देते थे। रफी ने अपने प्रशंसकों से कहा था, ''आप चाहे किसी को भी सुन सकते है, लेकिन मैं मन्ना डे को सुनता हूं।'' संगीतकार अनिल विश्वास ने मन्ना डे को शायद सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि अर्पित की - ''वह किसी के भी गीत गा सकते है, चाहे वह रफ़ी हो या किशोर हो या मुकेश हो, लेकिन वे उनके गीत नहीं गा सकते।'' कविता कृष्णमूर्ति ने टिप्पणी की थी: ''मन्ना डे को सबसे कठिन रचनाएं मिलती है लेकिन वह उन्हें बहुत ही खूबसूरती से गाते है।''

वह कई शैलियों में उस्ताद थे। लेकिन कदरदानों ने उनकी सराहना उनके चाचा - एक महान नेत्रहीन गायक के सी डे - और उस्ताद अमन अली खान से मिले शास्त्रीय संगीत के हुनर के लिए की।

शास्त्रीय संगीत के साथ उनकी प्रवीणता हालांकि एक उपहार और अभिशाप दोनों थी। वह जमानस के पसंदीदा गायक बनना चाहते थे, लेकिन उन्हें एक शास्त्रीय गायक के रूप में ब्रांडेड कर दिया गया।

शास्त्रीय प्रशिक्षण के अलावा गायक के रूप में उनकी ताकत थी - उनकी आवाज़ की शक्ति, ऊर्जा और अभिव्यक्ति, उनका सटीक उच्चारण और मौलिकता पर उनका जोर। उन्होंने अपनी ही शैली अपनाई थी।

शास्त्रीय संगीत के साथ उनकी प्रवीणता हालांकि एक उपहार और अभिशाप दोनों थी। वह जमानस के पसंदीदा गायक बनना चाहते थे, लेकिन उन्हें एक शास्त्रीय गायक के रूप में ब्रांडेड कर दिया गया। उनके गीत अक्सर बुजुर्ग या पौराणिक या अतिरिक्त पात्रों पर फिल्माए जाते थे (उनका पहला पार्श्व गीत ऋषि वाल्मीकि पर फिल्माया गया था!

उन्होंने कई सम्मान जीते - पद्म श्री, पद्मभूषण, दादासाहब फाल्के पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक के लिए फिल्मफेयर और केंद्र सरकार के पुरस्कार और लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार। 2008 में बंगाली में उन पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाई गई थी।

उन्होंने कई लोगों में श्रद्धा की भावना उत्पन्न की। 2007 में आई उनकी आत्मकथा

(बाएं से) अभिनेता महमूद, मोहम्मद रफ़ी, संगीत निर्देशक कल्यानजी, मन्ना डे और आई एस जौहर।

में, उन्होंने एक मार्मिक अनुभव को याद किया। जब वे छाती के दर्द के इलाज हेतु बैंगलोर के एक अस्पताल (डॉ देवी शेट्टी द्वारा स्थापित प्रसिद्ध नारायण हृदयाल अस्पताल) में गए, तो वे पूरे अस्पताल के कर्मचारियों को गेट पर गुलदस्ते के साथ देखकर हैरान रह गए। उनका नि: शुल्क इलाज किया गया: डॉ. शेट्टी ने कहा कि मन्ना डे का इलाज करना उनके लिए सौभाग्य की बात है।

मन्ना डे अद्भुत रूप से बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। प्रतिष्ठित रूप से कव्वालियों के बादशाह (वह *बरसात की रात* में रोशन द्वारा रचित एक अनुपम प्रतिष्ठित रचना *न तो कारवां की तलाश है,* जो हिन्दी सिनेमा की सबसे लंबी कव्वाली है, के प्रमुख गायक थे), वह भजनों के साथ भी समान रूप से मंत्रमुग्ध करते थे। सीमा के लिए शंकर-जयकिसेन द्वारा रचित दिव्य गीत *तू प्यार का सागर है* वास्तव में दिल को छू लेने वाला है। वह *नैन मिले चैन कहाँ* जैसे रोमांटिक युगल गीत, लता मंगेशकर के साथ *बसंत बहार* के लिए गाया गया शंकर जयकिशन द्वारा रचित अद्वितीय युगल गीत, और *आनंद* के लिए सलिल चौधरी द्वारा रचित अविस्मरणीय गीत *जिंदगी कैसी है पहेली हाय* जैसे दार्शनिक प्रतिबिंबों, दोनों में पारंगत थे। उनके देशभक्ति गीत, जैसे कि *काबुलीवाला* के लिए सलिल

जब वे छाती के दर्द के इलाज हेतु बैंगलोर के डॉ देवी शेट्टी द्वारा स्थापित प्रसिद्ध नारायण हृदयाल अस्पताल में गए, तो वे पूरे अस्पताल के कर्मचारियों को गेट पर गुलदस्ते के साथ देखकर हैरान रह गए।

चौधरी द्वारा रचित दिल को छू लेने वाला गीत *ऐ मेरे प्यारे वतन* उतना ही आकर्षक था जितना *मेरा नाम जोकर* के लिए शंकर जय किशन द्वारा रचित गीत *ऐ भाई ज़रा देख के चलो* था, जिसके लिए उन्हें एक फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला था। फिर भी, वह अपने शास्त्रीय गायक के टैग को नहीं हटा पाए और दुर्भाग्य से उनके लिए अवसर सीमित हो गए थे।

1919 में कोलकाता में जन्मे मन्ना डे, 32 सदस्यों वाले एक बड़े संयुक्त परिवार से ताल्लुक रखते थे। अपने शुरुआती वर्षों में उन्हें खेल (फुटबॉल, क्रिकेट, पतंगबाजी, मुक्केबाजी और कुश्ती), मस्ती-मजाक और दिल्लगी करना बहुत पसंद था। और बेशक संगीत भी। ''चूंकि मेरे पहले चाचा, गायक और संगीतकार, के सी डे हमेशा गाते रहते थे, इसलिए हमारे घर में संगीत हमेशा से ही मौजूद था।'' उन्होंने 10 साल की उम्र में स्कूल के स्टेज शो में गाना गाया, और कॉलेज में कई संगीत प्रतियोगिताएं जीती। उन्होंने कानून की शिक्षा (जैसा कि उनके पिता चाहते थे) या इंजीनियरिंग की शिक्षा (जैसा कि उनके दूसरे चाचा ने उन्हें सुझाव दिया था) नहीं ली, बल्कि संगीत की शिक्षा ली - जैसा कि के सी डे चाहते थे।

मन्ना डे ने 1942 में अपने चाचा डे के साथ बॉलीवुड में कदम रखा। लेकिन अपनी पहचान बनाने का वह एक बहुत ही कड़ा संघर्ष था और वह अक्सर अपने पार्श्व गायन के सपने को छोड़कर कलकत्ता लौटने के बारे में सोचते थे।

1950 की फ़िल्म मशाल में उनके पहले हिट गीत, *ऊपर गगन विशाल,* जिसके लिए एस डी बर्मन ने संगीत की रचना की, ने नाटकीय ढंग से उनके करियर को बदल

दिया। यह गायक बाद में एस डी बर्मन के शिष्य बन गए, जो लगभग गुरु-शिष्य परंपरा के अनुकूल था। वह बर्मन के लिए नियमित रूप से किराने का सामान और केला और मुरमुरा खरीदते थे। वह पान की आपूर्ति का भी इंतजाम करते थे - जिसे बर्मन हमेशा चबाते रहते थे।

लेकिन मन्ना डे कहते है कि वह एसडी बर्मन के लिए इस तरह के काम करने से नाराज नहीं हुए, क्योंकि उनके बीच स्नेह और सम्मान का एक गहरा बंधन था, जो कई सामान्य रुचियों से जुड़ा हुआ था। उदाहरण के लिए, दोनों फुटबॉल के दीवाने थे। जहाँ मन्ना डे मोहन बागान का समर्थन करते थे, वहीं बर्मन ईस्ट बंगाल के समर्थक थे। दोनों अक्सर झगड़ते थे।

बर्मन के लिए मन्ना डे का सबसे प्रसिद्ध गीत, *पूछो न कैसे मैंने रैन बिताई (मेरी सूरत तेरी आँखें,* 1963) बेजोड़ था, जो अशोक कुमार पर फिल्माई गई एक उत्कृष्ट कृति है।

गायक अपने करियर को आगे बढ़ाने में शंकर-जयकिशन, विशेष रूप से शंकर की भूमिका को लेकर, वाक्पटु और भावुक थे। उन्होंने कहा, ''शंकर पहले संगीत निर्देशक

(बाएं से) मन्ना डे, संगीत निर्देशक खय्याम और मोहम्मद रफ़ी।

थे जिन्होंने मुझसे रोमांटिक गीत गवाएं ... उन्हें लगा कि पुरुष की आवाज़ में मेरे प्यार भरे गीत जनता को आकर्षित करेंगे।''

शंकर-जयकिशन के लिए उनका पहला गीत लता मंगेशकर के साथ *आवारा* का युगल गीत *तेरे बिन आग ये चांदनी* था। इसके बाद अनेक सुपर हिट गीत आए। *बूट पॉलिश में लपक झपक;* लता के साथ अनन्त रोमांटिक कृति, *प्यार हुआ इकरार हुआ (श्री 420);* और लता मंगेशकर के साथ *चोरी चोरी* के दो सबसे खूबसूरत और शानदार युगल गीत - *आजा सनम* और *ये रात भीगी भीगी।*

अक्सर यह कहा जाता है कि रफ़ी अपने गानों में अपना दिल निकाल कर रख देते थे; वहीं मन्ना डे अपनी आत्मा निकाल कर रख देते थे।

किशोर कुमार के साथ।

एक बार फिर शंकर-जयकिशन के लिए मन्ना डे ने *बसंत बहार* में तीन आकर्षक हिट गीत गाए- *सुर ना सज़े, भय वंदना* और *केतकी गुलाब जूही चंपक बन फूले।* एक गीत जो अमर हो गया - वह हिंदुस्तानी शास्त्रीय दिग्गज भीमसेन जोशी के साथ गाया गया था।

मन्ना डे कहते है कि भीमसेन जोशी जैसे उस्ताद के साथ इस गीत को गाने का सुनकर वह बहुत डर गए थे। वास्तव में, जब इस गीत का विचार प्रस्तुत किया गया तब उन्होंने बॉम्बे छोड़ दिया और कुछ समय के लिए गायब हो गए। उन्होंने कहा, ''मैंने इसे

बेहूदा समझा कि मुझे भीमसेन जोशी से बढ़कर होना चाहिए।'' लेकिन उन्हें बात समझ में आ गई थी और उन्होंने वह गीत रिकॉर्ड किया। जब जोशी ने उनकी प्रशंसा की और उनसे शास्त्रीय संगीत गायक बनने का आग्रह किया तो वह बहुत ख़ुश हो गए।

लता मंगेशकर ने मन्ना डे के मराठी उच्चारण की तारीफ यह कहकर की – यह बिल्कुल एक सीखे हुए मराठी ब्राह्मण की तरह ही त्रुटिहीन होता है।

अन्य रचनाकारों के बारे में बात करते हुए, मन्ना डे ने कहा कि मदन मोहन की रचनाएं शास्त्रीय और लोक धुनों के उनके उत्कृष्ट संलयन के साथ सर्वश्रेष्ठ है। *देख कबीरा रोया* का प्रसिद्ध *गीत कौन आया मेरे मन के द्वारे,* अत्यंत मोहक है, और यह एक श्रोता को कहीं भी रुकने पर विवश कर सकता है। मदन द्वारा रचित *बावर्ची* के दो गीत बहुत ही उत्साहपूर्ण थे जो राजेश खन्ना पर फिल्माए गए थे – *तुम बिन जीवन* और *भौर आई गया अंधियारा।*

मन्ना डे सलिल चौधरी की प्रशंसा करते नहीं थकते थे, जिनके लिए उन्होंने बिमल रॉय की महान रचना *दो बीघा ज़मीन* के लिए धरती माँ का जयगान *धरती कहे पुकार* गाया था। सलिल ने भी उन्हें *मधुमती, काबुलीवाला* और *आनंद* के लिए यादगार गाने दिए। महत्वपूर्ण रूप से, सलिल ने बंगाली फिल्मों में पार्श्व गायक के रूप में एक मुकाम हासिल करने में मन्ना डे की मदद की, और उन्हें मलयालम की सुपर हिट *चेम्मीन* के आकर्षक प्रेम गीत *मनसा मैने वरु* गाने का मौका दिया। यह गीत, जिसके लिए उनकी केरल में जन्मी पत्नी सुलोचना कुमारन ने उन्हें मददगार सबक दिए - सुपर हिट बन गया।

फिल्म *उपकार* के लिए कल्याणजी-आनंदजी के लिए उनके अमर गीत *कसमें वादे प्यार वफा सब* ने राष्ट्रीय उत्साह उत्पन्न किया। इस गीत को मन्ना डे के लिए अपेक्षित राष्ट्रीय पुरस्कार तो नहीं मिला, लेकिन लता ने उन्हें एक सुंदर आदरांजली दी। उन्होंने कहा: ''यह गीत मुझे तब भी परेशान करता है जब मैं गाना रिकॉर्ड करने ही वाली होती हूँ, और मैं अपना ही रिकॉर्डिंग सत्र रद्द करने के बारे में सोचती हूँ! आपने भावनाओं को इतनी अच्छी तरह से कैसे प्रकट किया?'' उनके द्वारा कल्याणजी-आनंदजी के लिए गाए गए दो अन्य उत्साहपूर्ण, लोकप्रिय गाने है, फिल्म *ज़ंजीर* में प्राण पर फिल्माया गया गीत

लता मंगेशकर के साथ।

यारी है ईमान मेरा, यार मेरी ज़िंदगी; और *वक़्त* में बलराज साहनी पर फ़िल्माया गया एक अफ़ग़ानी गाने पर आधारित जादूभरा आनंदमय गीत *ऐ मेरी ज़ोहरा जबीं।*

मन्ना डे ने आर डी बर्मन को ''हिंदी सिनेमा के अंतिम उस्ताद'' के रूप में वर्णित किया। उनका संगीत ज्ञान और पश्चिमी और भारतीय शास्त्रीय नोटों के संश्लेषण के प्रति उनका रुझान असाधारण था। उनके लिए, मन्ना डे ने *भूत बंगला* में *आओ ट्विस्ट करें* गाया (आरडी ने निर्माता से कहा था इस गायक के अलावा और कोई इस गाने को नहीं गा सकता); *बुड्ढा मिल गया* में *आयो कहाँ से घनश्याम* गाया (जिसने भारतीय रागों में आरडी के महारथी होने का प्रदर्शन किया); मुकाबले और हास्य से परिपूर्ण गीत *एक चतुरनार* गाया (*पड़ोसन* में किशोर कुमार के साथ); और किशोर कुमार के साथ फिल्म *शोले* में मोटर साइकिल पर फिल्माया गया एक मस्ती भरा धमाकेदार गीत ये *दोस्ती, हम नहीं छोड़ेंगे* गाया।

(बाएं से) महेंद्र कपूर, मन्ना डे और राज कपूर।

वह सर्वोत्कृष्ट गायकों के गायक थे। उदाहरण के लिए, लता मंगेशकर जैसे साथी गायक ने उनकी प्रशंसा की झड़ी लगा दी थी। मन्ना डे ने लता को उद्धृत करते हुए कहा कि उन्होंने उनके साथ 107 युगल गीत गाए थे। वह सही होंगी, मैंने खुद गिनती नहीं की, वह हँसे। उन्होंने मन्ना डे के मराठी उच्चारण की तारीफ यह कहकर की - यह बिल्कुल एक सीखे हुए मराठी ब्राह्मण की तरह ही त्रुटिहीन होता है।

रफ़ी स्वयं को मन्ना डे का एक बड़ा प्रशंसक कहते थे - उन्होंने एक बार रिकॉर्डिंग के बाद डे को केवल एक शब्द कहकर गले लगा लिया: ''लाज़वाब''। दूसरी ओर मन्ना ने रफ़ी को सर्वश्रेष्ठ बॉलीवुड गायक माना। दोनों को पतंगबाजी करना बहुत पसंद था और बॉम्बे में जब वे दोनों कुछ समय के लिए पड़ोसी हुआ करते थे तब वे अपनी छत से इसका मुकाबला किया करते थे। अक्सर यह बंगाली रफ़ी को हराते हुए उनकी पतंग काट दिया करते थे।

मन्ना डे इस बात को लेकर हैरान थे कि आने वाले वर्षों में बॉलीवुड गायक एक दूसरे का समर्थन नहीं करेंगे। हमारे समय में ऐसा कभी नहीं हुआ। स्टूडियो के बाहर हम सबसे अच्छे दोस्त थे और एक-दूसरे के साथ अपने सुख-दुख साझा किया करते थे।

हालांकि उन्होंने रफ़ी और किशोर की तरह संगीत की महान ऊंचाइयों को नहीं छुआ, पर उन्हें सभी से एक असाधारण प्रतिभावान गायक के रूप में प्रशंसा प्राप्त हुई। कविता कृष्णमूर्ति का कहना है कि वह फिल्म उद्योग के सबसे सरल और साफ-सुथरे पुरुषों में से एक थे। जो उन अनेक कारणों में से एक है जिसके लिए उन्हें याद किए जाना चाहिए और उनका सम्मान किया जाना चाहिए।

संपादक की पसंद

- *लागा चुनरी मे दाग छुपाऊँ कैसे*
- *पूछो ना कैसे मै ने रात बितायी*
- *ऐ मेरे प्यारे वतन*
- *ये राते भीगी भीगी, ये मस्त फ़िज़ाएं*
- *ऐ मेरी ज़ोहरा जाबिन*

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

जरूरतमंद परिवारों को स्वास्थ्य सेवा देने के लिए 30 छोटे क्लीनिक

आलोक गुप्ता

सेल्फ-एडहेसिव टेप के निर्माता

रोटरी क्लब गाज़ियाबाद शताब्दी, रो ई मंडल 3012

चिकित्सीय परियोजनाएं आलोक गुप्ता की सर्वोच्च प्राथमिकता है, और उनकी पहली परियोजना जुलाई की शुरुआत में रोटरी नोएडा ब्लड बैंक में एक प्लाज्मा बैंक की शुरुआत करना थी। यह ₹1 करोड़ की लागत वाली एक मंडल परियोजना थी जो यूपी में अपनी तरह की पहली परियोजना है। हम दिल्ली और यूपी में 30 औषधालय और छोटे क्लीनिक खोलेंगे, जहाँ मरीजों से केवल 20 प्रति परामर्श लिया जाएगा,'' वह कहते है।

अगली जनवरी तक नोएडा में एक रोटरी मेडिकेयर सेंटर चालू किया जाएगा, जिसमें 2.5 करोड़ की वैश्विक अनुदान परियोजना के तहत सीटी और एमआरआई स्कैन और एक कैथ लैब जैसी नैदानिक सेवाएं शामिल है। ''नैदानिक सेवाओं के लिए भुगतान किया जाने वाला एक छोटा सा शुल्क इस केंद्र को आत्म-निर्भर बनाएगा।'' हाल ही में, उनके मंडल ने गाजियाबाद में एक तीन दिवसीय कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर की मेजबानी की और 92 ऐसे छिन्नांगों की पहचान की जिन्हें कृत्रिम अंग लगाए जाएंगे। ''हमने इस साल RILM में ₹50 लाख का योगदान दिया है, और हम 100 हैप्पी स्कूल परियोजनाएं करेंगे जिसमें ई-लर्निंग सुविधाएं, शौचालय खंड और हाथों की धुलाई के स्टेशन स्थापित करना शामिल है,'' गुप्ता बताते है। ₹2.5 करोड़ की लागत वाली यह परियोजना वैश्विक अनुदान और डीडीएफ के मिश्रण के माध्यम से की जाएगी।

उनकी 500 नए सदस्यों और पांच नए क्लबों को जोड़ने की योजना है। रोटरेक्ट में, वह 25 नए क्लब खोलना चाहते है। टीआरएफ के लिए 1 मिलियन डॉलर के लक्ष्य के लिए उन्होंने प्रत्येक रोटेरियन को कम से कम 100 डॉलर दान करने के लिए कहा है।

तीसरी पीढ़ी के एक रोटेरियन, उनके पिता ने उन्हें 1987 में एक रोटरेकटर बनने के लिए प्रेरित किया, और वह 2005 में रोटरी में शामिल हो गए, गुप्ता आगे कहते है।

आपके गवर्नरों से मिलिए

वी मुत्तुकुमारण

वह प्रत्येक रोटेरियन को महत्वपूर्ण महसूस करवाना चाहते है

एम सतीश बाबू

स्टॉकब्रोकिंग, रोटरी क्लब विजयवाड़ा मिडटाउन, रो ई मंडल 3020

सतीश कहते है कि डीजी के रूप में कार्यभार संभालने से पहले, उन्होंने एक मंडल डायरेक्टरी प्रिंट करवाई और उसे अपने मंडल के 73 क्लबों में सभी 4,075 रोटेरियनों को वितरित किया ताकि ''हर सदस्य महत्वपूर्ण महसूस करें,'' सतीश कहते है। यहाँ तक कि सभी रोटेरियनों को प्रत्येक माह भौतिक रूप से GML वितरित किया जाता है।

हाल ही में, राजमुंदरी के गौतमी आई इंस्टीट्यूट में एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से 200,000 डॉलर की लागत वाला एक उच्च-तकनीकी उपकरण स्थापित किया गया। रोटरी क्लब वुयुरु द्वारा संचालित रोटरी नेत्र अस्पताल को एक उन्नत माइक्रोस्कोप (32,000 डॉलर की लागत वाला वैश्विक अनुदान) के साथ एक विस्तारित रेटिना केंद्र प्रदान किया जाएगा। ''यह रेटिना केंद्र ओपीडी सेवाओं के साथ-साथ सर्जरी भी मुफ्त में करेगा। सर्जिकल रेटिना विंग के विस्तार की कुल लागत ₹4.5 करोड़ है।''

1000 महिलाओं की आय बढ़ाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण के बाद सिलाई मशीनें दी जाएंगी। 1,000 बच्चों वाले एक अनाथालय में अत्याधुनिक जल वितरण प्रणाली (वैश्विक अनुदान: 160,000 डॉलर) स्थापित की जाएगी। स्कूलों में 40,000 डॉलर की लागत से शौचालयों का निर्माण किया जाएगा।

उनकी एक मनपसंद परियोजना बाल चिकित्सा हृदय सर्जरी की है (80,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान को मंजूरी दी गई) और इस वर्ष कम से कम 70 सर्जरियाँ की जाएंगी। उन्हें सदस्यता में 20 प्रतिशत की शुद्ध वृद्धि का भरोसा है, जो 4,800 को पार करने की ओर अग्रसर है। ढळ्ऋ को देने के लिए, उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है।

वह अपनी सदस्यता में लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 20 रोटरेक्ट और 20 इंटरेक्ट क्लब शुरू करेंगे। 2007 में, जब एक रोटेरियन मित्र ने उन्हें उनकी क्लब बैठक में आमंत्रित किया तो ''इसने मुझे हमेशा के लिए बदल दिया।'' उनका गृह क्लब, रोटरी क्लब विजयवाड़ा मिडटाउन, जो दुनिया के सबसे बड़े क्लबों में शामिल है, ''इस साल 1,000 का आंकड़ा छूएगा,'' वह कहते है।

रोटरी उनका पारिवारिक मंत्र है

गजेंद्र सिंह नारंग

रियाल्टर, रोटरी क्लब इंदौर डायनेमिक, रो ई मंडल 3040

रोटरी में तीसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हुए, गजेंद्र सिंह नारंग मंडल सदस्यता को 50 प्रतिशत से बढ़ाना और शत प्रतिशत अवरोधन को बनाए रखना चाहते है।

एक नया रोटरी और इंटरेक्ट क्लब और पांच नए रोटरेक्ट क्लबों को अधिकृत किया गया, और बहुत से आरसीसी एवं क्लब प्रक्रियाधीन है। सभी सातों ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में परियोजना करने के लिए योजना तैयार है - एक लाख पौधे लगाना, 1,000 राष्ट्र निर्माता पुरस्कार, कम से कम 75,000 लोगों के लिए स्वास्थ्य शिविर, प्रत्येक क्लब द्वारा कम से कम एक हैप्पी स्कूल को अपनाना, RYLA कार्यक्रम, मित्रता विनियम कार्यक्रम और पोलियो उन्मूलन अभियान को मजबूत करना।

टीआरएफ को देने के लिए उनका लक्ष्य 100,000 डॉलर का है; ''मैंने स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों में अधिक महिलाओं को शामिल करने के लिए द बिग पिंक कार्ड जैसे विशेष कार्यक्रम तैयार किए है। साक्षरता, जो देश के विकास हेतु महत्वपूर्ण है पर परियोजना करने के लिए'' वह कड़ी मेहनत कर रहे है।

नैशनल वाइल्ड्लाइफ सेमीनार, ग्लोबल ग्रीन फोटोग्राफी कॉन्टेस्ट, बान्धव्य और पोलियो कोष के लिए एक नीलामी जैसे बहु-मंडलीय कार्यक्रम कुछ महत्वपूर्ण प्रक्रियाधीन परियोजनाएं है। मंडल ने संयुक्त रूप से सामुदायिक परियोजनाएं करने के लिए लायंस इंटरनेशनल, रेड क्रॉस सोसाइटी और अन्य गैर सरकारी संगठनों के साथ समझौता किया है।

रोटरी ने उनके परिवार को मोहित कर लिया है; उन्होंने बचपन से अपने माता-पिता को स्वैच्छिक क्षेत्र के लिए काम करते हुए देखा है। जब उन्होंने इंदौर में कारखाने की स्थापना की, तो उनके चार्टर्ड अकाउंटेंट, पीडीजी नितिन डफ़रिया ने उनसे रोटरी से जुडने का आग्रह किया। उनकी पत्नी सार्थिका, रोटरी क्लब इंदौर डायनेमिक की चार्टर अध्यक्ष और एक सहायक गवर्नर है। उनकी बेटी समर्था एक पूर्व मंडल इंटरेक्ट प्रतिनिधि थी और अब रोटरी क्लब इंदौर डायनेमिक की अध्यक्ष है। उनके बेटे अव्हान ने 13 साल की उम्र में सबसे छोटे DIR के रूप में राष्ट्रीय और वैश्विक ऑनलाइन कार्यक्रमों की मेजबानी की।

गरीबों की मदद के लिए रोटरी स्वमान स्टोर

प्रशांत हरिवल्लभ जानी

वित्तीय सलाहकार, रोटरी क्लब वाधवन सिटी, रो ई मंडल 3060

अक्टूबर तक, गरीब परिवारों को गरिमा के साथ जरूरी सामान प्रदान करने के लिए मंडल भर में 22 रोटरी स्वमान स्टोर खोले जा रहे है। ''ये उपयोग किए हुए फर्नीचर, पंखे, बिजली के उपकरण, कपड़े, जूते और सस्ते आभूषण जैसे घरेलू सामान एकत्रित करते है, उनकी मरम्मत करते है और उन्हें दोबारा पैक करते है।'' ये सामान जरूरतमंद परिवारों को 20-100 तक की मामूली कीमत पर बेचे जाते है, प्रशांत जानी कहते है। इस साल लगभग 40 स्टोर खोले जाएंगे।

वह हाथों की धुलाई के कम से कम 1,000 स्टेशन स्थापित करना चाहते है और अब तक सरकारी स्कूलों और मंदिरों एवं उद्यानों जैसे सार्वजनिक स्थानों पर 250 इकाइयां स्थापित की जा चुकी है। मैमोग्राफी, पैप स्मीयर और मौखिक कैंसर की जांच के लिए दो वैन 75,000 से अधिक लाभार्थियों की जांच करेगी। जहाँ एक वैन पहले से ही चक्कर लगा रही है, वहीं दूसरी वैन, जो 150,000 डॉलर के एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से प्राप्त की गई है, जल्द ही सेवा में लाई जाएगी।

फरवरी में, सोमनाथ मंदिर से धुले तक आठ दिनों में 2,000 किमी की दूरी तय करने के लिए एक विशाल कार रैली शुरू की जाएगी। इसके पीछे का विचार रोटरी परियोजनाओं पर जागरूकता फैलाने का है। उन्हें लगभग 700 प्रतिभागियों की अपेक्षा है। मंडल इस साल के अंत तक 1,640 नए रोटेरियनों को जोड़ते हुए सदस्यता को 6,000 तक ले जाएगा। ''मैं 25 नए रोटरी क्लब, 35 नए रोटरेक्ट क्लब की शुरुआत करने और 400 नए रोटरेक्टरों को शामिल करने को लेकर आश्वस्त हूँ,'' वह कहते है।

टीआरएफ को देने के लिए उनका लक्ष्य 1.25 मिलियन डॉलर का है। एक उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने रोटरी क्लब सुरेन्द्रनगर जैसे एक प्रतिष्ठित क्लब का सदस्य बनने के लिए तीन साल से भी अधिक समय तक इंतजार किया, ''लेकिन उन्होंने मुझे इतने लंबे समय तक प्रतीक्षा सूची में रखा कि मैंने 2001 में रोटरी क्लब वाधवन सिटी का चार्टर सदस्य बनने का फैसला किया।''

सेवा परियोजनाओं के लिए धन एकत्रित करना उनका मंत्र है

मनीष शारदा

प्लाइवुड निर्माता, रोटरी क्लब मेरठ महान, रो ई मंडल 3100

जहाँ इस महामारी ने अनेक परियोजनाओं को ठंडे बस्ते में डाल दिया, वहीं मनीष शारदा अब क्लबों का दौरा कर रहे है ताकि ''रोटेरियनों को संभाव्य परियोजनाएं करने के लिए प्रेरित कर सकें।''

उन्होंने सर्विकल कैंसर की रोकथाम के लिए एक टीकाकरण परियोजना हेतु 60,000 डॉलर की लागत के एक वैश्विक अनुदान और आठ डायलिसिस मशीनें - चार मेरठ के रोटरी डायलिसिस केंद्र में और बाकी मुज़फ्फरनगर के निजी अस्पताल में - स्थापित करने के लिए 50,000 डॉलर की लागत के एक अन्य वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन दिया है। ''2018 तक तीन वर्षों के लिए हमारे मंडल पर रोक लगने की वजह से उनकी समस्या है निधियन की कमी।'' सेवा परियोजनाओं के लिए धन जुटाने हेतु शारदा आरआईपीई शेखर मेहता, न्यासी गुलाम वाहनवटी और अन्य के साथ संपर्क में है।

उनकी पहली प्राथमिकता सदस्यता अवरोधन और 300 नए सदस्य जोड़ना है। जब उन्होंने डी जी के रूप में पदभार संभाला, तब मंडल सदस्यता 2,249 थी और अब तक 60 नए रोटेरियन जोड़े जा चुके है। ''मैं इस वर्ष 10 नए रोटरी क्लब, 10 नए रोटरेक्ट क्लब शुरू करूंगा और 5,400 रोटरेक्टर शामिल करूंगा,'' वे कहते है। 1 जुलाई को एक ऑनलाइन बैठक में उन्होंने 5,000 रोटरेक्टरों के साथ रोटरेक्ट IIMT उमंग को अधिकृत किया।

संस्थान के लिए, उन्होंने 100,000 डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया है। 1997 में रोटरी से जुड़ने के बावजूद, मैं सक्रिय नहीं था क्योंकि ''मैं उच्च अध्ययन कर रहा था। छह वर्षों के भीतर, मैं रोटरी क्लब मेरठ महान का सदस्य बन गया जिसमें पूर्व अध्यक्ष रमेश कपूर मेरे गुरु थे।'' इस नए क्लब में अपने गुरु के मार्गदर्शन में, शारदा क्लब की बैठकों और परियोजना गतिविधियों में शामिल होने लगे।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

बुनियादी शिक्षा और साक्षरता पर एक आभासी बैठक

टीम रोटरी न्यूज़

बच्चे आइडियल जावा रोटरी स्कूल में कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रधान करते हुए (फाइल फोटो)

आरआईपीई शेखर मेहता ने, मेजर गिफ्ट इनिशिएटिव्स (एमजीआई) समिति, बीईएल, के सदस्य पीडीजी रमेश अग्रवाल के नेतृत्व में मबुनियादी शिक्षा और साक्षरता (बीईएल) कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए एक आभासी बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि रोटरी ने 2025 तक दक्षिण एशिया में 100 प्रतिशत साक्षरता हासिल करने का बीड़ा उठाया है और यह हर रोटेरियन की जिम्मेदारी है।

RISAO टीम द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वहानवटी, बी ई एल-एम जी आई चेयर ऐनी मैथ्यूज, आरआई मुख्यालय से नफ़ीसा और RISAO से संजय परमार मौजूद थे। रोटरी बैंगलोर ऑर्किड्स के भूतपूर्व अध्यक्ष रविशंकर दकोजू ने दर्शकों को अपने आसपास के समुदायों में विकास संबंधी परिवर्तन लाने की अपनी कहानी से प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हर एक पैसे का योगदान समाज में अच्छी तरह से फैलकर बहुगामी परिणाम लाते हैं।

वहानवटी ने रोटरी और यूएन में किए गए विभिन्न अध्ययनों का हवाला देते हुए बताया कि साक्षरता शायद सबसे महत्वपूर्ण हज़ार-वर्षीय लक्ष्य था। उन्होंने कहा कि 100 फीसदी साक्षरता एक लगातार खुशहाली और स्थायी शांति की बुनियादी ज़रुरत है।

ऐनी मैथ्यू ने छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम को यह बताते हुए कहा कि बी ई एल के लिए सबसे प्रभावशाली योगदान रहे हैं।

AKS के सदस्य सुरेश पोद्दार और उदय पिलानी ने अपने महैप्पी स्कूल प्रोजेक्ट्सफ पर प्रेजेंटेशन दिए। ■

रोटरी क्लब थेनी मेट्रो किंग्स के द्वारा रोटरी पॉडकास्ट

रोई मंडल 3000, थेनी मेट्रो किंग्स के रोटरी क्लब ने हाल ही में *Planet Rotary* को लॉन्च किया जो कि रोटरी और इसके कई मूल्यवान कारणों को प्रस्तुत करने के लिए एक पॉडकास्ट सीरीज है। इस विचार को क्लब की अध्यक्ष नर्मधा विजयकुमार ने सामने रखा। अब तक उन्होंने अपने पति रोटेरियन श्री ए आर विजयकुमार के साथ मिलकर दो एपिसोड की मेजबानी की है।

पॉडकास्ट एक विशिष्ट विषय पर ऑडियो चर्चा की रिकॉर्डिंग होती है और इसे अक्सर Spotify, Anchor और iTunes जैसे ऐप्स पर अपलोड किया जाता है। श्री नर्मधा ने बताया कि ''यह गतिशील माध्यम एक दूसरे के साथ हमारे संबंधों को मानवीय बनाने और विचारों को फैलाने का बहुत अच्छा तरीका है। इसका मतलब है कि हम थेनी में बैठकर अपने हैप्पी स्कूल प्रोजेक्ट के बारे में बात कर सकते हैं और जबकि टोरंटो में बैठा कोई व्यक्ति पॉडकास्ट सुन सकता है और कुछ इसी तरह का काम करने के तरीके का पता लगा सकता है।''

क्लब के पॉडकास्ट का वर्चुअल उद्घाटन लॉग-इन करके डीजी ए एल चोकालिंगम, डीजीएन आई जेराल्ड और पीडीजी डॉ जमीर पाशा के द्वारा किया गया। ARRFC पी गोपालकृष्णनन ने प्लैनेट रोटरी लोगो जारी किया। पहला एपिसोड - *हू इज़ ए रोटेरियन* - पीडीजी आर वी एन कानन के द्वारा जारी किया गया और दूसरा एपिसोड रोटेरियन राजा गोविंदस्वामी के द्वारा जारी किया गया जिसमें उन्होंने रोटरी के ग्रेजुएट फेलोशिप प्रोग्राम के लाभार्थी के रूप में अपने अनुभवों को साझा किया, जिसने उन्हें यूएस के ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी में उच्च अध्ययन प्राप्त करने में मदद प्रदान की थी।

Spotify या Anchor.fm पर Planet_ Rotary सुनें।■

Money money money, it's so funny

Sandhya Rao

The world of India's gilded age and the spawning of newbie billionaires.

It was the docu-series *Bad Boy Billionaires* that finally pushed me to read *The Billionaire Raj* by James Crabtree, published by Tim Duggan Books. This beautifully bound item featuring on its dust jacket the Ambanis's home Antilia reaching disjointedly up into a purple sky had landed on my shelves almost two years ago, courtesy my son. However, despite his constant prodding, I had not got down to reading it, although that had always been on my cards. Perhaps the fact that the makers of the docu-series occasionally called upon Crabtree to share his views on this or that matter finally tipped the balance.

Whatever the reason, I now find myself unable to dislodge my nose from the pages of this curious, complex story communicated in clear, engaging prose. Innumerable voices share innumerable experiences: some come as a bolt from the blue for the average reader, others jog the recall button and the memories come flooding back. And as you read you get a sense of the socio-political, socio-economic and eco-political implications of making more than 'just a living' in a country with potential for corruption.

The series that's airing focuses on three dubious stars of corporate mega-compromise: Vijay Mallya, Nirav Modi and Subroto Roy. The book goes far further, examining the business of business at the topmost echelons, the number of billionaires who have emerged on the Indian scene thanks in large part to their willingness to mix risk with savvy, and not afraid of wheeling-dealing. While the docu-series left me feeling indignant, the book stirs up questions on both sides of the coin as it even-handedly draws an enormous picture that demands your attention.

There's a context to the description that follows the title: *A Journey through India's New Gilded Age*. The term 'gilded age' is taken from a reference to the period between the end of the Civil War in 1865 to the turn of the twentieth century — in the United States. Crabtree quotes a historian as saying it was the era of 'the great corporation, the crass plutocrat [and] the calculating political boss'. A nation that had all along seen itself as 'a rural, egalitarian idyll: a nation of yeoman farmers governed by gentlemen politicians' was transformed 'into a giant continental economy and the world's leading industrial power'. This 'growth gave birth to a new generation of plutocrats', people who grew their businesses and their wealth at an impossibly fast pace and were not averse to vulgar displays of that wealth. For this they earned the sobriquet 'robber barons'.

The phrase 'gilded age' is apparently from American writer Mark Twain, 'describing a period that glittered on the surface, as if painted in gold, but was decaying underneath. That decay was to be found in politics above all, as the expansion of the franchise in the early 1800s gave birth to the rampant corruption of the "spoils" system. Powerful urban political machines traded bribery and patronage for jobs and votes'. Crabtree goes on to write that he thought India might be going through something similar after reading an article in the *Financial Times* by venture capitalist Jayant Sinha and academic Ashutosh Varshney. 'In its rot and heady dynamism, India is beginning to resemble America's Gilded Age,' they argued in the article headlined, 'It is time for India to rein in its robber barons'.

Crabtree does an organised, thorough job, talking about the rise of such industrialists in the first chapter entitled, interestingly, 'Robber Barons'. They were, undoubtedly, inspired and daring; equally undoubtedly they paved the way for others on the road to super-wealth, particularly in a climate of economic liberalisation. However,

as India's most celebrated intellectual, the economist Amartya Sen, comments, while 'economic reopening had indeed created a more vibrant economy, [it was] one that was less equal and fair'. Crabtree reminds us that 'Sen also looked to the successful "tiger" economies of east Asia, but mostly because of the way that they grew rich by investing heavily in basic health and education, which in turn helped to provide social support to poorer workers as they moved from farms to factories and onwards into the middle class. Modern India, by contrast, more often looked like an economy in Latin America, with a weak social safety net and yawning inequality.'

Then the book goes on to discuss the Narendra Modi effect, the series of scams that upturned the economic climate, the collusion of money, power and politics and the special brand of cronyism practiced in South India, with special mention of J Jayalalithaa and Tamil Nadu. The book then winds down with a section entitled 'A New Gilded Age'. Here Crabtree discusses the 'House of Debt' companies; it's a fascinating account of how stock analyst Ashish Gupta sniffed out the fact that many big industrial houses were caving under mountains of debt. His research led to a 35-page document, 'House of Debt', that laid bare the financial mess that followed some years of investment boom. Crabtree writes, 'Beginning in the early 2000s, many of the country's major tycoons had gone on a serious borrowing binge, vacuuming up bank loans, layering on leverage and using the resulting funds to fire up bold new projects, from power stations and toll roads to ports and bauxite mines.' Most of these did well. Then there was another round of big investments and bank loans around 2008… and these ran into trouble. While the Tatas and Reliance had decent balance sheets, others did not. They were found to be running entirely on debt. The unravelling of this period of India's economic history is an eye-opener.

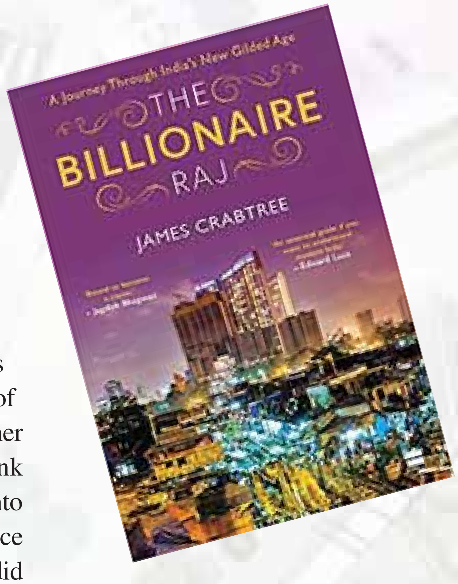

Crabtree makes no judgements in his unravelling of the particularities and peculiarities of India's various systems and Indians' financial practices. Whether it is Naveen Jindal, or Gautam Singhania or the Reddy brothers of Satyam Computers fame… the writing is clear and objective, the book a must-read. Incidentally, Singhania's JK House in Breach Candy, Mumbai, is the tallest family home in India, rising up 36 floors. And his speedboats are named after James Bond movies: *GoldenEye*, *Goldfinger*, *Octopussy* and *Thunderball*! There's mention of impossibly fancy weddings too. A wedding in the family of mining tycoon Gali Janardhana Reddy (remember the iron ore scandals in Karnataka?) bears recounting. The invitation to his daughter's marriage came in a box that had a small television screen built into the lid. This played a video in which the bride, groom and Reddy himself danced, Bollywood style. The wedding was conducted in a set constructed to resemble the Hampi heritage site and was attended by about 50,000 guests over several days of celebrations. All this bang in the middle of the demonetisation drive! Reddy claimed he had spent some ₹300 million; the media put the figure at about ₹5.5 billion, to quote Crabtree.

The IPL features in the account as also the current bad boy of television, Arnab Goswami. Yes, 'India's ultra-wealthy are thriving' today, despite everything. Crabtree brings us back down to earth with sane voices, such as that of Amartya Sen: 'There is something a little deceptive about focusing on the very rich. Having lots of rich people is not always a big problem so long as they get no special favors and pay fair taxes.' While India's gilded age has transformed India, Crabtree writes, 'into one of the world's least equal countries', he goes on to say that 'without action, this gap between rich and poor is only likely to widen. Perversely, the closer India comes to its ambitions of near-double-digit growth, the faster this will happen'. We might all want to think about this. *The Billionaire Raj* definitely helps us think about this.

The columnist is a children's writer and senior journalist.

Designed by Krishnapratheesh S

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the Rotary News / Rotary Samachar subscription online

Our Bank details:

Bank : HDFC Bank
SB Account

Branch : Montieth Road
Egmore, Chennai

A/c Name : Rotary News Trust

A/c No. : 50100213133460

IFSC Code : HDFC0003820

E-mail us following details:

Name of club

President/secretary's name

Amount/date of transfer/UTR number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary Club of". Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

Rotary at a glance

Rotarians : 1,196,478

Clubs : 36,397

Districts : 525

Rotaractors : 211,714

Clubs : 11,077

Interactors : 351,762

Clubs : 15,294

RCC : 11,412

As on November 17, 2020

Membership Summary

As on November 1, 2020

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians %	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	120	5,137	6.33	51	39	225
2982	72	3,151	6.54	87	96	56
3000	130	5,261	8.34	188	256	211
3011	107	4,193	25.97	64	103	35
3012	110	3,866	24.86	60	71	59
3020	73	4,491	6.48	58	156	351
3030	95	5,157	14.76	125	184	325
3040	92	2,256	12.01	44	52	147
3053	64	2,786	16.73	23	40	112
3054	142	6,482	19.64	101	149	524
3060	103	4,710	14.76	61	63	147
3070	116	3,454	17.46	49	22	59
3080	84	3,385	9.51	107	148	116
3090	81	2,290	5.94	44	9	122
3100	100	2,331	8.32	14	14	146
3110	135	3,746	8.97	29	7	105
3120	83	3,362	14.72	50	21	54
3131	138	5,303	21.44	117	199	121
3132	88	3,483	10.13	41	97	165
3141	105	5,744	24.79	134	147	94
3142	91	3,346	21.04	84	118	69
3150	89	3,540	10.68	66	124	118
3160	78	2,586	6.81	28	3	83
3170	134	5,778	13.59	84	213	169
3181	83	3,437	9.16	63	192	118
3182	83	3,201	8.15	50	103	98
3190	145	6,128	16.16	157	166	66
3201	146	5,701	8.35	109	73	52
3202	141	5,893	6.82	103	252	48
3211	144	4,705	7.10	9	24	132
3212	108	4,359	9.08	104	187	150
3231	100	4,006	12.23	53	81	419
3232	128	5,905	19.39	136	199	93
3240	92	3,205	13.57	60	393	203
3250	101	3,811	18.32	72	65	185
3261	76	2,736	16.19	20	21	43
3262	107	3,789	13.06	54	40	78
3291	159	3,873	21.04	105	88	629
India Total	**4,043**	**156,587**		**2,804**	**4,215**	**5,927**
3220	71	1,960	15.05	86	126	74
3271	116	1,839	17.67	70	19	22
3272	160	1,906	17.52	59	15	44
3281	240	7,163	17.23	249	51	201
3282	160	4,120	10.90	179	42	46
3292	141	5,581	16.27	148	121	121
S Asia Total	**4,931**	**179,156**		**3,595**	**4,589**	**6,435**

Source: RI South Asia Office

Rotary PEOPLE OF ACTION

पॉल हैरिस की प्रतिमा औरंगाबाद में स्थापित की गई

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी संस्थापक पॉल हैरिस की नव स्थापित प्रतिमा के साथ रोटेरियन।

अब औरंगाबाद के निवासी शहर में एक प्रमुख स्थान पर रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस की प्रतिमा के अनावरण के द्वारा दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाने में रोटरी की भूमिका की सराहना कर सकते हैं। सार्वजनिक छवि निर्माण की गतिविधियों के एक भाग के रूप में और श्री हैरिस को श्रद्धांजलि देने के लिए, कोविड प्रतिबंधों की वजह से एक साधारण समारोह में उनकी प्रतिमा का अनावरण आईपीडीजी सुहास वैद्य के द्वारा किया गया।

रो ई मंडल 3132 के जिला सचिव अशोक तोषनीवाल (2019-20) ने रोटरी की उत्पत्ति एवं दशकों के दौरान इसकी वैश्विक गतिविधियों के बारे में जनता को जानकारी देने के लिए मराठी में एक छोटे शिलालेख के साथ पॉल हैरिस की प्रतिमा स्थापित करने का विचार प्रस्तावित किया। उस समय, डीजी सुहास वैद्य ने इस सुझाव को पसंद किया और इस प्रोजेक्ट के लिए धन मुहैया कराने के लिए सहमत हुए। तोषनीवाल ने प्रोजेक्ट के बारे में बताने के लिए औरंगाबाद में सभी आठ क्लब अध्यक्षों की बैठक बुलाई और तिराहे पर स्थित अपने बिल्डिंग कॉम्पलेक्स में जगह दान करने की इच्छा व्यक्त की।

रोटरी क्लब औरंगाबाद सेंट्रल ने इस प्रोजेक्ट को क्रियान्वित करने के प्रति अपनी सहमति प्रदान की और तत्कालीन अध्यक्ष भारत चोपडे ने इस उद्देश्य के लिए तीन-सदस्यीय समिति बनाई। समिति ने इस प्रोजेक्ट पर नगरपालिका के वार्ड मेंबर सुरेंद्र कुलकणी को जानकारी दी। वैद्य ने बताया ''कुलकर्णी रोटरी क्लब के काम को अच्छी तरह से जानते हैं क्योंकि हमने नगरपालिका के साथ शहर में कई परियोजनाओं को पूरा करने के लिए साथ में काम किया है। उन्हें यह विचार पसंद आया और उन्होंने प्रतिमा की स्थापना को सुविधाजनक बनाने के लिए अपना समर्थन दिया।''

परियोजना कार्य 25 जून को शुरू हुआ और 12 जुलाई को एक साधारण समारोह के माध्यम से पॉल हैरिस की प्रतिमा का अनावरण करने के लिए रोटेरियन ने जल्दी ही काम पूरा कर लिया। प्रतिमा निरंजन मेडिलगेकर के द्वारा बनाई गई थी जो स्वर्गीय रोटेरियन सुभाष मेडिलगेकर के पुत्र हैं। कोरोना वायरस के प्रतिबंधों के कारण, केवल 15 रोटेरियन ने आयोजन में भाग लिया जिसमें सुहास वैद्य, पीडीजी प्रफुल्ल मीरजगांवकर, कुलकर्णी, AKS सदस्य आशा सिंह, तोष्नीवाल, समिति के सदस्य और क्लब अध्यक्ष शामिल थे।

''रोटरी, इसके संस्थापक एवं किए गए वैश्विक कार्यों के बारे में मराठी भाषा में संक्षिप्त जानकारी को औरंगाबाद के लोगों को हमारे संगठन के बारे में बताने के लिए प्रतिमा के नीचे रखे गए ग्रेनाइट पत्थर पर लिखा गया है।'' वैद्य ने बताया। ■

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और परिपक्वता

भरत और शालन सवुर

हमें एक विशाल, पारदर्शी भावनात्मक बुलबुले में रहने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। इसका कारण: कोविड, युद्ध की आशंका, ड्रग्स, आर्थिक संकट, आत्महत्याएं, हत्याएं, मृत्यु और हमारे आस-पास की तबाही के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध होना है, जिससे यदि हम सावधान नहीं रहे तो हमें भावनात्मक क्षति पहुँच सकती है। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति डब्ल्यू डगलस के अनुसार, हमारी भावनाएं हमारे जीवन को निर्देशित करती है - ''हमारे निर्णयों का 90 प्रतिशत हिस्सा चीजों को महसूस करने और 10 प्रतिशत हिस्सा उन भावनाओं को सही ठहराने में उपयोग होता है।''

फोन बंद करने से लेकर चालू करने तक। अपनी भावनात्मक स्थिति का परीक्षण करने का एक बढ़िया तरीका अपने सेलफोन को बंद करना है - अब, शांति से बैठे। क्या आपका दिमाग दौड़ रहा है, हर जगह उछल रहा है, क्या इसमें लगातार विचार चल रहे है, क्या संवाद और एकालाप लगातार हो रहे है? फ्रेडरिक नीत्शे ने कहा था, विचार हमारी भावनाओं की छाया होते है। यदि उचित ध्यान नहीं दिया जाए, तो वे आपकी भावनाओं को एक बंदर की तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक, पसंद से नापसंद तक, खुशी से निराशा तक झुलाते रहते है।

और यहीं पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता काम आती है। यह हमें समझने में मदद करती है कि कैसे हमारी भावनाएँ और विचार हमारी मानसिक स्थिति पर काम करते है और हमारी भावनाओं को बुद्धिमानी से प्रबंधित करते है।

भावना मत बनो। तरीका यह है: भावना को नजरंदाज मत करो। महसूस करो, लेकिन भावना मत बनो। मतलब, आपा न खोएं! यह आपके पैर के अंगूठे का अचानक ही किसी भारी मेज से ठोकर खाने, और गुस्से में दर्द बनकर आपका उस मेज को लात मारने के जैसा है। जब हम गुस्से में अपना संतुलन खो देते है, तो हमारे मस्तिष्क का पुरोमुखीय बहिरांश जो हमारी भावनाओं को नियंत्रित करता है, अपनी भावनात्मक उपवल्कुटीय तंत्र को नियंत्रित करने की क्षमता खो देता है।

हम अपने संतुलन को कैसे बनाएं रखें? अपने आप को 'एक गुस्सैल व्यक्ति' या 'एक भावनात्मक व्यक्ति' का दर्जा न दें, बल्कि इस बात को समझें कि आपके अंदर कहीं न कहीं एक सर्वोच्च बुद्धिमान सचेत व्यक्ति

मौजूद है जो शाश्वत रूप से शांति और आनंद में रहता है। इस ज्ञान के साथ, आप अपने संतुलन को बनाए रखते है और भावना को स्वयं ही बहने देते है।

दिल काफी बड़ा है... जैक कॉर्नफील्ड, एक आध्यात्मिक गुरु, इस प्रक्रिया को खूबसूरती से समझाते है। वह कहते है, एक वांछित मन आपको कहीं भी ले जा सकता है - मॉल में, शादी में, तलाक में... लेकिन बैठकर यह कहने में सक्षम होने पर कि 'आह, यह इच्छा है, यह आकांक्षा है, यह प्यार है...' आपको पता चलने लगता है कि यह सब समेटकर रखने के लिए आपका दिल काफी बड़ा है। क्या यह एक अद्भुत रहस्य नहीं है - दिल इतना बड़ा होता है कि यह सभी प्रकार की इच्छाओं और भावनाओं को संजोकर रख सकता है। उन्होंने बेधड़क कहा, आप कहते है, 'यह बेचैनी है, यह खुशी है, यह डर है, यह नफरत है ...' जब आप इसे स्वीकार करते है, तो आप उत्सुक हो जाते है, आपको आश्चर्य होता है, मुझमें यह कैसी ऊर्जा है, अगर मैं खुद को इसका अनुभव करने दूँ तो कैसा महसूस होगा? तो, आप यह होने देते है और कहते है, ठीक है, जो भी है उसे होने दो!

हम में से ज्यादातर लोग अपने विचारों, भावनाओं और जज़्बों के बहाव में फँसकर रह जाते है। हम अपने डर और दुःख को नकारते है। उन भावनाओं के खिलाफ धकेला जाना असहज लगता है, उदासी मन का एक गहरा दुर्भाव है। हमें यह भी पता नहीं होता कि हम परछाइयों से लड़ रहे है। लेकिन जब हम प्रत्येक भावना की पहचान उसके नाम से करते है, जैसा कि जैक हमें बताते है, और कहते है, 'स्वयं को प्रकट करने में कोई बुराई नहीं है,' जादुई रूप से, तीव्रता नष्ट हो जाती है। हमारे ध्यान में परछाई क्षीण हो जाती है - यही कारण है कि इसे 'ध्यान का प्रकाश' कहा जाता है।फ और जैसा कि एक बौद्ध शिक्षक तेनज़िन पाल्मो कहते है, जागरूकता के साथ, हम इसके नष्ट हुए बिना इसका पूरा अवलोकन कर सकते है। इसलिए, हम इन हानिकारक, विचित्र समयों में भी अपनी समतुल्यता और संतुलन की भावना को बनाए रखते है।

जब हम अपने रास्ते में आने वाली सूचनाओं के नाटक में नहीं फँसते है, तो हम पारदर्शी भावनात्मक बुलबुले से इसे देखने में सक्षम होते है जिसके बारे में मैंने शुरुआत में बात की थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम निष्ठुर हो जाएंगे, बल्कि इसका अर्थ यह है कि जैक द्वारा सिखाए गए अभ्यास से, हम भावनात्मक रूप से स्थिर और परिपक्व हो जाते है। सभी परेशान व्यक्तियों को खामोशी से उपचरात्मक संदेश भेजने के अलावा हम इस बात पर ध्यान नहीं दे सकते कि हमसे बाहर क्या चल रहा है, लेकिन हम अपनी नई परिपक्वता के साथ स्वयं पर ध्यान दे सकते है।

एक दूरगामी अवलोकन। दिल को प्रशिक्षित करें, दलाई लामा आग्रह करते है। वह एक दूरगामी अवलोकन करने पर बल देते है। सभी आंतरिक बेचैनियों को शांत करें। निस्वार्थ और दयालु बनें। एक ऐसी ताकत का सृजन करें जो अच्छाई के लिए कार्य करती है - जैसे आपकी गली में रहने वाली एक बूढ़ी महिला के लिए खाना बनाने जैसा छोटा कार्य। लोगों को बताएं कि वे अकेले नहीं है। वह बताते हैं: हर दिन सुर्खियों में दिखाए जाने वाले कार्यों की तुलना में दया दिखाने के कई कार्य होते है। इस बात को याद रखना महत्वपूर्ण है और अनुरूपता की भावना को बनाए रखें।

उनके शब्दों में: ''पूरी दुनिया एक दूसरे पर आश्रित है, एक परिवार की तरह। एकता की भावना रखें और करीब आएं। वह अपने स्वयं के अनुभव का उद्धरण देते हुए कहते है कि इससे हमें मदद मिल सकती है: जब हम तिब्बत में थे, तो हम अलग-थलग थे। जब हम शरणार्थी के रूप में भारत आए, तो हमारे मन में यही भावना थी कि हम एक ही है, हम सभी मानव है।'' तब से हम अधिक प्रसन्न है! सत्य को महत्वहीन बनाए बिना यह एक अद्भुत परिप्रेक्ष्य है।

कभी असहाय महसूस न करें। ''मानव बुद्धि का उपयोग करें!'' वह मस्तिष्क की ओर इशारा करते है। तब आप वास्तविकता देख सकते है। भावना हमेशा बहुत संकीर्ण होती है। मानव बुद्धि हमारी भावना को विकसित करने और समझदार बनने में बहुत सहायक होती है, अन्यथा एकमात्र भावना केवल मैं, मैं, और मैं होती है! वह कहते है, कभी भी खुद को असहाय मत समझो। आत्मविश्वास खोए बिना, प्रयास करते रहना महत्वपूर्ण है। वह कहते है कि वह तिब्बत को कभी नहीं छोड़ेंगे। हम हमेशा प्रयास करते रहेंगे!

पांच साल की उम्र में, बच्चे मैं और मेरा के बारे में सीखते है, अधिक आत्म-केंद्रित हो जाते है और उसके बाद अपने खिलौने या बिस्कुट को साझा करने के लिए आसानी से तैयार नहीं होते!

नवजातों को देखें। वे भावनात्मक रूप से स्वतंत्र और दयालु होते है। जब आप उनसे उनके नन्हे हाथों में पकड़ी हुई कोई चीज मांगते हैं तो वे इसे आसानी से दे देते है। विशेषज्ञ कहते है, पांच साल की उम्र में, बच्चे मैं और मेरा के बारे में सीखते है, अधिक आत्म-केंद्रित हो जाते है और उसके बाद अपने खिलौने या बिस्कुट को साझा करने के लिए आसानी से तैयार नहीं होते! फिर, दुर्भाग्य से उन्हें स्कूल में दयालु बनना नहीं बल्कि प्रतिस्पर्धा करना सिखाया जाता है। और कुछ अपवादों के साथ यह रवैया हम में से बहुत लोगों के साथ लंबे समय तक रहता है। दलाई लामा चाहते है कि हर स्कूल अपने पाठ्यक्रम में दयालुता को शामिल करें।

वह एक खाली कमरे में रहते है, उनके पास कुछ वस्त्र है बस। जब भी वह खरीदारी करते है, तो अपनी बिल्ली के लिए एक छोटा कटोरा खरीदते है! दुनिया को उनकी आवश्यकता है, हमें उनकी निस्वार्थ भावना, उनकी दयालुता को आत्मसात करने की जरूरत है। जब मैंने उनसे धर्मशाला में मुलाकात की तो मैंने दलाई लामा की आँखों में देखा। उसके साथ होने पर कुछ परिवर्तन सा महसूस होता है। वह जॉन एफ कैनेडी के सुंदर शब्दों को साकार बनाते है: ''शांति एक दैनिक, एक साप्ताहिक, एक मासिक प्रक्रिया है, जो धीरे-धीरे विचार बदल रही है, धीरे-धीरे पुराने अवरोधों को मिटा रही है, चुपचाप नई संरचनाओं का निर्माण कर रही है।''

आइए अच्छे कार्य के लिए एक शक्ति बनें और एक नई उपचारात्मक दुनिया की शुरुआत करें।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* सिम्पली स्पिरिचुअल-यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब मन्नाई ग्रीन सिटी - रो ई मंडल 2981

एजी जी मनोहरन और क्लब अध्यक्ष जे सुधाकर की मौजूदगी में रोटेरियनों द्वारा मन्नारगुडी के एक उपेक्षित तालाब को सँवारा गया।

रोटरी क्लब दिल्ली मंथन - रो ई मंडल 3011

कालकाजी के एक झुग्गी इलाके में आयोजित किए गए एक सुधार शिविर में 100 से अधिक बच्चों को पोलियो की बूंद पिलाई गई। क्लब के सचिव श्रीनिवास कोटनी सहित तीन रोटेरियन इस शिविर स्थल में मौजूद थे।

रोटरी क्लब संकगिरी - रो ई मंडल 2982

जरूरतमंद महिलाओं के लिए एक सिलाई कक्षा शुरू की गई। पाठ्यक्रम पूरा होने पर प्रमाण पत्र दिए जाएंगे और उन्हें नौकरी हेतु सहायता भी प्रदान की जाएगी।

रोटरी क्लब सोनीपत - रो ई मंडल 3012

45 जरूरतमंद विद्यार्थियों को ₹10.6 लाख की छात्रवृत्ति दी गई, उनमें से ज्यादातर आर्य गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल से थे। इस नेक काम के लिए परियोजना प्रमुख संजीव बाली ने अपने पारिवारिक ट्रस्ट से योगदान दिया।

रोटरी क्लब मदुरई एलीट - रो ई मंडल 3000

पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की 89वीं जयंती के अवसर पर कलाम्स विज़न वॉक नामक एक वॉकथॉन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 300 से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब वालटेयर - रो ई मंडल 3020

एक सैनिटाइजर उत्पादन इकाई स्थापित की गई। 10,000 लीटर से अधिक सैनिटाइजर वितरित किया गया और सात गांवों को संक्रमण मुक्त किया गया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब चंद्रपूर - रो ई मंडल 3030

स्तनपान सप्ताह को चिह्नित करने के लिए, एक आदिवासी गांव जिबगाँव में गर्भवती महिलाओं के लिए एक विशेष शिविर आयोजित किया गया। पौष्टिक भोजन और सेनेटरी नैपकिन वितरित किए गए।

रोटरी क्लब कपूरथला एलीट - रो ई मंडल 3070

क्लब के सदस्यों ने कपूरथला जिला जेल के कैदियों को आई ड्रॉप, मास्क और चश्मे वितरित किए।

रोटरी क्लब भोपाल हिल्स - रो ई मंडल 3040

रोटरी क्लब भोपाल अरैरा और रोटरी क्लब भोपाल शाहपुरा के साथ क्लब ने ऐसे लगभग 50 परिवारों को खाद्यान्न प्रदान किया जिनके घर ललित नगर की बाढ़ में बह गए थे।

रोटरी क्लब उम्बराज - रो ई मंडल 3132

शिशु शुभचिंतन परियोजना के तहत सतारा की करद तहसील के उम्बराज के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में नवजात शिशुओं की लगभग 200 माताओं को स्वागत उपहार दिए जा रहे है।

रोटरी क्लब नवसारी - रो ई मंडल 3060

गणेश उत्सव के बाद घर-घर जाकर और नदी किनारों से संग्रहित किए गए कचरे की विशाल मात्रा को जैविक खाद में परिवर्तित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय भेजा गया।

रोटरी क्लब मुंबई ग्रीनसिटी - रो ई मंडल 3141

पालगढ़ जिले के सांबा गांव में एक गोद लिए हुए स्कूल में आदिवासी छात्रों को पानी बचाने और प्लास्टिक के उपयोग से बचने का मार्गदर्शन दिया गया। कपड़े के थैले वितरित किए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब ठाणे एसेस - रो ई मंडल 3142

एक बहुमंडलीय परियोजना अंकुर के तहत, औरंगाबाद के पास करमद और फूलंबरी तालुक में मृतक किसानों के 40 परिवारों को उर्वरक, सूक्ष्म पोषक तत्व और बीज दिए गए।

रोटरी क्लब करकला - रो ई मंडल 3182

विश्व हृदय दिवस पर, क्लब ने कार्डियोलॉजी एट डोरस्टेप फाउंडेशन (सीएडी) और स्नेहा ज्योति फ्रेंड्स के साथ मुनियाल के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को ईसीजी उपकरण सौंपने हेतु हाथ मिलाया।

रोटरी क्लब निजामाबाद - रो ई मंडल 3150

विश्व पोलियो दिवस पर, इस बीमारी को खत्म करने के लिए रोटरी के प्रयासों के बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु जिला स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा पोस्टरों के साथ एक विशाल बैनर रिलीज किया गया।

रोटरी क्लब कोयंबटूर वडावल्ली - रो ई मंडल 3201

भर्तियार विश्वविद्यालय और पी एन पुडूर डाकघर के कर्मचारियों को रोटरी के लोगो वाले मास्क वितरित किए गए।

रोटरी क्लब नवनंदी - रो ई मंडल 3160

₹2 लाख की लागत से डीजी बी चिन्नापा रेड्डी की उपस्थिति में 30 जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीनें दी गई।

रोटरी क्लब करमड़ई - रो ई मंडल 3202

पोलियो जागरूकता संदेशों के साथ लगभग 7,000 पर्चे वितरित किए गए। एंड पोलियो नाउ संदेश वाली टी-शर्ट और मास्क पहने हुए क्लब के सदस्यों ने बैनर के साथ एक वॉकथॉन में भाग लिया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम नॉर्थ - रो ई मंडल 3211

मेडिकल कॉलेज पुलिस स्टेशन को सुरक्षा संबंधी सावधानियों की सूची वाले बीस कोविड बोर्ड दिए गए ताकि उन्हें शहर के प्रमुख स्थानों पर स्थापित किया जा सकें।

रोटरी क्लब शिभसागर - रो ई मंडल 3240

क्लब के सदस्यों ने कोविड केयर अस्पताल में 100 रोगियों को फल वितरित किए।

रोटरी क्लब रामनाद - रो ई मंडल 3212

डीजी पीएनबी मुरुगादास ने रोटरी हॉल से जिला कलेक्टर के कार्यालय तक एंड पोलिओ नाउ कार रैली का आयोजन किया। इस अवसर को चिह्नित करने के लिए ARRFC डॉ चिन्नादुरई अब्दुल्ला ने एक डाक टिकट जारी किया।

रोटरी क्लब फूलबनी - रो ई मंडल 3262

जरूरतमंद परिवारों को कंबल वितरित किए गए ताकि सर्दियों के मौसम में वे खुद को गर्म रख सकें।

रोटरी क्लब चेय्यर टेम्पल सिटी - रो ई मंडल 3231

क्लब द्वारा कोविलूर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ग्राम स्वास्थ्य स्वयंसेवकों सहित पचास गर्भवती महिलाओं, डॉक्टरों, अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। इस केंद्र में एक आरओ वॉटर यूनिट लगाई गई और फेस मास्क वितरित किए गए।

रोटरी क्लब सेरामपोर - रो ई मंडल 3291

डीजी सुदीप मुखर्जी ने *परिधान* परियोजना के तहत लगभग 250 बच्चों और 100 महिलाओं को कपड़े वितरित किए। वंचित परिवारों को मास्क और सैनिटाइजर भी दिए गए।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

विविधता, निष्पक्षता और समावेशन पर वेबिनार

2020-21 के दौरान, रोटरी विविधता, निष्पक्षता और समावेश का अन्वेषण करने के लिए एक वेबिनार श्रृंखला की मेजबानी करेगा। इस श्रृंखला में पहला वेबिनार सितंबर में आपके संगठन के लिए डिजाइन और समावेशी योजना पर आयोजित किया गया था।

योजनाबद्ध कुछ अन्य विषय है एक दूसरे को जवाबदेह ठहराना; न्याय नहीं तो शांति नहीं; अंतर-पीढ़ी संबंध और एक समावेशी ब्रांड का निर्माण। सभी वेबिनार की रिकॉर्डिंग https://vimeo.com/channels/rotarymembership पर उपलब्ध होगी

RF(I) योगदानों के लिए पैन की आवश्यकता

1 अप्रैल से प्रभावी रूप से RF(I) को ऑनलाइन/ऑफलाइन किए गए सभी योगदानों के लिए पैन नंबर प्रदान करना अनिवार्य है, चाहे फिर किसी दाता का आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के तहत कर छूट का दावा करने का इरादा हो या न हो। बिना पैन विवरण के प्राप्त हुए योगदान रोई दक्षिण-एशिया कार्यालय द्वारा संसाधित नहीं किए जाएंगे।

पॉल हैरिस सोसायटी - वार्षिक कोष योगदान को बढ़ाने का तरीका

पॉल हैरिस सोसाइटी (PHS) उन रोटरी सदस्यों और TRF के मित्रों का सम्मान करती है जो वार्षिक कोष, पोलियोप्लस फंड या अनुमोदित वैश्विक अनुदान में हर साल 1,000 डॉलर या उससे अधिक का योगदान देते है।

2013-14 से पॉल हैरिस सोसायटी का आकार दोगुना से अधिक हो गया है। सोसायटी के सदस्य ऐसे नेताओं का एक महत्वपूर्ण समुदाय बनाते है जिनका योगदान टीआरएफ के वार्षिक कोष में 18 प्रतिशत से अधिक है और समग्र रूप से 17 प्रतिशत से अधिक है। यह समर्थन संस्थान को स्थानीय स्तर पर और दुनिया भर में असाधारण परियोजनाओं और गतिविधियों का निधीयन करने की अनुमति देता है।

अपने मंडल/क्लब के भीतर पॉल हैरिस सोसाइटी को मजबूत करने के लिए, आप My Rotary में फाउंडेशन रिपोर्ट्स के अंतर्गत उपलब्ध पॉल हैरिस सोसाइटी रिपोर्ट तक पहुँच सकते है। यह रिपोर्ट पूर्व दान के आधार पर भावी सदस्यों की पहचान करने में मदद करती है, उन सदस्यों को धन्यवाद देती है जिन्होंने अपनी वार्षिक प्रतिबद्धता को पूर्ण किया है, और जिन्होंने ऐसा नहीं किया है उन्हें इसकी याद दिलाती है।

संस्थान मान्यता अंक

संस्थान मान्यता अंक उन दाताओं को प्रदान किए जाते है जो वार्षिक निधि या पोलियोप्लस के माध्यम से टीआरएफ में योगदान करते है, या जो संस्थान अनुदान के प्रायोजन में योगदान करते है।

इन कोषों में योगदान किए जाने वाले प्रत्येक डॉलर के लिए दाताओं को एक मान्यता अंक प्राप्त होता है। अक्षयनिधि के योगदान पात्र नहीं होते है। दाता पॉल हैरिस फेलो या मल्टीपल हैरिस फेलो के रूप में अर्हता प्राप्त करने में दूसरों की मदद करने के लिए संस्थान मान्यता अंकों को स्थानांतरित कर सकते है। एक बार में न्यूनतम 100 संस्थान मान्यता अंकों को स्थानांतरित किया जाना चाहिए, और दाता को मान्यता और स्थानांतरण अनुरोध फ़ॉर्म को पूरा करके उसे हस्ताक्षरित करना चाहिए। यह अंक व्यक्तियों से किसी क्लब या मंडल में स्थानांतरित नहीं किए जा सकते। My Rotary लॉगिन के माध्यम से क्लब और मंडल के नेतृत्वकर्ता ऑनलाइन क्लब मान्यता सारांश को देख सकते है, जिसमें मान्यता राशि, मान्यता अंक, वर्तमान पॉल हैरिस फेलो स्तर एवं उस स्तर को प्राप्त करने की तारीख शामिल है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी ने एक अस्पताल को ब्लड एनॉलाइजर गिफ्ट किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 2982, सलेम साउथ और सलेम सेंट्रल के रोटरी क्लब ने शहर में श्री रामकृष्ण मिशन चैरिटेबल डिस्पेंसरी को पूरी तरह से स्वचालित एक सिक्स-पार्ट ब्लड एनॉलाइजर दान में दिया जो सलाना 50,000 रोगियों को सेवा प्रदान करता है। इस उपकरण की कीमत ₹4.55 लाख है और इसका उपयोग विभिन्न रोगों का निदान करने के लिए तेज गति से और सटीकता से रक्त कोशिकाओं की गणना करने और पहचान करने के लिए किया जाता है। डीजी वेंकटेशन ने RRFC पी वसु, ARC सी शिवागणानासेल्वम और एजी पी प्रभाकरन की उपस्थिति में उपकरण को डिस्पेंसरी को सौंपा। ■

On the racks

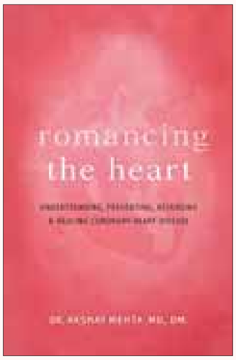

Romancing the Heart

Author : **Dr Akshaya Mehta**
Publisher : **Kindle Edition**
Pages : **320; ₹285**

Keeping both the young and old in mind, Dr Akshay Mehta lays out affordable, effective and universally available means to a healthy heart and spells out how heart diseases can be avoided altogether. He points out to the early warning signs of a heart attack, and if struck by it, the correct choices of treatment and guidance to the path of recovery.

With 30 years of experience in cardiology, the author explains in details some of the most frequently asked questions and also some of the lesser known facts about heart disease. This book shares knowledge and works as an actionable guide to aid anyone who wants to lead a healthy life.

For a hard copy of the book email: *heartbook.akshay@gmail.com*

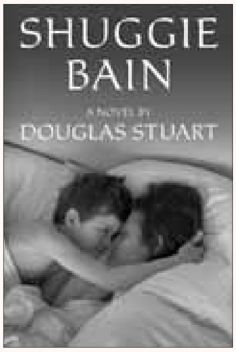

Shuggie Bain

Author : **Douglas Stuart**
Publisher : **Grove Press**
Pages : **430; ₹499**

With a dream of a perfect life, Agnes Bain leaves her husband for a taxi driver who later abandons her. Agnes believes in having everything picture perfect as opposed to how it is actually supposed to be. She puts up a proud face, when in reality her world is falling apart. She turns alcoholic to cope with her struggles and it is up to her six-year-old son Shuggie Bain to take care of his mother. We follow the life journey of this small boy from age six to 17 giving up on everything for the sake of his mother, who wrecks his life. As a result, he grows up amid poverty and violence. Bain also struggles to conform with the standards of his society in terms of proving his masculinity.

Winner of the Booker Prize 2020, this book weaves a tragic tale that showcases the grim realities of life.

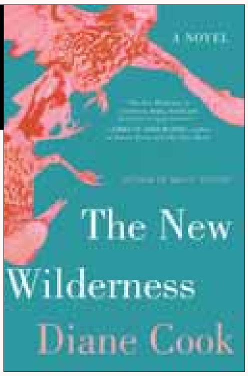

The New Wilderness

Author : **Diane Cook**
Publisher : **Harper**
Pages : **416; ₹299**

A group of twenty people from a world overrun by pollution and population are sent to the only remaining pocket of nature — The New Wilderness. In the group is Bea who desperately wants to improve her daughter Agnes's health spoiled by the contaminated city they used to live in. The wilderness is governed by Rangers, who check the movements of the group. With minimal possessions, the group is expected to live by hunting while carefully leaving no trail of themselves behind. All of them are strictly supposed to adhere to the rules laid out in a manual. While the daughter thrives in the new setting, learning new skills and taking things positively, the mother misses her old life and finds herself becoming a reluctant leader of the group. The story follows the community's struggle to survive in a new land as they step out of the guidelines.

Compiled by Kiran Zehra

वक्त का तमाचा

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

हाल ही में मुझसे मेरे एक छोटे भतीजे द्वारा एक अजीब सवाल पूछा गया। वह 10 वर्ष का है और उसके माता-पिता के अनुसार अत्यधिक ऊर्जावान है। उन्होंने कहा कि उसके स्कूल के एक शिक्षक ने उसे एक दिन ज़ोरदार थप्पड़ मारा। मैंने कहा कि वह शायद इसका हकदार होगा, तब उसने गुस्से में मुझसे सवाल किया: क्या आपको कभी किसी अजनबी ने थप्पड़ मारा है, वो भी दूसरों के सामने? यदि ऐसा है तो यह आखिरी बार कब हुआ था?

मैंने सोचा और याद किया कि मुझे केवल दो ही बार जोरदार थप्पड़ पड़े थे। पहली बार मुझे प्रधानाध्यापक द्वारा बेंत से मारा गया था जब मैं सुबह की प्रार्थना के दौरान हंस रहा था। मैं तब 13 साल का था। दूसरी बार 1978 में जब मैं 27 साल का था - और हवा में लगभग 1,000 फीट ऊपर था।

हुआ यूं था। मेरी प्रेमिका ने कुछ महीने पहले ही मुझे छोड़ दिया था। इसके परिणामस्वरूप जिन सप्ताहांत का मैं इंतजार किया करता था वो अब मुझे भारी लगने लगे थे। 1970 के दशक में वाकई में सोने और शराब पीने के अलावा करने के लिए कुछ नहीं होता था। सोने के तो पैसे नहीं लगते थे मगर पीने के लगते थे, जो मेरे पास पर्याप्त नहीं थे।

मेरा एक बहुत करीबी दोस्त जो पायलट था, चिंतित हो गया और उसने सुझाव दिया कि मैं उड़ान की मूलभूत बातें समझने के लिए ग्लाइडिंग क्लब का सदस्य बन जाऊं। आपकी बारी आने में इतना समय लगता है कि सप्ताहांत जल्दी से बीत जाएगा, उसने कहा। साथ ही, यह बहुत सस्ता है और आप इसका खर्च आसानी से वहन कर सकते है। इसलिए मैंने एक साधारण सा फॉर्म भर दिया जिसमें मेरा नाम, पता पूछा गया था और सदस्यता शुल्क के रूप में मुझसे केवल सौ रुपए मांगे गए थे।

पहले दो सप्ताहांत बुनियादी निर्देशों में बीत गए थे जिसमें बताया गया था कि हवा की दिशा को कैसे समझे - आप केवल वात दिग्दर्शक को देखते है - और कंट्रोल कैसे काम करते है। बाकी हैंगर से ग्लाइडर को खींचकर बाहर निकालना, उन्हें पोंछना, और उन्हें हवा में ऊपर खींचने वाली चरखी से जोड़ने में मदद करने जैसा कूली का काम करना था। मैं कहना चाहूँगा कि इसमें मुझे बहुत मज़ा आया।

मेरी पहली उड़ान के लिए मेरी बारी तीसरे सप्ताहांत पर आई। प्रशिक्षक एक सख्त, व्यावहारिक आदमी था। उसने मुझे आगे की सीट पर बैठने के लिए कहा और वह स्वयं पिछली सीट पर बैठ गया। ग्लाइडर में एक खुला कॉकपिट और दोहरा नियंत्रण था। उसने मुझे गतिमापक और ऊंचाई मापक दिखाया और अंत में चरखी चालक को हमें ऊपर ले जाने का संकेत दिया। और हम दिसंबर की सर्द हवा में ऊपर की ओर उठे। मेरा यकीन मानिए कुछ भी उस ठंडी हवा के झोंके से टक्कर नहीं ले सकता था जो साएं-साएं की आवाज़ के साथ गुजर रही थी और उसके अलावा कोई अन्य आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी और आपके नीचे सब कुछ शांति से बह रहा था। केवल एक अन्य आवाज़ जो कभी-कभी सुनाई दे रही थी वह कार के हॉर्न की थी। तीसरी उड़ान तक यह आनंदमय था।

जैसे ही हम 800 फीट की ऊँचाई पर पहुँचे, प्रशिक्षक ने मुझसे पूछा कि अगर मैंने यह छड़ी पीछे खींच ली तो क्या होगा। मुझे कहना चाहिए था कि इसकी दिशा बदल जाएगी लेकिन मैंने कहा कि हम ऊपर चढ़ेंगे। प्रशिक्षक ने कहा, ठीक है, चलो ऊपर चलते है। मैंने छड़ी पीछे खींच ली, दिशा बदल गई - और कुछ क्षण के बाद, हम एक पत्थर की तरह जमीन की ओर गिरने लगे। डर के मारे मेरे होश उड़ गए थे लेकिन अभी इससे भी ज्यादा बुरा होना बाकी था। अचानक ग्लाइडर का सिरा नीचे झुक गया, और अगली सीट से मैंने देखा कि धरती मेरी तरफ तेजी से बढ़ रही थी। डर के मारे मेरी जान लगभग निकलने ही वाली थी कि धीरे-धीरे चीजें खुद ब खुद सही होने लगी, और हम धीरे से नीचे उतरने लगे। तब मुझे बहुत दर्दनाक मुक्का पड़ा! प्रशिक्षक ने कहा, ''अब तुम्हें यह याद रहेगा कि ग्लाइडर में कोई इंजन नहीं होता और यदि आप इसके सिरे को ऊपर खींचते है, तो यह रुक जाएगा।''

मैंने अपने भतीजे को यह कहानी सुनाई और उससे कहा कि अगर वह परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करना याद नहीं रखेगा तो वह भी रुक जाएगा। ■

अचानक ग्लाइडर का सिरा नीचे झुक गया, और अगली सीट से मैंने देखा कि धरती मेरी तरफ तेजी से बढ़ रही थी। डर के मारे मेरी जान लगभग निकलने ही वाली थी कि धीरे-धीरे चीजें खुद ब खुद सही होने लगी, और हम धीरे से नीचे उतरने लगे।

संक्षेप में

भारतीय-अमेरिकी किशोरी ने संभावित कोविड की दवा विकसित की

टेक्सस की 14 वर्षीय अनिका चेब्रोलू ने एक विशेष अणु विकसित करने के लिए 2020 3एम यंग साइंटिस्ट चैलेंज जीता। यह अणु कोरोनोवायरस के एक विशेष प्रोटीन के साथ बंध कर इसे कार्य करने से रोकता है। भारतीय-अमेरिकी किशोरी को कोविड -19 का इलाज करने वाली संभावित दवा पर अपने शोध के लिए 25,000 डॉलर से सम्मानित किया गया है।

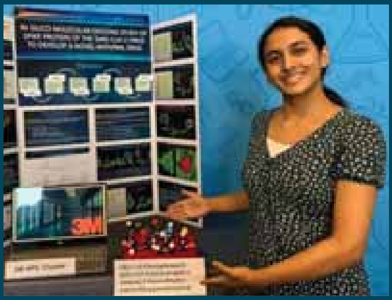

प्रवासी माँ के रूप में देवी दुर्गा

कोलकाता में बारिशा क्लब दुर्गा पूजा समिति प्रवासी श्रमिकों को श्रद्धांजलि दे रही है। उन्होंने देवी की मूर्ति को अपने बच्चों को लिए हुए एक प्रवासी माँ के रूप में चित्रित किया। प्रतिमा के द्वारा उन प्रवासी श्रमिकों की दुर्दशा पर प्रकाश डाला गया जो बेरोज़गार हो गए थे और लॉकडाउन के दौरान सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलने को मजबूर थे। मूर्तिकार, रिंटू दास को प्रतिमा बनाने के लिए ऑनलाइन सराहना मिली ।

गर्भवती महिला 6 मिनट से कम समय में एक मील दौड़ी

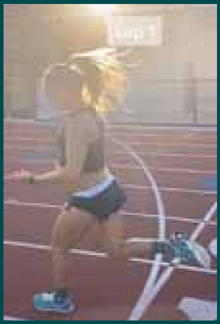

इंस्टाग्राम और ट्विटर पर वायरल हुए वीडियो में, 28 वर्षीय गर्भवती महिला, मैकेना मायलर ने छह मिनट से भी कम समय में एक मील दौड़ लगाई। यह दौड़ उन्होंने अपने पति द्वारा दी गई 100 डॉलर की शर्त को पूरा करने के लिए लगाई। उनके पति ने उनसे यह शर्त लगाई थी कि वह नौ महीने की गर्भवती होने के दौरान आठ मिनट से कम समय में यह दूरी तय नहीं कर सकती। ओलंपिक में अमेरिका का प्रतिनिधित्व करना मायलर का सपना है। उनके पति ने इस करतब का वीडियो बनाया और इसे अपने इंस्टाग्राम और टिकटौक पर पोस्ट कर पूछा ''कोई पता करो कि क्या यह विश्व रिकॉर्ड है?''

असम के चिकित्सक ने कोविड रोगियों के लिए नृत्य किया

सिलचर मेडिकल कॉलेज, असम के ईएनटी सर्जन डॉ अरूप सेनापति, फिल्म वॉर के घुंघरू गाने पर अपने डांस मूव्स से सबका दिल जीत रहे हैं। पूर्ण पीपीई किट पहने, डॉक्टर अस्पताल में कोविड रोगियों को खुश करने की कोशिश कर रहे थे। उनके सहयोगी डॉ सैयद फैजान अहमद द्वारा वीडियो साझा करने के कुछ ही मिनटों के भीतर, इसे दो लाख से अधिक बार देखा गया।

पीडीजी अग्रवाल ने 100 वीं बार रक्तदान किया

पीडीजी अनिल अग्रवाल, रो ई मंडल 3054, ने 18 सितंबर को अपने जन्मदिन पर 100 वीं बार रक्तदान किया। उनके साथ राजस्थान के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल एसएमएस मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के प्राचार्य और नियंत्रक डॉ सुधीर भंडारी भी थे।

डॉ भंडारी ने रक्तदान के लिए उनकी प्रतिबद्धता को देखते हुए उन्हें सम्मानित किया। आरआईपीई शेखर मेहता ने भी ट्वीट कर उन्हें बधाई दी।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month